स्मारिका- २०११-१२

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय
ॐ शान्तिमय

प्रकाशक
श्री विश्वशान्ति आश्रम
त्रिवेणीपुरम्, झूँसी-इलाहाबाद

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

महापुरुषों के विविध दिव्य-ज्ञान और भगवद्भक्त जनों के अनुभवों से सँजोयी यह पत्रिका निरन्तर चार वर्षों से 'श्री विश्वशान्ति आश्रम' द्वारा प्रकाशित की जा रही है, जिसका पठन-पाठन कर भगवद्-प्रेमी जन अपने अन्त:करण की प्रवृत्तियों को शुद्ध और सम्यक् आचरण के अनुरूप बना रहे हैं। इसमें प्रकाशित अनेकानेक अनुभव और ज्ञान मानव के लिए बहुपयोगी हैं, जिसके प्राप्त अमृत-रस-पान से हम सब अपने-अपने बुरी आदतों और व्यवहार को परिवर्तित कर, स्वयं को किसी अच्छे कार्यों में संलग्न कर सकते हैं। पल-पल समाप्त होते इस अमूल्य मानव जीवन की महत्ता को समझने-समझाने और व्यक्ति को उसके मानव जीवन के सम्यक् उपयोग में यह पत्रिका सहज ही सहायक सिद्ध होती है।

पत्रिका मुख्यत: दो पहलुओं पर आधारित है- ज्ञान और अनुभव। महापुरुषदेव श्री आनन्दयोगी जी द्वारा दिये गये अमूल्य ज्ञान और उससे संकलित ग्रन्थों के सेट से न जाने कितने ही भक्त, श्रद्धालु और भगवन जन अपने जीवन को भगवद्सेवा में अर्पित कर, स्वयं एवं दूसरों के जीवन को सार्थक बना चुके हैं। ऐसे कर्मफल रहित कर्म करने योग्य कर्म से न जाने कितने ही अद्भुत और आश्चर्यचकित कर देने वाले चमत्कारिक अनुभव लोगों को निरन्तर होते रहते हैं, जिसे कुछ भगवन जन लिपिबद्ध कर आश्रम को प्रेषित करते रहते हैं। इन्हीं प्रेषित अनुभवों में से कुछ अनुभव प्रत्येक वर्ष की पत्रिका में प्रकाशित किये जाते हैं ताकि अन्य श्रद्धालु भक्त और सांसारिक व्यक्ति भी इसका लाभ ले सकें।

इस पत्रिका में अधिकाधिक लोगों के पत्र शामिल करने की यथेष्ट चेष्टा होती है, पर स्थान के अभाववश कुछ पत्र शामिल नहीं हो पाते हैं, जिसे आगामी अंक के लिए सुरक्षित रख दिये जाते हैं। आप सभी भगवद् प्रेमियों का इसी तरह सहयोग बना रहे, ताकि आश्रम से दूरस्थ श्रद्धालुओं को आपके अनुभवों से प्रेरणा मिलती रहे।

सद्गुरुदेव के ज्ञानरूपी अमृत वर्षा से पूरा विश्व लाभान्वित हो, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष सद्गुरुदेव श्री आनन्दयोगी जी की पूण्यतिथि २५ सितम्बर के याद्गार पल में आश्रम की वेबसाइट ज़ारी की जा रही है, जिससे कि प्रभु पिताजी के ज्ञान वर्षा से हम सब सदा भींगते अथवा सिंचित होते रहेंगे और उनके विचारों, गुणों और आदर्शों को हर समय, घड़ी एवं पल में आत्मसात् कर सकेंगे। ***संपादक- नन्द लाल सिंह 'आनन्दमय'***

संपादक : आनन्दमय- नन्द लाल सिंह

संयोजक : आनन्दमय- ओम प्रकाश सिंह

आशीर्वाद : सभी गुरुजन लोगों का

अक्षर संयोजन : शची कम्प्यूटर्स (तख़्तोताज)
381-ए, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद।
Mo. 9839873793
Visit us: www.takhtotaaz.com
E-mail: editor@takhtotaaz.com

प्रकाशक : श्री विश्वशान्ति आश्रम
जी॰ ए॰ 1/13, त्रिवेणीपुरम, झूँसी,
इलाहाबाद-211019

www.shrivishwashantiashram.com

Email : president@shrivishwashantiashram.com
publisher@shrivishwashantiashram.com
editor@shrivishwashantiashram.com

सहयोग राशि : 20 रुपये

नोट- इस पत्रिका से प्राप्त मूल्यसेवा का उपयोग पत्रिका के अगले अंक के प्रकाशन को और बेहतर बनाने व इसकी संख्या बढ़ाने में किया जायेगा। ताकि अधिक से अधिक लोग आश्रम के ज्ञान से परिचित हो सकें और ध्यान के महत्व व विधि को समझ सकें।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

महान गुरुचरणानुरागी श्रद्धेय डॉ॰ आनन्द मोहन जी के सन्दर्भ में।

पुण्यपुञ्ज बिन मिलहि न संता।
सत्संगति संसृति कर अन्ता।।
—गोस्वामी तुलसीदास।

बिना पुण्यपुञ्ज के सन्तों का मिलन नहीं होता और सत्संग से जन्म-मृत्यु का अन्त हो जाता है।

भगवन्! सन्तों का अवतरण इसी धरती पर मनुष्य समुदाय को दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से मुक्ति प्रदान करने के लिए ही होता है। आज भारत में सच्ची आध्यात्मिक विद्या का लोप होता जा रहा है। लोग गीता में दिये गये सदुपदेशों पर ध्यान न देकर बनावटी मार्गों का अनुशरण कर अपना जीवन अन्धकार की ओर लेकर चले जाते हैं। उन्हें सच्चा ज्ञान नहीं प्राप्त हो पाता है।

समय-समय पर ॐ आनन्दमय भगवान ने सौन्दर्य, ऐश्वर्य तथा भोगों में आसक्त जनों को जगाने हेतु महापुरुषों को भारतभूमि पर भेजकर उन्हें जगाते रहे हैं और उनके जीवन को पवित्र बनाकर उनके त्रिविध तापों को मिटाते रहे हैं।

आज हम उन्हीं भक्त एवं महापुरुषों की शृंखला में महान गुरुचरणानुरागी श्रद्धेय डॉ॰ आनन्दमोहन जी के विषय में श्री गुरुचरणों का आश्रय लेकर संक्षिप्त रूप से कुछ लेखनी द्वारा व्यक्त करने का अल्प प्रयास कर रहे हैं। आप बचपन से सात्त्विक, गम्भीर एवं परम् जिज्ञासु थे। घर का वातावरण भी धार्मिक था। आप श्री गीता जी का पाठ करते थे और गीता के अनुसार सतगुरु के खोज की प्रबल भावना थी और जब एमबीबीएस कर लिया फिर आपने सन् १९४८ में गुरु की खोज में हिमालय के क्षेत्रों में भ्रमण किया। अन्ततः ऋषिकेश में आपको सतगुरुश्री महापुरुषदेव का संयोग हुआ और उनके संयोग से आप पूर्ण संतुष्ट हुये। आपने गुरुदेव भगवान का पीछा नहीं छोड़ा फिर गुरुदेव भगवान के आदेशानुसार आपने उत्तर प्रदेश की राजकीय सेवा में चिकित्सक के रूप में नौकरी प्राप्त किया। आपको जो निवास प्राप्त होता था वहीं पर गुरुदेव भगवान भी साथ-साथ रहते थे और वह निवास एक आश्रम का स्वरूप धारण कर लेता था।

श्री गुरुदेव भगवान द्वारा प्रदत्त दिव्य मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' नाम का एवं उनके द्वारा रचित ग्रन्थों का प्रकाशन, प्रचार-प्रसार और सत्संग का संचालन पूर्ण श्रद्धा विश्वासपूर्वक प्रारम्भ किया। सन् १९४८ से लेकर अब तक कई लाखों में पुस्तकों का प्रकाशन हुआ और प्रचारार्थ केवल छपाई एवं कागज मूल्य लेकर भारत वर्ष के अनेक प्रान्तों तक प्रचार-प्रसार किया और व्यापक आध्यात्मिक सेवा की जिसके परिणास्वरूप असंख्यजनों ने उक्त ग्रन्थों एवं दिव्य मंत्र से अभूतपूर्ण लाभ उठाया तथा अपना जीवन कृतार्थ किया। गुरु भगवान के ग्रन्थ प्रकाशन एवं प्रचार के कार्य में प्रयाग की महाविभूति एवं महान गुरुचरणानुरागी श्रद्धेय आनन्द ब्रह्म जी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ था।

भगवन्! आपने अपने साथ ही अपनी दोनों बहनों पूज्यनीया बहन आनन्द स्वरूपा जी एवं बहन आनन्दनिधि जी को भी इस मार्ग में लगाया जिनका आदर्श जीवन हम लोगों ने देखा है कि वह भी त्याग, तपोमय जीवन की एक मिसाल थी।

पूज्य डॉ॰ साहब ने गुरु भगवान के मिलन से लेकर अपने शरीर त्याग पर्यन्त तक भगवत कार्य में अपना तन, मन, धन सहित सर्वस्व लगा दिया। उनके दर्शन में, बात में, हर क्रिया में बस यह ध्वनि निकलती रहती थी– **'जाग रे नर जाग रे'**

जब-जब उनके दिव्य गुणों का चिन्तन किया जाता

है तो बरबस नेत्रों से अश्रुपात होने लगता है। भगवान की ही भाँति भक्तों का गुणचिन्तन भी जन्म-जन्म के कल्मष को मिटाकर चिरशान्ति एवं शाश्वत आनन्द प्रदान करता है। सन्तों का संग दोनों प्रकार से होता है– उनकी सन्निधि में रहने से और उनके गुण स्मरण से।

भगवन्! श्री गुरु देव भगवान के साथ भक्ति के परमानुरागियों में प्रयाग के श्री आनन्द किरन जी वाल्यावस्था से श्री आश्रमधाम में ही रहे और पूज्य डॉ॰ साहब के साथ लक्ष्मण की तरह भगवत् कार्यों में पूर्ण योगदान करते रहे हैं। आज गुरु भगवान के सानिध्य में जीवन अर्पण करने वाली चार विभूतियों में अब बड़ी बहन आनन्द स्वरूप जी एवं पूज्य आनन्द किरन जी, श्री विश्वशान्ति आश्रमधाम त्रिवेणीपुरम, झूँसी, इलाहाबाद में भगवत कार्य सम्पन्न कर रहे हैं और अपनी गुरु प्रदत्त विभूति को मुक्त-कण्ठ से लुटा रहे हैं। आज भी आश्रम धाम में यह प्रत्यक्ष प्रतीत होता है कि श्री गुरुदेव भगवान वहाँ नित्य विराज रहे हैं और अपनी कृपा की वर्षा निरन्तर कर रहे हैं।

'महत्संगस्तु दुर्लभो, दुर्गमों अमोघश्च'

महापुरुषों का संग अति दुर्लभ, दुर्गम एवं कभी निष्फल न होने वाला होता है।

अत: ऐसे गुरुभगवान एवं उनके इस दिव्य परिवार के उपकारों से अंशत: उऋण होने का उत्तम उपाय यही है कि हम उनके उपदेश और चरित्र का प्रचार-प्रसार करें। सत्संग में, सन्तों के ग्रन्थों में और सन्तों के चरित्र में हम रंगे और दूसरों को रंगावे, भक्ति का आनन्द स्वयं चखें और दूसरों को चखावें तथा प्रभु प्रेमानन्द प्राप्त करें और दूसरों को प्राप्त करायें। सम्पूर्ण विश्व भक्ति की अजश्र धारा में स्नान कर आनन्दित हो उठे यही मन में धारणा बनाना है।

नितानन्द भज आनन्द गुमानी, जागत पूरण भाग रे

बोलो ॐ आनन्दमय भगवान की जय।

ॐ श्री महापुरुष देव भगवान की जय।

ॐ श्री सतगुरु देव भगवान की जय।

दासानुदास– दीनानाथ आनन्दमय

अ॰प्रा॰ सहायक निबन्धक, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

"सत्य अनुभव"

आश्रम में प्रेषित– एक बहन जी ने अपने अनुभव में लिखा है कि इस आसुरी संसार में जब जन्म लिया है, तो प्रतिकूलताओं का आना तो अनिवार्य ही है, और वे जीवन रूपी नौका को झकझोरा ही करतीं हैं किन्तु ॐ आनन्दमय भगवान के सन्देश तो आत्म-बल देते रहते हैं। प्रतिकूलताओं के समय का यह सन्देश कि वे सदैव अहितकारी ही नहीं होती, उनके निवारण के लिये प्रयत्न करो, तो बड़ा बल देती हैं फिर क्षण-क्षण परिवर्तनशील समय है, एक दिन यह भी समय चला जायेगा।

—शमशान का मार्ग वैराग्य उत्पन्न कर मुक्ति का मार्ग है।

—संसार का मार्ग दु:खदायक कर्मों में सुख दिखा कर जन्म-मृत्यु का मार्ग है।

—शमशान का मार्ग भगवान की याद कराने का मार्ग है।

—संसार का मार्ग भगवान को भूल जाने का मार्ग है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ध्यानयोगाचार्य श्री आनन्दयोगी जी महाराज द्वारा स्थापित 'श्री विश्वशान्ति आश्रम' दिव्य ज्ञान का भण्डार

ऋषियों की तपोभूमि इस भारत वर्ष में विभिन्न युग एवं कालवर्ष में स्वयं भगवान मानवरूप में अवतरित हुए और मनुष्य को उनके कर्त्तव्यों, कर्मों और आदर्शों का बोध कराया। पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने स्वयं एक मनुष्य रूप में आज्ञाकारी पुत्र की भाँति अपने सारे मानव कर्त्तव्यों का निर्वहन कर प्रत्येक मानव जाति के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किये। परमानन्दमय श्रीकृष्ण भगवान ने श्री अर्जून को निमित्त बनाकर पूरे मानव जाति के कल्याण के लिए 'श्रीमद्भगवद्गीता' के रूप में दिव्य ज्ञान दे गये, जिसके सहारे मानव चाहे तो अपना जीवन लोककल्याणकारी, परम्हितकारी और मोक्षदायी बना सकता है। इस महाकाव्य में लिपिबद्ध ज्ञान स्वयं भगवान श्रीविष्णु के मुखारविन्दु से निकली हुई है जिसके नित श्रद्धा, भक्ति सहित अध्ययन एवं मनन से मन में नये-नये सत्-ज्ञान, अच्छे विचार और भाव आते हैं।

मानव निर्मित धर्म चाहे जो भी हों, भगवान तो एक ही है। मोहम्मद पैगम्बर, सत्य श्री साईं बाबा, ईसा मसीह, महाबीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, गुरु नानक जी इत्यादि महापुरुष, देव अथवा भगवान स्वरूप विभिन्न काल में अवतरित हुए और मानव जीवन को सार्थक और भक्तिमय बनाने के लिए बहुपदेश दिये जिनका सार विषय समान ही है, लेकिन क्या आज तक हम इनके उपदेशों पर मंथन किये हैं और अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया है? नहीं। हम लोग तो बस इनके नाम पर हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन इत्यादि धर्म बनाकर उनको मूर्ति स्वरूप मन्दिरों में स्थापित कर दिये हैं। उनके नाम पर अधिक से अधिक मन्दिर, मस्ज़िद और गुरुद्वारा को बनवाने में ही लगे हुए है। उनके उपदेशों, गुणों और आदर्शों को दरकिनार कर दिये हैं। जब तक हम लोग इनके उपदेशों और आदर्शों को अपने जीवन में नहीं उतारेंगे तब तक हमारा यह मानव जीवन सार्थक सिद्ध नहीं होगा।

वर्तमान युग में इन्हीं श्री धर्मगुरुओं के नाम पर न जाने कितने आश्रम, मठ और संस्थाएँ बनाकर धन्य-धान्य को बँटोरने में लगे हैं, शायद इसीलिए आज कुछ संस्थाएँ इतनी अमीर हो चुकी हैं कि उनके सम्पत्ति का लोग सिर्फ़ आँकड़ा लगाते हैं, सच तो पता ही नहीं। जबकि हमारे धार्मिक ग्रन्थ वेद, पुराण और श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णीत है कि धार्मिक पथ पर अग्रसर भक्तों और धर्म प्रेमियों को धन का संग्रह नहीं करना चाहिए। जिसका मन विषय भोगों के प्रति आसक्त हो वह योगी, संयासी अथवा धर्मगुरुतुल्य हो ही नहीं सकता। ऐसे पाखण्डी मठाधीशों से मानव मोक्षदायी, कल्याणमयी हितकारक ज्ञान अर्जित नहीं कर सकता।

'श्री विश्वशान्ति आश्रम' जो त्रिवेणीपुरम, झूँसी, इलाहाबाद में स्थित है, उपर्युक्त पाखण्डी, अन्धविश्वासों और बाह्यआडम्बरों से पूर्णतः परे एक निष्काम भाव से प्रेरित और उस पर आधारित आश्रम है जिसका एक मात्र लक्ष्य मानव जीवन को सन्मार्ग पर लाकर उन्हें सच्चा ज्ञान

बतलाना और ध्यान का पाठ सिखलाकर इसकी विधि का अभ्यास कराना है ताकि ईश्वर के सापेक्ष उनकी गति बन सके, उनसे साक्षत्कार हो सके। यह एक ऐसा आश्रम है जहाँ छल, कपट, ढोंग और ईर्ष्या-द्वेष का कोई स्थान नहीं है। सभी भक्तों और श्रद्धालुओं को समान दृष्टि से देखा और उनके साथ व्यवहार किया जाता है। शायद यह विश्व में ऐसा एकमात्र आश्रम है जहाँ पर गरीब-अमीर, ऊँच-नीच और विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच कोई भेदभाव अथवा ईर्ष्या-द्वेष नहीं रखा जाता। जो भी श्रद्धा-भक्ति, निष्कपटता और निष्कामता के भाव से आता है उन्हें समान आदर, भाव और सत्कार मिलता है। **'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'** यह महामंत्र श्री विश्वशान्ति आश्रम के संस्थापक ध्यानयोगाचार्य श्री आनन्द योगी जी महाराज द्वारा सिद्धस्त लोककल्याणकारी, समस्त संकटहारी अथवा परमंहितकारी है जिसका सच्चे भाव से जप, तप और ध्यान करने से मन में अद्भुत आनन्द और शान्ति का वेग उत्पन्न होता है और सभी ज्ञानेन्द्रियाँ प्रफुल्लित हो उठती हैं। शरीर के सभी विकार स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान को आदिकाल अथवा पुरातनकाल से ही महत्व दिया जाता है। समस्त ऋषि, मुनि ध्यान के द्वारा ही भगवान के दर्शन पाने में सफल हुए हैं। इसीलिए श्री विश्वशान्ति आश्रम में ध्यानयोग पर विशेष महत्व दिया गया है। अपने अराध्यदेव में ध्यान लगाने के लिए बहुत ही सरल विधि इस आश्रम में बतायी जाती है कि कैसे समस्त इन्द्रियों को एकाग्रचित करके अपने मनोभाव को अराध्यदेव अथवा भगवान में केन्द्रित करें। ऐसे दिव्य ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए आश्रम के सेवक विश्व के हर परिक्षेत्र में निष्काम भाव से प्रयासरत हैं। विभिन्न दिव्य ज्ञान से भण्डारित ग्रन्थों का सेट श्री विश्वशान्ति आश्रम में उपलब्ध हैं, जिसे आसानी से प्राप्त कर ज्ञानार्जन किया जा सकता है। **ॐ शान्तिमय**

सेवक– नन्द लाल सिंह, इलाहाबाद

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री सत्संग सुधा

धन संसार-निर्वाहक के लिये, आवश्यक है; परन्तु उसको इतना आदर कभी मत दो कि जिसमें वह इष्टदेव या भगवान के आसन पर अधिकार कर ले। धन का गौरव उसके पर-पीड़ा-निवारणार्थ किये जाने वाले विसर्जन में है, न कि अनावश्यक संग्रह में। धन का यथा योग्य सदुपयोग करो– उसके द्वारा सुयोग्य पात्र की पूजा करो, परन्तु धन की पूजा कभी न करो।

याद रखो– धन मनुष्य की सुख-सुविधा के लिये है, उसे परेशान करने के लिए नहीं; जिस धन से मनुष्य एक दूसरे की भलाई करता है, वही धन सार्थक है। धन को मनुष्य का सेवक बनकर रहना चाहिये, स्वामी बनकर कदापि नहीं।

धन पाकर मनुष्य को सौभाग्य प्राप्त हुआ है या दुर्भाग्य, इसका पता धन के व्यवहार से लगता है। यदि धन धर्म में सहायक है तो यह मनुष्य के लिये सौभाग्य है और यदि पाप में सहायक है तो दुर्भाग्य है। याद रखो- धन हो जाना ही सौभाग्य का चिह्न नहीं है।

जो धन अन्याय मार्ग से नहीं आता, अपने हक का और अपनी मेहनत की सच्ची कमाई का आता है, वही धन धर्म में सहायक होता है। छल और चोरी से या असत्य और अन्याय के आश्रय से जो धन आता है, वह तो पापबुद्धि पैदा करके पाप ही बढ़ाता है।

धन को सेवापरायण बनाना चाहिये, भोगपरायण नहीं। और जो धन केवल संग्रह करने के लिये ही आता है, वह तो जैसे गड्ढे में इकट्ठा हुआ बिना बहता जल सड़ कर गंदगी फैलाता है, वैसे ही मनुष्य के मन को अत्यन्त गंदा कर डालता है और जैसे गड्ढे का जल सड़कर सूख जाता है, वैसे ही वह धन भी गंदगी फैलाकर अन्त में सूख जाता है। सूखे जल की जमीन में दरारें पड़ जाती हैं, वैसे ही यह सूखा धन भी हृदय को विदीर्ण कर डालता है।

धन में कभी आसक्ति मत होने दो तथा न कभी उसे अपनी चीज समझो। जिसका धन है, उसी की सेवा में उदारता तथा दक्षता के साथ निरन्तर खुले हाथों लगाते रहो।

धन उपार्जन करो, पर धन का लोभ मत करो। लोभ पाप का मूल है। जिस मनुष्य के मन में धन का लोभ उत्पन्न हो गया है, उसका प्रयत्न करने पर भी पाप से बचना बहुत कठिन है।

धन को ही इष्ट मानने वाले धनियों का, ऐसे धनियों के आस-पास रहने वाले उनके संगियों का और धन-लोभियों का संग मत करो। उसका संग बुद्धि में भ्रम पैदा करके धन का लोभ जाग्रत् कर देगा और तुम्हें गहरे पाप के कीचड़ में ढकेल देगा।

धन का अभिमान बड़ी बुरी चीज है। धनाभिमानी लोग माता-पिता, गुरु, साधु, महात्मा और भगवान का अपमान कर बैठते हैं। धन-दुर्मदान्ध से ऐसा कौन-सा पाप है, जो नहीं हो सकता। धन का नशा चढ़ा कि मनुष्य पागल होकर गहरी खाई में गिरा।

धन का सदुपयोग-दुरुपयोग कर्ता की बुद्धि पर निर्भर करता है। धन से अन्नदान, शिक्षादान, कूप-तालाब-निर्माण आदि सत्कार्य भी हो सकते हैं और शराब, व्यभिचार, खून, गोले-बारूद और परमाणु बम का निर्माण आदि दुष्कार्य भी हो सकते हैं।

जिनके पास धन हो, उन्हें सात्त्विक बुद्धि से धन का सदुपयोग करना चाहिये। धन सहज ही बुद्धि बिगाड़ता है, फिर पहले से ही बिगड़ी बुद्धि हो तब तो कहना ही क्या है। 'गिलोय और नीम चढ़ी।'

जिसके पास धन अधिक है, वह अधिक सुखी है– इस भ्रम को त्याग दो। वरं जिसके पास जितना धन अधिक है, उतनी ही उसके मन में अभाव की भावना अधिक है। जितनी ही अभाव की अनुभूति अधिक है, उतना ही दुःख अधिक है। अवश्य ही धनहीन व्यक्ति के दुःख का स्वरूप दूसरा होता है और बड़े धनी के दुःख का दूसरा; पर जहाँ जितनी ही कामना की आग बढ़ी हुई होगी, उतना ही ताप-जलन अधिक होगी। यह निश्चय है।

धन को कभी अनावश्यक महत्त्व मत दो– बटोरने में भी और दान करने में भी। धन से ही दान, सत्कर्म या सेवा होगी, यह धारणा ठीक नहीं है। सच्चे दान, सत्कर्म और सेवा में मन के भाव की महत्ता है, धन की कदापि नहीं। महिमा त्याग की है, धन की नहीं।

धन को गरीबों की सेवा में लगाओ। किसी को सताने या तंग करने में जो मनुष्य धन का उपयोग करता है, उसके लिये तो वह धन महान् अभिशाप है और उसे भयंकर नारकीय यन्त्रणा प्राप्त कराने में प्रधान कारण होता है।

दूसरे का स्वत्व– हक मारकर धन कमाने की कल्पना करना भी बड़ा पाप है। हक का कमाओ, हक का खाओ और शुद्ध हक का ही सदा सेवन करो। दूसरे के धन को भयानक विष समझो–

'धनु पराव विष तें विष भारी॥'

हिंसक आततायी प्राणियों का विनाश करना वैर-द्वेष के अन्तर्गत नहीं है। तथा सूपनखा, बाली, रावण-कुल अथवा कौरव-दल जैसे तामसी मनुष्यों को यथा-शक्ति दण्ड देना राज-धर्म है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

महापुरुषों का हितकारी सन्देश

जीवन पर्यन्त व्यक्तिगत जीवन हेतु सम्पत्ति बँटोरते रहने से विषय भोगों के प्रति आसक्ति बढ़ती जाती है और राजसी, तामसी प्रवृत्तियों का अन्त नहीं होता लेकिन व्यक्तिगत सम्पत्ति को देशगत करने के विधान से अकर्मण्यता का, प्रमाद का, राज-विधान के विरुद्ध आर्थिक आय करने का और सन्तानों की वृद्धि का अन्त होगा।

अनर्थमूलक व्यक्तिगत सम्पत्ति के त्याग से भ्रष्टाचारों का अन्त होगा और राज आज्ञानुसार श्रम का विकास होगा। श्रम के विकास से भगवत कृपा होगी, भगवत कृपा से भारत का भाग्योदय होगा अन्यथा ठगधर्मी और ठगधनी देश को विध्वंस कराएँगे। वास्तव में–

''सद्गुण-सदाचारी छात्र-छात्रायें ही देश की हितकारी सम्पत्ति हैं'' और

''गुणवान-ज्ञानवान-बालक-बालिकायें ही देश को शक्ति सम्पन्न बनायेंगे''

ये दोनों सूत्र किसी भी व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के भाग्य को उदय कर सकते हैं, इसीलिए छात्र-छात्राओं को भाग्य-विधाता भी कहा जाता है। छात्र-छात्राओं को भाग्य का विधाता माने जाने के कारण उनको इस आश्रम में विशेष तौर पर ध्यानयोग का निःशुल्क अभ्यास कराया जाता है और इसे नियमित अपने स्थान पर करने के लिए सरल विधि बतायी जाती है, क्योंकि ध्यान के द्वारा ही छात्र-छात्राओं का ध्यान एकाग्रचित रहता है और एकाग्रचित मन से शिक्षा ग्रहण करने पर निश्चय ही वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

राग-द्वेष, चिन्ता-क्रोध, ईर्ष्या-कलह, लड़ाई-झगड़ा आदि महाभयानक दिमागी रोग हैं। इन रोगों से ग्रसित व्यक्ति या छात्र-छात्रायें न समाज के लिये हितकारी हैं न देश के लिये। ध्यान के अभ्यास के बिना धनी-निर्धन सभी मनुष्य चिन्ता, क्रोध, शोक, भय और नाराज़गी की अग्नि में जलते रहते हैं और आजीवन दुःखी, अशान्त रहते हैं। मन-इन्द्रिय मनुष्य को व्याकुल रखती हैं व कलह कराती हैं। ध्यानयोग के अभ्यास से सभी इन्द्रियाँ अपने वश में होती हैं, दिमाग को सशान्त बनाती हैं और सभी कार्य दक्षता, कुशलता एवं वीरता से होते जाते हैं।

अतः वर्तमान में राज-कार्य कर्त्ताओं की सेवा में अरबों की सम्पत्ति प्रतिवर्ष प्रदान की जा रही है परन्तु सद्गुण-सदाचार की प्रतिष्ठा के बिना देश का निश्चिंत व निर्भय होना तो दूर रहा भुखमरी, महँगाई, ऋण, कलह एवं भ्रष्टाचार आदि राक्षसी दण्ड से मुक्त होना भी सम्भव नहीं हुआ। छात्र-छात्राएँ किसी भी देश के कर्णधार होते हैं जब तक वे अपने आप में सद्गुण, सदाचारी और सन्मार्ग के राही नहीं बनेंगे तब तक किसी भी देश और वहाँ की जनता का कल्याण नहीं हो सकता और न ही अपना ख़ुद का भी कल्याण वे कर सकते हैं। लेकिन यदि वे अपने जीवन में ध्यानयोग के महत्व और आश्रम द्वारा बतलाई विधि से ध्यान का अभ्यास कर नियमित ध्यान करते हैं तो, वे न केवल अपना बल्कि सबका हित, कल्याण और उपकार कर सकते हैं। लेकिन आवश्यक है कि इन सब कार्यों के पीछे मन में निष्काम-सेवा की भावना होनी चाहिए, तभी परमपिता के नज़र में एक सच्चे सेवक माने जायेंगे। ऐसा करने से यह मानव जीवन आपका सफल और सार्थक बन जायेगा। **ॐ शान्तिमय**

–श्री विश्वशान्ति आश्रम

जी0ए0 1/13, त्रिवेणीपुरम्, झूँसी, इलाहाबाद-211019

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

स्मारिका २०१०-११ श्री नन्द लाल जी के सौजन्य से मेरे हाथ में है। आवरण पृष्ठ देखते ही लगभग ५०-५२ वर्ष पूर्व अतीत में चली गयी। उस समय समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ कि कम्पनी बाग में वटवृक्ष के नीचे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवन् का आध्यात्मिक सत्संग होता है। रविवार को विशेष प्रवचन का आयोजन होता है। उत्सुकता जगनी स्वाभाविक थी। ईश्वर ने बालक भी बना दिया। मेरे मुहल्ले 'नया बैरहना' में इस सम्प्रदाय के दो भक्त परिवार थे। एक श्री रामाधार उपाध्याय, दूसरा एक भाटिया परिवार जिसमें सुश्री हेमलता भाटिया एवं उनके माता-पिता सभी इस सम्प्रदाय के विशेष अनुयायी थे।

श्री रामाधार उपाध्याय के परिवार से हमारा सम्बन्ध घर की निकटता के कारण पूर्वांचली होने के कारण और कहीं दूर से सम्बन्धी होने के कारण भी था। हम उन्हें चाचा एवं उनकी पत्नी को चाची कहते थे। अत: दोनों परिवारों में घरेलु एवं अन्य चर्चायें भी हुआ करती थीं। इन्हीं चर्चाओं में 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' की चर्चा भी हुई। मेरा परिवार बहुत ही सरल और आध्यात्मिक विचारों से ओत-प्रोत धर्मप्राण परिवार था। मेरी बड़ी बहन श्रीमती राधिका पाण्डेय विशेषत: अध्यात्म गंगा में स्नात मनोवृत्ति की है। अत: वे चाची जी के साथ प्रवचन सुनने ॐ आनन्दमय भगवान के सत्संग में गयीं। वहाँ से आकर उन्होंने वहाँ के वातावरण एवं सत्संग का विस्तार से वर्णन किया। फिर तो पूरा परिवार ही वहाँ प्रत्येक रविवार को जाने लगा।

वहाँ जाकर ही वहाँ के अनुशासन, नियम एवं सत्संग के वातावरण में ढलना होता है। लगता है पूरा वातावरण बदल गया। भौतिकता से कुछ अलग अनुभव होता है। उस समय मैं दस-ग्यारह वर्ष की रही होऊँगी। आनन्द, प्रेम, अहिंसा, सत्य, सदाचार की चर्चा होती। इन सब कुछ को मैं क्या समझती? लेकिन नियमित रूप से जाने के कारण सुनने का और मौन रहने का अभ्यास हो गया। श्वेत वस्त्र की शुचिता वाणी की गम्भीर सहजता और शान्त भाव से सहज सक्रियता मन को भाने लगी, वहाँ नेत्रों से अनुशासित रहने की प्रक्रिया समझ आने लगी। आश्रम के छोटे-छोटे साहित्य-पत्र भी मिलते थे, जिसमें क्रोध, आनन्द, अशान्ति आदि की परिभाषाएँ होती। उन्हें पढ़कर अनायास मन उधर आकर्षित होता। कभी-कभी हम अपने मन में ही सोचते। कभी उस सन्दर्भ में अपने पिता श्री से कुछ पूछते जिसका समाधान वह गीता और मानस से उदाहरण देकर करते। इससे चिन्तन की वृत्ति भी पनपी।

कुछ समय बाद पढ़ने-लिखने के क्रम में सम्पर्क सूत्र टूट गया। लेकिन आज जब पत्रिका मिली तो फिर से अनेक पुरानी स्मृतियाँ मन में चहलकदमी करने लगी। और पत्रिका ने तो मानसिक भोजन भी दिया।

यह पत्रिका गीताश्रित अध्यात्मिक ज्योति की प्रकाशित है, इसे पढ़कर मुझे हार्दिक आनन्द का अनुभव हुआ। मेरा आभार स्वीकारें। ॐ शान्तिमय

–डॉ० श्रीमती शारदा पाण्डेय (पूर्व प्रधानाचार्य)
१४२, बाघम्बरी गृहयोजना, भरद्वाजपुरम, प्रयाग।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री विश्वशान्ति आश्रम, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित ***''श्री मानव भाग्य विधाता''*** *नामक ग्रन्थ योगशक्ति सम्पन्न है। इस ग्रन्थ के ज्ञान को धारण करने से छात्र-छात्राएँ सद्गुण-सदाचार से युक्त तथा काम, क्रोध, लड़ाई-झगड़ों की प्रवृत्ति आदि दुर्गुण-दुराचारों से मुक्त होते हैं। सद्गुण-सदाचारों की वृद्धि के साथ मन की एकाग्रता बढ़ती जाती है जिससे सब प्रकार की उन्नति होती है। यह सब इस ग्रन्थ की योगशक्ति का प्रभाव है।*

मैने इस ग्रन्थ को विद्यार्थी समाज के लिये ही नहीं अपितु प्रत्येक मानव के लिये परमोपयोगी समझा है और मेरी शुभ इच्छा है कि सभी विद्यार्थी इस जीवन भर मार्ग-दर्शन करने वाले ग्रन्थ को अपनावें।

–प्रधानाचार्य- डॉ० हरिराम इण्टर कॉलेज, हरिद्वार।

श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग की कानपुर शाखा द्वारा सोसाइटी धर्मशाला कानपुर में दिनांक ३० अक्टूबर से २ नवम्बर २०१० तक चले ४ दिवसीय ज्ञान योग शिविर में उपस्थित अध्यापक-अध्यापिकाएँ और छात्र-छात्राओं को कुछ ज्ञान की अनुभूति हुई जिनमें से कुछ छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रतिक्रिया भेजी है जो निम्नलिखित है–

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–डॉ० आरती द्विवेदी
(सामाजिक विज्ञान की अध्यापिका)

ज्ञानयोग शिविर में सहभागिता अदा करने का संयोग व सुअवसर विद्यालय की तरफ से प्राप्त हुआ तो शिविर में बिताये गये वे अनमोल पल पाकर जीवन धन्य हो उठा। शिविर का स्वर्गिक वातावरण ने साधु सन्तों का समागम ने जीवन को सहज व स्वाभाविक ढंग से कैसे जिया जाये? इसकी अनुभूति करा दी। मंत्रोच्चारण के माध्यम से मन व मस्तिष्क को अपूर्व शान्ति मिली, मैंने अपने आपको उन पलों में उस परम ब्रह्म के अत्यधिक निकट पाया। शरीर में ऊर्जा का अद्भुत संचरण हुआ, आत्मिक शक्ति को विकसित करने का मौका मिला। जीवन में कुछ अनुभूतियाँ ऐसी होती हैं जिन्हें शब्दों में बयान करना मुश्किल होता है।

नकारात्मक धीरे-धीरे शरीर से बाहर होती प्रतीत हुई और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिली।

श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग की कानपुर शाखा का यह प्रयास श्लाघनीय था। आज का मानव समाज-भौतिक सुखों की लालसा में जकड़ा है अत: इस स्थिति में आध्यात्मिक उन्नति व ज्ञानार्जन हेतु उपर्युक्त प्रयास स्तुत्य है।

मन की एकाग्रता व संलग्नता व लक्ष्य के प्रति वचनवद्धता व दृढ़ता में इजाफा हुआ। प्रकृति के कण-कण में विद्यमान ईश्वर को जिसे हर जगह तलाश करते रहे, उसे अपने ही अन्दर विद्यमान पाया।

उस अलौकिक शिविर में मानसिक अनुशासन देखने को मिला। आनन्दमय प्रभु पिता के मुख से मधुर प्रवचन सुनकर परमानन्द की अनुभूति हुई। एक ऐसी अनुभूति जिसे कभी न भूलना चाहूँगी।

वह ईश्वर जिसने हमें जीवन दिया- अपने इस जीवन के शेष रहते हुए ही उस ईश्वर का गुण-गान करने शुक्रिया अदा करना-इस उद्देश्य को पुरा करने हेतु ज्ञान-योग-शिविर में सहभागिता से मदद मिली। **ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

पूजा मिश्रा
(हिन्दी विषय की प्रध्यापिका)

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' ये शब्द हमारे अन्दर सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करते हैं। भाग्यात् मुझे भी 'ब्राइट एन्जल्स इण्टर कॉलेज' की ओर से इस दिव्य व अलौकिक शिविर में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ जैसे ही मैं 'सोसाइटी धर्मशाला' जहाँ कि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय शिविर का आयोजन हुआ था प्रविष्ट हुई मुझे चारो ओर अवर्णनीय शान्ति का अनुभव हुआ। वहाँ पर दिये गये दिव्य प्रवचनों व ध्यानयोग ने मुझे व हमारे विद्यालय परिवार को अत्यधिक प्रभावित किया। हमारा विद्यालय परिवार पुन: ऐसे ही कार्यक्रम का हिस्सा बनकर ज्ञानामृत की कुछ बूँदें पान करने का पुन: इच्छुक है। मुझे जो आत्मशान्ति तथा भौतिक सुखों से परे जो प्रसन्नता प्राप्त हुई शायद उसका वर्णन मैं शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं कर सकती मेरे हृदय की गति किसी मूक द्वारा खाये गये मधुर फल के समान है, जिसका स्वाद तो ग्रहण कर लिया परन्तु वर्णन करना असम्भव है। **ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–साक्षी दीक्षित, कक्षा- ९

इस ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे बहुत सुख, शान्ति का अनुभव हुआ। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि विश्व में इससे ज्यादा शान्ति, सुख प्रदान करने वाला तथा ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखने वाला स्थान कहीं और नहीं है। वहाँ जाकर मुझे ईश्वर की आराधना करने का बहुत ही सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ पहुँचने के पश्चात् कोई भी मनुष्य अपने सारे कष्टों को भूल कर ईश्वर की आराधना में इतना लीन हो जाता है कि उसे सांसारिक चीज़ों के प्रति कोई आस्था नहीं रह जाती है। वह सिर्फ और सिर्फ ईश्वर की भक्ति में लीन होना चाहते हैं। वहाँ पहुँचकर हमें यह प्रेरणा मिलती है कि कोई अगर ईश्वर के दर्शन प्राप्त करने का इच्छुक हो तो वह स्थान उसके लिए सर्वोच्च है। ऐसा लग रहा था कि हमे ईश्वर के साक्षात् दर्शन प्राप्त हो गये हैं। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करने से हृदय में किसी ऐसे ज्ञान का प्रकाश होता है जो हमें ईश्वर की भक्ति की लीन हो जाने का एहसास कराता है अर्थात् ईश्वर के प्रति और आस्था को उजागर करता है। वहाँ के गुरु ने हमें ध्यानावस्था करने का भी अवसर दिया जिससे हमें ऐसा लगने लगता कि कहीं न जायें। सिर्फ इस स्थान में बैठकर ईश्वर की आराधना में लीन रहे। जब मुझे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के समक्ष जाकर उनकी आरती करने का अवसर प्राप्त हुआ तो ऐसा लगा कि उनके चरणों में अपने सिर का नमन करके और उनके चरणों में बैठकर ईश्वर को प्राप्त करने का अवसर लूँ। अर्थात् ईश्वर को प्राप्त करने के और मार्ग पूछूँ। वहाँ मुझे ईश्वर को प्राप्त करने वाले गुरु तथा और आगे बढ़ो और अपने लक्ष्य को भी प्राप्त करो किन्तु ईश्वर को कभी न भूलो तथा ईश्वर का सदैव स्मरण करो। ऐसी शिक्षा देने वाले गुरु मिले। इसीलिये मैं उन्हें सच्चा गुरु मानती हूँ।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–अनम रईस, कक्षा- ९

सबसे पहले मैं अपना अनुभव बताने से पहले यह बता दूँ कि मैं एक मुस्लिम छात्रा हूँ। जब मैं शिविर में जाने के लिये निकली तब वहाँ मुझे उस योग शिविर के एक व्यक्ति मिले, जिस योग शिविर में मैं जा रही थी उस शिविर में यह एक महान पदाधिकारी थे। उस योग शिविर में जाने के लिये मैं उत्सुक थी। क्योंकि जब एक दिन पहले उस शिविर में मेरे दोस्त गये थे और मैं न जा सकी थी। वैसे तो मैं एक मुस्लिम हूँ परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि धर्म के लिये मानव जाति में भेदभाव, विवाद आदि होना मानव के लिये हितकारी नहीं है। ईश्वर एक है। जैसा मैं मानती हूँ सभी मनुष्य समान है। धर्म तो कई प्रकार के होते हैं कोई भगवान को पूजता है तो कोई अल्लाह को। लेकिन इससे अपनों से ईर्ष्या करना, द्वेष रखना ठीक नहीं है। वह व्यक्ति जो मुझे मिले थे उन्होंने मुझे एक किताब दी जिसका नाम है 'सच्ची प्रेम भक्ति' उसमें कुछ ऐसी बाते थी जिसे मुझे उस योग शिविर में एक विशेष स्थान पर बैठकर बोलना था। जहाँ मैं गयी थी उन्होंने मुझे इतना सम्मान दिया कि मैं इतनी प्रसन्न थी कि मुझे उस विशेष स्थान पर बैठाया गया। मैं इस बात को शब्दों में नहीं कह पा रही हूँ। अब मैं जब यह सब सम्पन्न हुआ तो मैं अपने स्थान पर आकर बैठ गयी। मुझे शान्ति का माहौल पसन्द है, और वहाँ तो इतनी शान्ति थी कि मुझे उनकी ज्ञान से पूर्ण बाते सुनकर भगवान की भक्ति में आत्मलीन हो गयी। जिस तरह से वे हम सबको अपने ज्ञान में डूबो देना चाहते थे और मैं तो ऐसा उनके ज्ञान में डूब चुकी थी कि मुझे बैठे-बैठे ही खुशी हो रही थी। वहाँ एक एहम बात हुयी जब उन्होंने भगवान का ध्यान कराया तो मन में कुछ अजीब-सा प्रतीत हुआ। जब मैं ईश्वर का स्मरण कर रही थी तो ऐसा लगा कि सच में ईश्वर ने मुझे दर्शन दिये हों। मैं तो अपने आप पर भी

विश्वास नहीं कर पा रही थी। मैं उन लोगों की बहुत-बहुत आभारी हूँ कि मुझे उन लोगों ने इस काबिल समझकर उस विशेष आसन पर बैठाया और मुझे उस योग शिविर में आने का अवसर प्रदान किया। इस मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' को हमेशा पढ़ती हूँ और पढ़ती रहूँगी। मैं सभी धर्मों को मानती थी मानती हूँ और मानती रहूँगी।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

यशस्वनी पाण्डेय, कक्षा-

श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग, की कानपुर शाखा में आयोजित ज्ञान योग शिविर में मुझे जाने का अवसर प्राप्त हुआ। इसलिए मैं स्वयं को भाग्यशाली मानती हूँ और इसके लिए मैं अपने विद्यालय की बहुत ही आभारी हूँ क्योंकि मैं उन्हीं के माध्यम से शिविर में पहुँच पायी। इस आश्रम में, मैं जब पहुँची तो वहाँ का वातावरण अत्यन्त सुखदायी था। वहाँ पर बच्चे, बड़े तथा वृद्ध लोग ईश्वर में मग्न होकर 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का उच्चारण कर रहे थे। उस शिविर में चारो ओर शान्ति प्रसारित हो रही थी। वहाँ पर दैनिक जीवन में प्रयोग हेतु आचार-विचारों ने मुझे अत्यन्त आकृष्ट किया। मैं एक विद्यार्थी हूँ और विद्यार्थी जीवन में हमें चारो ओर से अच्छी बातें सिखाई जाती हैं कि हम अपने बड़ों का आदर और छोटों को प्यार करें तथा सभी से अच्छा व्यवहार करें और इस आश्रम में मुझे इसी से सम्बन्धित अच्छी बातें बतायी गई। वहाँ पर कुछ लोगों ने हमें यह भी बताया कि जीवन में उद्देश्य अवश्य होना चाहिए, उद्देश्य के बिना जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है। अत: इन्हीं सब बातों ने मुझे बहुत ही आकृष्ट किया। उस आश्रम के कुछ लोगों ने यह बताया कि ''कर्म सभी लोग करते हैं– उनका नाम अर्थात् ईश्वर का नाम गुणगान करना यह भी कर्म है- श्वास लेना यह भी कर्म है। कर्म त्याग करना असम्भव है। इसलिए कर्म तो करना ही है परन्तु फल ईश्वर को समर्पित करना है।'

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

रिशु मिश्रा, कक्षा- ११

श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग, की कानपुर शाखा के द्वारा सोसाइटी धर्मशाला कानपुर में मुझे जाने का पहला अवसर मिला। इस आश्रम में पहुँचते ही चारो ओर बहुत ही सुगन्धित, स्वच्छ और शान्तिमय वातावरण की अनुभूति हुई। इस आश्रम में बड़े, बुजुर्ग तथा बच्चे सभी लोग ईश्वर में मग्न होकर 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप करते हैं। इस आश्रम से ज्ञान मिला कि तुम लोग संसार में हो तो क्या, उसमें दोष नहीं, फिर भी ईश्वर में मन रखना और यह जानना कि यह सारा घर परिवार मेरा नहीं, यह सब ईश्वर का है। मेरा घर ईश्वर के पास है और उन लोगों ने बताया कि– 'ईश्वर लाभ ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है।' वहाँ उस आश्रम के लोगों से हमें बहुत सारी प्रेरणाएँ मिली। जैसे– 'चन्दा मामा सारे बच्चों के मामा हैं, वैसे ही ईश्वर भी सभी के अपने हैं। उन्हें पुकारने का अधिकार सबको ही है, जो भी उन्हें पुकारेगा उसे ही वे दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे।''

इस आश्रम में मुझे बहुत सारी नई-नई बातें सिखने को मिली, जो हमारे जीवन के लिए बहुत आवश्यक हैं। उन्होंने ईश्वर के बारे में बताया कि 'ईश्वर ऐश्वर्य के वश में नहीं है, अपितु भक्ति के वश में है।' व इन्होंने ईश्वर और भक्त के बारे में बताया कि 'कभी भगवान चुम्बक हैं, भक्त सुई और कभी भक्त चुम्बक है, भगवान सुई। भक्त का ऐसा आकर्षण है कि उसके प्रेम में मुग्ध होकर भगवान उसके पास खींचे चले जाते हैं।' उस आश्रम के कुछ लोग हर बात व श्लोक के बाद हमेशा 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप करते थे। यह मंत्र बहुत ही भावों से भरा मंत्र है। इसको अपने जीवन में धारण करके हम सुख की प्राप्ति कर सकते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

दीपा कुमारी, कक्षा- ९

ज्ञानयोग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे आनन्द और शान्ति की अनुभूति हुई। योग शिविर का वातावरण में ऐसा एहसास हो रहा था कि मानो ईश्वर के प्रति अपने आप श्रद्धा एवं समर्पण की भावना विकसित हुई, ऐसा अनुभव हो रहा था। मैं अपने आप को दिव्यता में इतना लीन हो गयी थी कि अन्य सांसारिक वस्तुओं से लालच और मोह समाप्त हो गया। शिविर में ऐसी अनुभूति हुयी वास्तव में उसका वर्णन मेरे ज्ञान से परे है। मैं इतना आनन्द में डूब गयी कि उस समय चारो तरफ शान्तिमय वातावरण का आभास होने लगा। वास्तव में इस प्रकार का ज्ञानयोग शिविर का संचालन वर्ष में कम से कम ४-५ बार सामूहिक तथा विद्यालय में प्रतिदिन कुछ समय ज्ञान योग शिविर का संचालन किया जा सकता है, जिससे समस्त विद्यार्थियों को लाभ होगा।

जब मैंने 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' जाप किया तो मेरे मन में एकाग्रता का अनुभव होने लगा। इस मंत्र को जपने से हमारे मूल्यवान समय में कोई बाधा नहीं आती है। अत: इस मंत्र में एक ऐसी दिव्य शक्ति है जो एक विद्यार्थी को आत्मशक्ति प्रदान करती है क्योंकि आत्मशक्ति के कारण ही विद्यार्थी के जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति होती है जो कि विद्यार्थियों के लिये सबसे महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो हमे 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' शिविर में प्राप्त हुई है। 'मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो:' अर्थात् मनुष्य का मन ही उसके बन्धन और मोक्ष का कारण है। आशय यह है कि यदि मानव अपने मन को सांसारिक विषय-भोगों में आसक्त रखे तो वह बन्धन में पड़ा रहेगा और आवागमन के चक्र में घूमता रहेगा, किन्तु यदि वह संसार से मुँह फेरकर ईश्वर की ओर उन्मुख हो जाए तो दुर्लभ मोक्ष प्राप्त कर लेगा, अब मैं उस शिविर में पहुँची तो मैंने यह अनुभव किया कि जब तक मन एकाग्र न हो, मनुष्य कोई भी विद्या ग्रहण नहीं कर सकता। मैं इस शिविर में बतलाई गयी बातों का पूर्णत: पालन करूँगी।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

गोविन्द शर्मा, कक्षा- १०

श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग, की कानपुर शाखा द्वारा सोसाइटी धर्मशाला कानपुर में कार्यरत चार दिवसीय ज्ञान योग शिविर के प्रात: कालीन सत्र में चल रहे शिविरों में एक दिन मुझे जाने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हो चुका है। जब मुझे उस शिविर में जाने का अवसर प्राप्त हुआ तो मेरे हृदय में एक अद्भुत चेतना की अनुभूति हुई जिसका वर्णन करना लगभग असम्भव है। जब मैं उस ध्यान योग शिविर में पहुँचा तो मेरे मन में उत्पन्न होने वाले नकारात्मक विचार सहसा नष्ट हो गये और अपने आप ही साकारात्मक विचारों का निर्माण होने लगा। मेरे पूरे शरीर में मानों कभी न खत्म होने वाली एक अद्भुत स्फूर्ति जागृत हो गयी। ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे स्वर्ग सा आनन्द आया। इस वातावरण का आनन्द मेरे मित्रों ने भी लिया। वहाँ का वातावरण मन को शान्ति प्रदान करने वाला, प्रसन्नचित करने वाला था। उस भव्य शिविर में व्यक्तियों का आपस में मेल-जोल, दूसरों के प्रति उनका विनम्र व्यवहार अत्यन्त प्रशंसनीय था। उस शिविर में शान्तिपूर्ण वातावरण में ईश्वर की स्तुति करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। गुरु के साथ भी दिव्य शब्दों अर्थात् 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का उच्चारण किया। इन शब्दों के उच्चारण से हमारे भौतिक शरीर को फायदा तो हुआ ही और मानसिक शरीर को भी लाभ हुआ। आनन्दमय प्रभु पिता के मुख से मधुर प्रवचनों को सुनकर मन तृप्त हो गया था। हम सबकी प्रभु जी के साथ हम सबकी चर्चा भी अत्यन्त स्मरणीय थी। मैं ऐसी अद्भुत अनुभूति कभी न भूलना चाहूँगा। अन्त में मेरा आनन्दमय प्रभुपिता को प्रणाम।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अभिषेक शर्मा, कक्षा- ११

उस दिन जब मैं आश्रम पहुँचा तो मुझे एक अलौकिक शक्ति का अनुभव हुआ। मैंने वहाँ पर एक सकारात्मक शक्ति का अनुभव किया। जब मैंने वहाँ पर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप कर रहा था, तब मैंने अपनी सोंच में सकारात्मक का अनुभव प्राप्त किया। उस मंत्र से मेरे अन्दर की सभी नकारात्मक सोंच का अन्त हो गया तथा सकारात्मक सोंच का उदय हुआ। मैं आज इस मंत्र का रोज़ सुबह प्रयोग करता हूँ। मैंने वहाँ पर आध्यात्मिकता का ज्ञान प्राप्त किया। वहाँ उस शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे बहुत अच्छी अनुभूति हुई। वहाँ पर प्रवचन देने वाले बाबा के मंत्र उच्चारण से वहाँ सभी लोग भाव विभोर हो उठे तथा उस भक्ति में लीन हो गये। मैं भी उस भक्ति में लीन हो गया। उस आश्रम में जाने वाले लोग सदैव सकारात्मक सोंचते होंगे। उस अलौकिक भक्ति के देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मैं भी इस आश्रम की तरक्की के लिए दान-पुण्य करना चाहता हूँ। मैं सभी को यह मंत्र बोलने के लिए कहता हूँ तथा सदैव इसकी शक्ति को लोगों को बताता हूँ। इस मंत्र ने मेरे अन्दर काफी परिवर्तन किया है। इस मंत्र से मैं अपने मन को एकाग्र करना सीख गया हूँ तथा अपने भावों को सही प्रकार से प्रकट करना सीख गया हूँ। मैं उन प्रवचनों को सही प्रकार से दोहराता हूँ और उससे शक्ति प्राप्त करता हूँ। मैं तो वहाँ की अलौकिकता को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसी भक्ति में लीन हो गया हूँ। उस मंत्र का अर्थ है, हमें सदैव प्रसन्नतापूर्वक रहना है और शान्ति के साथ जीवन निर्वाह करना है हमें कभी अशान्ति का परिचय नहीं देना चाहिए। उस मंत्र का भाव बहुत ही प्रेरणादायक है जिससे कि हमें प्रेरणा मिलती है प्रसन्न रहने की, शान्त रहने की, एकाग्र रहने की और सकारात्मक सोच बनाये रखने की। यह बोल बहुत छोटे हैं पर इस मंत्र का अर्थ बहुत ही बड़ा है जिसका वर्णन आसान कार्य नहीं है। मैं अपनी इच्छा प्रकट करता हूँ कि मैं वहाँ जाकर नित्य उनकी साधना करना चाहता हूँ और शान्तिपूर्वक जीना चाहता हूँ, अगर हम शान्त रहेंगे तो हम एकाग्र हो सकेंगे। यह आश्रम बहुत ही दिव्य आश्रम है जिस आश्रम में योग्य आध्यात्मिक गुरु, ज्ञानी लोग है जो हमें जीवन की सच्चाई बता सके हैं। हमें इनसे शिक्षा लेनी चाहिए। क्योंकि हम इससे अपना जीवन सँवार सकते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अम्बुज अग्निहोत्री, कक्षा- ११

जब मैं अपने विद्यालय द्वारा श्री विश्वशान्ति आश्रम, प्रयाग की कानपुर शाखा में पहुँचा तो मुझे एक अलग प्रकार के आनन्द की अनुभूति हुई। मेरे मन में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। मैंने अपने शरीर में असीम शक्ति का निर्माण होते हुये पाया। मैंने शिविर में ध्यान लगाकर शिविर में दिये गये योग सिद्ध मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का बार-बार उच्चारण करना आरम्भ किया तो मेरे तन-मन में असीम भक्ति भावना उत्पन्न हुई। इस क्रिया को ३० मिनट तक करने पर मेरे मन-मस्तिष्क में जो शान्ति उत्पन्न हुई उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता हूँ तथा मेरे मन में सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति निरन्तर होती रही। वास्तव में ॐ आनन्दमय अर्थात् (आनन्द ही आनन्द) ॐ शान्तिमय अर्थात् (शान्ति ही शान्ति) यह योग-सिद्ध महामंत्र सम्पूर्ण सुखों की कुञ्जी है। अब मैं जब प्रात: काल उठता हूँ तो सम्पूर्ण दिनचर्या को आनन्द तथा शान्ति प्रदान कराने के लिये ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का पाठ अवश्य करता हूँ।

अत: मैं अन्त में यही कहना चाहूँगा कि यह योगसिद्ध महामंत्र बहुत ही लाभकारी है। मेरे अनुमान से केवल यह मेरे लिये ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जीवन के लिये लाभकारी योगसिद्ध मंत्र है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

शाहिस्ता जीनत, कक्षा- १०

ज्ञानयोग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे एक अलौकिक प्रकार की अनुभूति हुई। यह मेरे जीवन में प्रथम अवसर था कि मैं इस प्रकार के ज्ञानयोग शिविर में एकत्र होकर अपने जीवन की समस्त चिन्ताओं और कष्टों को ईश्वर के ध्यान में कुछ क्षण के लिए भूल गई थी। आज मनुष्य भौतिक संसार के सुख-सुविधा को पाने में लगा हुआ है, उनके लिए भगवान एक नाम मात्र ही रह गये हैं। जिससे उसकी चेतना विकसित नहीं हो पा रही है। बहुआयामी चेतना-जगत को विकसित करने के लिए योग-साधना, उपासना, तपश्चर्या, पुरश्चरण आदि के विविध उपाय माने जाते हैं गुण, कर्म, स्वभाव एवं चिंतन चरित्र, व्यवहार को परिष्कृत करना पड़ता है। तब कहीं जाकर अंत:स्थित प्रसुप्त पड़ी शक्तियाँ जाग्रत होती हैं और मनुष्य देवत्व की ओर अग्रसर होता है।

'श्री विश्वशान्ति आश्रम' में आयोजित 'ध्यान योग शिविर' में सम्मिलित होकर मैंने यह अनुभव किया है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय निकालकर ईश्वर के ध्यान में लगाना चाहिए क्योंकि ईश्वर के ध्यान से हमारे मन को शान्ति मिलती है और हम एकाग्रचित होकर अपने कार्यों का निर्वाह भलीभाँति कर सकते हैं। मुझे वहाँ सर्वधर्म समभाव का वातावरण अत्यन्त अच्छा लगा। बिना योग-साधना के मनुष्य में अतींद्रिय क्षमताओं का उभार नहीं होता है।

अत: मनुष्य को यह नहीं भूलना चाहिए कि यह भौतिक संसार नित्य है, हम सभी को ईश्वर भक्ति व भजन से कभी जी नहीं चुराना चाहिए। अगर हम ईश्वर को सच्चे मन से याद करेंगे तो ईश्वर हमें अवश्य सफलता देंगे।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

निमिषा सिंह, कक्षा- ९

वहाँ का दिव्य एवं आध्यात्मिक वातावरण मुझे अत्यन्त अच्छा लगा। सबसे अच्छी मुझे वहाँ की शान्ति लगी। अधिकतर लोग सफेद वस्त्रों में आये थे, जो कि शान्ति का प्रतीक है। जब वहाँ नेत्र बन्द करवा करके ध्यान करवाया गया और मंत्रोच्चारण भी करवाया गया, तब मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरे मस्तिष्क में कोई दिव्य शक्ति प्रवेश कर गयी हो। उसी दिन से मेरी दैनिक क्रियाओं में कई अच्छे बदलाव आये। मुझे वहाँ का दिव्य वातावरण अत्यन्त अच्छा लगा और मुझे आनन्दमय प्रभु पिता की आरती भी अत्यन्त आनन्दमयी लगी, उसका स्वर आज भी मेरे कानों में गूँज रहा है। सबसे अच्छा मंत्र मुझे 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' लगा, इसको उच्चारित करने से मन की समस्त दुविधाएँ दूर हो जाती हैं और मैं इस मंत्र का जाप नित्य करती हूँ तथा मैं इस मंत्र से अत्यन्त प्रभावित हुई।

यह मंत्र मुझे अत्यन्त सुख, आनन्द और शान्ति प्रदान करता है। मैं आज भी वहाँ के दिव्य वातावरण को नेत्र बन्द करके महसूस करने की कोशिश करती हूँ। मुझे शान्ति अत्यन्त प्रिय है। मैं आपसे विनम्र निवेदन करती हूँ कि कभी-कभी इस प्रकार के ध्यान योग शिविर अवश्य लगवाएँ। ऐसा करने से इस नव युग के छात्र-छात्राओं में उत्पन्न हो रहे अवगुण अवश्य समाप्त हो जायेंगे।

तब हम और आप एक बहुत अच्छे समाज की कल्पना कर पायेंगे और केवल कल्पना ही नहीं, मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक अच्छे समाज का निर्माण भी अवश्य होगा। अन्त में मैं यही कहूँगी– ॐ शान्तिमय'

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

रोहित यादव, कक्षा- ११

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का प्रभाव

१- इस मंत्र को सुबह, प्रात: कालीन में बोलने पर मन को शान्ति तथा मस्तिष्क में अच्छे-अच्छे विचार आते हैं और हृदय में नये-नये भाव उत्पन्न होते हैं।

२- इस मंत्र का जाप करने से मन में एकाग्रता रहती है तथा मानसिक तनाव दूर हो जाते हैं और बुद्धि का विकास होता है और हमारा मन किसी भी कार्य को करने के लिए अच्छी तरह लगता है।

३- मैंने इस मंत्र को एक काग़ज में लिखकर अपने घर की दीवार पर लगा दिया है। इसके कारण मेरे परिवार के सदस्य भी इस मंत्र को सुबह-शाम दोहराते हैं इसके कारण घर में सभी के चेहरे पर खुशी व ताज़गी बनी रहती है।

४- पहले मेरा मस्तिष्क में नकारात्मक विचार आया करते थे लेकिन जब मेरे स्कूल ने आपके आश्रम में जाने की आज्ञा दी तब वहाँ मुझे इस मंत्र का ज्ञान हुआ। उसके एक सप्ताह के बाद ही मेरे मस्तिष्क में अच्छे-अच्छे विचार आने लगे। इसके कारण मेरा मन अब पढ़ाई में ज़्यादा तथा खेलकूद में कम लगता है।

५- मेरे घर के सामने वाले घर में हर समय भाई-बहन तथा माता-पिता में हमेशा मनमुटाव रहता था, कोई भी एक दूसरे को पसन्द नहीं करता था। हमेशा घर में कलह मची रहती थी। मुझसे यह सब नहीं देखा जाता था तब मैंने एक दिन एक काग़ज में यह मंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय लिखकर उनके दरवाजे पर लगा दिया। लगाने के एक महीने बाद ही उस घर की कलह और एक दूसरे के प्रति मनमुटाव धीरे-धीरे दूर होने लगा। ऐसा होते ही मैं समझ गयी कि यह मंत्र जरूर हम व्यक्तियों के लिए जीवनदायिनी है।

६- मैं पहले काफ़ी आलस्यपन महसूस करता था, लेकिन जब आप लोगों ने मुझे अपने आश्रम बुलवाया, जब मैं वहाँ मित्रों के साथ पहुँचा तो मैंने काफी इस मंत्र का उपहास उड़ाया। लेकिन अपना स्वास्थ्य व अपनी पढ़ाई में सुधार देकर काफी हैरान व परेशान हुआ तब मुझे समझ में आया कि यह मंत्र हमारे लिए कितना लाभदायक है। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अजीत यादव, कक्षा- ११

'श्री विश्वशान्ति आश्रम' जैसा दिव्य वातावरण मैंने पहले कभी नहीं देखा। मुझे वहाँ पर जाकर बहुत अच्छा लगा। मैं इससे पहले किसी भी आश्रम में नहीं गया परन्तु प्रथम बार किसी आश्रम में जाकर मेरे मन एवं हृदय को आनन्द की अनुभूति हुई। वहाँ की ज्ञानमयी बातों ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। ज्ञान-योग के बारे में मुझे इससे पहले कुछ जानकारी नहीं थी। मैं वहाँ से अत्यन्त प्रभावित हुआ। जैसा कि हम जानते हैं कि बिना योग-साधना के हमारे आन्तरिक शक्तियों का उभार नहीं हो सकता और हम विद्यार्थियों को तो इसकी अत्यन्त जरूरत है क्योंकि योग-साधना से हमारा मन एकाग्र होता है, जो कि हमारे विद्याध्ययन के लिए लाभकारी है। आजकल मनुष्य स्वयं से प्रतिस्पर्धा की दौड़ में और भौतिक सुखों को प्राप्त करने की होड़ में लगा हुआ है। ईश्वर के ध्यान हेतु तो समय ही नहीं है। जबकि ये हम सब भली-भाँति जानते हैं कि ये सभी सांसारिक वस्तुएँ नश्वर है। ईश्वर ही सत्य है। वहाँ पर जो आदर्शमयी और ज्ञानमयी बातें बतायी उन्हें मैंने अपने जीवन में उतार लिया है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

राघवेन्द्र द्विवेदी, कक्षा- ११

जब मैं विद्यालय द्वारा आपके ध्यान योग कार्यक्रम का हिस्सा बना तो मुझे अत्याधिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ। जब मैं ध्यान योग शिविर कक्ष में पहुँचा तो शिविर का वातावरण भक्ति भाव से सुगन्धित प्रतीत हो रहा था। मैंने अपने शरीर को तनाव मुक्त पाया तथा मैंने अपने शरीर में असीम शक्ति का निर्माण होते हुये पाया। मन में सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति हुयी। जिसके कारण मन शान्त, एकाग्र तथा प्रसन्न लगने लगा। मैंने शिविर में ध्यान-योग लगाकर शिविर में दिये गये योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का बार-बार उच्चारण करना आरम्भ किया तो मन में भक्ति-भावना जाग्रत हुयी। और मन में ईश्वर का एक प्रतिबिम्ब बना। मैं लगातार मंत्र का जाप किये जा रहा था। यह क्रिया २५ से ३० मिनट तक चली। मुझे उस ३० मिनटों में जिस आनन्द का आभास हुआ उसे मैं बता नहीं सकता। शिविर में आये सैकड़ों लोगों ने जब ध्यान योग के बाद जय घोष किया। तो ऐसा अनुभव हुआ। जैसे सम्पूर्ण विश्व का आनन्द उस शिविर में प्रवेश कर गया है। मैंने कभी अपने जीवन में इस प्रकार के आनन्द को नहीं महसूस किया। जितना मुझे उस योग ध्यान शिविर केन्द्र में प्राप्त हुआ। वास्तव में ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र सम्पूर्ण सुखों की कुञ्जी है। अब मैं जब प्रात:काल उठता हूँ। तो सम्पूर्ण दिनचर्या को आनन्दमय तथा शान्तिमय बनाने के लिये ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का पाठ अवश्य करता हूँ। जिससे मेरी सम्पूर्ण दिनचर्या आनन्द तथा शान्तिपूर्वक व्यतीत होती है। जब मैं अपने आपको तनावपूर्ण महसूस करता हूँ तो आँख बन्द करके ५मिनट इस महामंत्र का जाप करने लगता हूँ और उस आनन्द को खोजने लगता हूँ जो मुझे योग ध्यान शिविर केन्द्र में प्राप्त हुआ था तथा मेरी आँखों के सामने आनन्द तथा शान्ति का अपार सागर तैरने लगता है। यह योग महामंत्र केवल मेरे लिये ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिये लाभकारी सिद्ध होगा।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आशीष सिंह, कक्षा– ११

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के महामंत्र से मुझे यह अनुभूति हुई कि बड़प्पन के अभिमान की और ममता की रक्षावृद्धि कराने वाली स्वार्थी बुद्धि १२५ मानसिक अग्नियाँ प्रज्जवलित करने वाली वैरिन है। (मैं गीली मिट्टी के शरीर का मालिक नहीं हूँ।) यही महामंत्र जाली ममता-प्रेम सहित डाकू अहङ्कार को विनाश करने वाला प्रभावशाली दिव्य 'बम-गोला' है और यही योगसिद्ध महामंत्र आत्मबल वर्द्धक ध्यान अमृत का स्रोत है। जैसे-जैसे श्री प्रेम भक्ति के आदेश और प्रतिज्ञानुसार ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय प्रभु पिता के आज्ञाकारी बनने के लोभी होते जायेंगे वैसे ही ॐ श्री दयामय प्रेममय जी अधिक अवकाश और बैठने की सामर्थ्य प्रदान करेंगे। निरहङ्कारी प्रेम अमृतमय धर्म का गुरु है और अहङ्कारी प्रेम पापमय कर्मों का गुरु है। इस परम प्रभावशाली राजमंत्र को उच्चारण करने से मेरे विघ्नकारक दिमागी दोष नष्ट होते जा रहे हैं और ध्यानयोग, सेवायोग के प्रभाव से अशान्तिदायक दु:खों का नाश होकर आनन्द-शान्ति युक्त शक्ति-मुक्ति की प्राप्ति हुई है। मैं प्रात:काल उठकर श्री गुरु वन्दना की प्रार्थना प्रतिदिन करता हूँ, जिसके कारण हमें सच्ची प्रेम भक्ति का ज्ञान प्राप्त हो सके। इस महामंत्र से मेरी हर बुराई अच्छाई में बदलती जा रही है। मन में दूसरों के प्रति सही और गलत की भावना उत्पन्न होती है। इस महामंत्र से मेरे दैनिक जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। अब तो मैंने महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' को हर समय प्रत्येक कार्य करते हुए मन से मनन तथा वाणी से उच्चारण करने का अभ्यास करता हूँ। प्रात:-सायं नेत्र बन्द करके सर्वगुण सम्पन्न इष्ट भगवान् के विग्रह की मानसिक सामग्रियों द्वारा मानसिक पूजा करते हुए मन को एकाग्र करता हूँ। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

कनिष्का कुशवाहा, कक्षा- ११

जब मैं धर्मशाला गई तो सर्वप्रथम मुझे वहाँ का शान्तिपूर्वक वातावरण देखकर आनन्द की अनुभूति हुई क्योंकि आज वर्तमान समय में प्रत्येक मनुष्य स्वयं से ही प्रतिस्पर्धा करने में लगा हुआ है और उसे कहीं भी शान्ति नहीं मिलती है। मैं यह अवश्य बताना चाहूँगी कि उस दिन से पहले मैं कभी किसी शिविर में नहीं गई परन्तु उस दिन वहाँ पर विद्यार्थी जीवन के लिये महानुभावों द्वारा दिये गये उपदेशों से मुझे अच्छी शिक्षा मिली। वर्तमान समय में मैं एक विद्यार्थी जीवन व्यतीत कर रही हूँ और विद्यार्थी जीवन में पूर्णरूप से एकाग्रता की बहुत अधिक आवश्यकता है। हम अपने चंचल मन को बिना एकाग्रचित किये किसी ओर भी ध्यान नहीं लगा सकते हैं।

ज्ञानयोग शिविर में बताये गये मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का मन में जाप करने से एकाग्रता बढ़ती है। इस मंत्र के विषय में सबसे अच्छी बात यह है कि इसके जाप के लिये न ही कोई समय की बाधा है और न ही किसी स्थान की। हम जिस समय खाली बैठे हों ध्यान लगाकर इस मंत्र का जाप कर सकते हैं। यह मंत्र सत्य में अद्भुत है इसका सम्पूर्ण मन व निष्ठा से जाप करने पर मन को वास्तविक शान्ति प्रदान होती है। ज्ञान योग शिविर में मुझे सबसे अच्छा क्षण तब प्रतीत हुआ जब हमें ध्यानयोग करवाया गया। ध्यानयोग करने से सत्य ही मन को आनन्द की अनुभूति हुई। कुछ क्षणों के लिये ऐसा लगा जैसे चारो ओर के शान्तिपूर्ण वातावरण में आनन्द ही आनन्द प्रसारित हो चुका है और उस क्षण की शान्ति में ही अद्भुत आनन्द था।

'श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ' में लिखे विचारों को पढ़कर कुछ विचारों का अपने जीवन में प्रयोग किया है जिससे मुझे लाभ हुआ है। अब मैं यह कह सकती हूँ जो व्यक्ति ज्ञान योग शिविर में बतायी गई बातों का पूर्णत: पालन करेगा वह अपने जीवन में कभी असफल न होगा।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

दीक्षा पाल, कक्षा- ११

भौतिक संसार उसकी घटनाएँ जिस प्रकार एक अबूझ पहेली है, मानवीय चेतना उससे भी बढ़कर रहस्यमयी है। बहुआयामी चेतना-जगत को विकसित करने के लिए योग-साधना, उपासना, तपश्चर्या, पुरश्चरण आदि के विविध उपाय, उपचार कराये जाते हैं। गुण, कर्म, स्वभाव एवं चिंतन, चरित्र, व्यवहार को परिष्कृत करना पड़ता है। तब कहीं जाकर अन्त:स्थित में सुसुप्त पड़ी शक्तियाँ जाग्रत होती हैं और मनुष्य देवत्व की ओर अग्रसर होता है। मुझे 'श्री विश्वशान्ति आश्रम' में अत्यन्त शान्ति की अनुभूति हुई और इस वातावरण में मैंने आनन्द का अनुभव किया और इस भाग-दौड़ की दिनचर्या में थोड़ा समय ईश्वर के ध्यान में और योग-साधना करके बहुत अच्छा अनुभव किया। क्योंकि चिन्तन भक्त का हो या भगवान का, चित्त को परिशुद्ध, परिष्कृत कर ही देता है। भावनाएँ जब भी कभी भक्त अथवा भगवान के स्मरण से भीगती हैं, तब उनमें भक्ति का प्रादुर्भाव हो ही जाता है। मैंने वहाँ जाकर यह अनुभव किया। हमें प्रत्येक दिन ईश्वर का ध्यान करना चाहिए ताकि हमारा मन एकाग्रचित्त होकर विद्या अध्ययन के लिए भली-भाँति तैयार हो सके। बिना योग-साधना के सभी लोगों में भ्रमित क्षमताओं का अचानक उभार होता है। 'स्त्री-पुरुषों के पास समय बिताने के लिए कोई काम न हो तो वे पतित हो जाते हैं। हमें श्रम से जी नहीं चुराना चाहिए। अन्यथा हम प्रकृति के लिए निरुपयोगी बन जाएँगे। काम न होना एवं आलस्य, प्रमाद से भरा जीवन जीना दुर्भाग्य का लक्षण है।

हमें योग-साधना करने से शान्ति मिली। मनुष्य महान है और उससे भी महान उसका सृजेता है। नित्य उसका मनन किया जाए तो क्या कुछ हस्तगत नहीं किया जा सकता।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ज्योति चन्द्रा, कक्षा- ९

ज्ञानयोग शिविर के दिव्य वातावरण में शान्ति की अनुभूति हुयी। यह मेरे जीवन का पहला ध्यान योग शिविर था। वहाँ के ध्यान योग में मुझे ऐसी अनुभूति हो रही थी कि मानो मैंने साक्षात् रूप में भगवान के दर्शन पा लिये हो। ज्ञान योग शिविर में बताये गये मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप करने से एकाग्रता बढ़ती है। मंत्र के जाप से मंत्र की ध्वनि हमारे अचेतन में गूँजायमान होने लगी थी। मंत्र की ध्वनि विशिष्ट प्रकार की थी। उसकी लय एवं आवृत्ति भिन्न-भिन्न थी। यदि समस्या जो अचेतन में जड़ जमाये बैठी है, उसको दूर करने वाले मंत्रों के जप करने से मंत्र की ध्वनि में कम्पन्न पैदा हो रहा था। यह कम्पन्न बढ़ता जा रहा था और मंत्र की तीव्रता से अन्ततः जड़ जमाई उस समस्या का निराकरण हो जाता है। जब जड़ ही समाप्त हो जायेगी तो गलतियाँ भी नहीं होती है।

विद्यार्थी जीवन में मन की एकाग्रता अति आवश्यक होती है। योग शिविर के दौरान 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र के जाप से मन अत्यन्त ही शान्त और एकाग्र था। अनेक महान व्यक्तियों द्वारा बतायी गयी बातों का नित्य पालन करने से अनेक प्रकार के लाभ मिले हैं। योग शिविर में योग-साधना के दौरान मुझे सबसे अच्छा प्रतीत हुआ। उस योग शिविर में मुझे सबसे महत्वपूर्ण बात यह सीखने को मिली कि मनुष्य को सदैव सकारात्मक सोच रखनी चाहिये और सकारात्मक सोच के लिए मन का एकाग्र होना अतिआवश्यक है। वहाँ पर मुझे सबसे अच्छा तब लगा जब योग के समय उन्होंने अपने-अपने मन-मन्दिर में अपने-अपने ईष्ट देवों को विराजमान करने के लिये कहा क्योंकि ध्यान में केन्द्रीकरण के लिये कोई छवि निर्धारित करनी पड़ती है, उन्होंने निराकार रूप से ईश्वर की उपासना के सन्देश नहीं दिये। 'श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ' में लिखे विचारों को पढ़कर और उसे अपने जीवन में पूर्णतः पालन करने से मनुष्य कभी भी असफल नहीं हो सकता।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

नूतन चौधरी, कक्षा- ९

मुझे योग शिविर के दिव्य वातावरण में ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे मुझे मोक्ष प्राप्त हो गया हो। मुझे वहाँ पर एक शुद्ध वातावरण महसूस हुआ, ऐसा मैंने कभी नहीं महसूस किया। वहाँ पर महसूस किया कि जैसे मैं साक्षात ईश्वर के समीप बेटी हूँ। मुझे वहाँ पर बहुत प्रसन्नता की अनुभूति हुई। ऐसी प्रसन्नता मैंने कभी नहीं पायी। मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती हूँ कि वहाँ पर मुझे कैसा अनुभव मिला। मुझे वहाँ पर कुछ शिक्षाप्रद बातें भी सीखने को मिली। मैं जब से विश्वशान्ति आश्रम गयी हूँ तब से मैं वहाँ से प्राप्त हुई शिक्षा पर रोज अमल कर रही हूँ। मैं रोज सुबह ध्यान करती हूँ और ईश्वर को याद करती हूँ। यह सब करने से मेरे जीवन में बहुत से बदलाव आये हैं। मेरा पढ़ाई में मन लगता है तथा मैं एकाग्रचित होकर पढ़ती भी हूँ। मैं तो चाहूँगी कि एक नहीं अगर हज़ारों बार भी मुझे ले जाए तो मैं जाना चाहूँगी। मुझे आशा है कि मुझे वहाँ जाने का अवसर फिर प्राप्त हो। जो किताबे मुझे वहाँ से प्राप्त हुई थी उनमें से 'सच्ची प्रेम भक्ति' मुझे अत्यन्त प्रिय लगी।

–ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आलोक वर्मा, कक्षा- ११

श्री विश्वशान्तिमय प्रयाग, की कानपुर शाखा द्वारा सोसायटी धर्मशाला कानपुर में, दिनाङ्क २ नवम्बर २०१० को मुझे प्रभु की शरण में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सोसायटी परिसर में प्रवेश करते ही मुझे असीम शान्ति और अद्भुत आनन्द की अनुभूति हुई। सन्त-महात्माओं के बीच बैठकर ईश्वर नाम की महत्ता का अनुभव हुआ। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्रोच्चारण से मेरे मस्तिष्क के विचारों में स्थिरता आती है, एवं ध्यान केन्द्र में सहायता मिलती है। किसी ध्यान योग शिविर में जाना मेरे लिए पहला अनुभव था। ऐसे ध्यान योग शिविर केन्द्र सभी के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, ख़ासतौर पर विद्यार्थियों के लिए। नकारात्मक विचारों पर विजय पाने के लिए यह एक सिद्धमंत्र है। श्री विश्वशान्ति आश्रम का यह प्रयास सभी दृष्टिकोणों से प्रशंसनीय हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अर्तिका गुप्ता, कक्षा- ९

ध्यानयोग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे जो अनुभूति हुई उसको मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती, वहाँ जाकर मुझे शान्ति का आभास हुआ। मन पवित्र हो गया। लगा जैसे मैं किसी स्वर्ग में आ गई हूँ। मुझे ऐसा अवसर पहली बार प्राप्त हुआ। उस दिन का मुझे बहुत दिनों से इन्तजार था। वहाँ का वातावरण अत्यधिक शुद्ध था। जब भी मैं अकेली महसूस करती हूँ तो ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप करती हूँ, मन को शान्ति मिलती है। मन भटकता नहीं है, वहाँ के भजन मुझे बहुत अच्छे लगे। मैं एक घण्टे बैठकर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र की पूजा करती हूँ। मुझे शान्ति मिलती है। मुझे यह करना पसन्द है। मैं चाहती हूँ कि मुझे ऐसा अवसर बार-बार मिले। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मीनाक्षी त्रिपाठी, कक्षा- ९

जब मैं आश्रम के शिविर में गई तो, उस स्थान पर शान्ति का वातावरण था काफी भीड़ में लोग उपस्थित थे, वहाँ पर हमें बहुत सारी शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्द्धक बातें वर्णन सहित बताई गई, वहाँ पर गुरु 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' की महिमा एवं प्रसिद्धि का वर्णन बताया गया जिसे सुनकर हमें यह ज्ञात हुआ कि वास्तव में गुरु आनन्दमय एक महान एवं सर्वज्ञज्ञाता हैं। वहाँ पर कुछ गीत गायन की प्रस्तुती हुई, तत्पश्चात वहाँ हमें प्रतिज्ञा करवाई गई जिसमें हमें माता-पिता के प्रेम के प्रति जाग्रत होने की शिक्षा दी गई, वहाँ से आते समय हमें गुरु ॐ आनन्दमय की एक पुस्तक मिली, जिसमें कुछ गीत एवं छात्र-प्रतिज्ञा वर्णित थी, उसे मैं प्रतिदिन अध्ययन करती हूँ, जैसा कि वहाँ कहा गया था कि, छात्र प्रतिज्ञा करने से हमारे हृदय में ज्योति रूपी ज्ञान का प्रकाश पल्लवित हो उठेगा, वास्तव में मैंने ऐसा ही प्रतीत किया। मेरे विचार से मैं श्री विश्वशान्ति आश्रम में जाकर धन्य हो गई। अत: मैं ये ईश्वर से प्रार्थना करूँगी कि मुझे पुन: ॐ आनन्दमय आश्रम में जाने का सौभाग्य प्राप्त हो।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अंकित कन्नौजिया, कक्षा- ११

श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग, में कानपुर सोसाइटी धर्मशाला में हुए इस शिविर में मैं अपने आपको सम्मिलित होने के कारण गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। मैं अपने विद्यालय के प्रबन्धक का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि मुझे उनकी वजह से उस 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' के जाप में शामिल होने का अवसर मिला। मुझे उस आश्रम में जाकर आनन्द की अनुभूति हुई, और हृदय में अति शान्ति का अनुभव किया। मैं उसमें जाकर इतना प्रभावित हुआ कि मुझे उस शिविर में भविष्य में जाने का अनुभव प्राप्त हुआ, इस अवसर का अवश्य लाभ उठाउँगा।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
श्री विश्वशान्ति आश्रम से जुड़े दो अमेरिकी श्रद्धालुओं का प्रेषित अनुभव पत्र–

ॐ श्री विधानाचार्य भगवान के चरणों में सादर प्रणाम।

आज यहाँ इस संसार में जहाँ सब एक दूसरे से ईर्ष्या, नफ़रत, क्रोध करते हैं और राग-द्वेष, भय, रुदन, कामना-क्रोध, कलह-क्लेश जैसे द्वन्द विकारों से तपायमान हो रहे हैं वहीं एक ऐसा दिव्य वातावरण भी है जहाँ सर्वत्र सर्वशक्तिमान सच्चिदानन्द ॐ श्री आनन्दमय भगवान की दया और असीम कृपा से परमानन्द परम शान्ति और परम् सुख प्राप्त होता है।

मेरे जीवन का जो सबसे बड़ा उद्देश्य था वह श्री विश्वशान्ति आश्रम से जुड़ना था। मैं इसे सौभाग्यशाली मानता हूँ और हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। सभी भगवत् भक्तों को जिन्होंने मुझे श्री आश्रम से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

आज लगभग एक वर्ष हो गया मुझे अमेरिका आये हुए, कई उतार-चढ़ाव आये और आगे भी आ सकते हैं परन्तु मैं कहीं भी नहीं डगमगाया नहीं, अपितु मेरी हिम्मत और भी बढ़ी। इन परिस्थितियों ने मुझे धैर्य, समता और संतोष का पाठ पढ़ाया है। ये सब इसलिए मुमकिन हुआ क्योंकि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान की मुझ निमित्त मात्र पर असीम कृपा है।

अगर कोई दुर्बल राजा युद्ध में एक शक्तिशाली राजा का सामना निर्भयता से केवल अपनी शक्तिशाली और विशाल सेना के बल पर करता है तो फिर हमें कैसा भय। हमारे साथ तो समस्त विश्व और सारे ब्रह्माण्ड के स्वामी ॐ आनन्दमय भगवान हैं।

ॐ आनन्दमय की कृपा से मेरा भजन, ध्यान और साधन नियमानुसार चल रहा है। चाहे मैं चलते-फिरते या फिर ट्रेन में सफ़र करते हुए करूँ, मगर प्रभु पिता जी की कृपा से मेरे साधना में किसी प्रकार के भी विघ्न नहीं आता और मेरी भगवती श्रीमती टीना माटा जी भी मेरी पूरी सहायता करती हैं और मेरे साथ भजन, ध्यान करती हैं।

मेरी श्री आनन्दमय भगवान से यही प्रार्थना है कि बारम्बार मेरी स्मृति उनके श्री पावन चरणों में बनी रहे, मैं केवल अपने प्रभु पिता जी से प्रार्थना करूँगा। मैं तो केवल अपने प्रभु पिता जी के चरणों का दास हूँ...। मुझे हर समय परम् पूज्य पिताजी, पूज्यनीय डॉक्टर साहब, बड़ी बहन जी, छोटी बहिन जी, भगवान आनन्द किरन जी, आनन्दलता बहन जी की हमेशा याद आती है। मैं श्री आश्रम से बहुत-बहुत प्यार करता हूँ। ॐ शान्तिमय

दास– रोहित माटा आनन्दमय, अमेरिका।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मुझे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप कने से बहुत लाभ हुआ। इस महामंत्र का जप करने से मुझे बहुत मानसिक बल मिलता है। भगवन् रोहित (मेरे पति) मुझे मानसिक चिकित्सा के १२५ सूत्र उच्चारण कराते हैं क्योंकि मैं हिन्दी पढ़ नहीं सकती और मेरी बात आनन्दकिरन जी भगवन से फोन पर करवाते हैं, जो मुझे बहुत अच्छा लगता है और मुझे कुछ दिन पहले सपने में पूज्य गुरु भगवान का दर्शन और श्री आश्रम का दर्शन हुआ। बहुत प्रकाश था और गुरु भगवान मेरी ओर देखकर मुस्कुरा रहे थे।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान जी ने मेरी जिन्दगी में बहुत आनन्द शान्ति प्रदान की है और मैं जल्दी ही भारत आकर आश्रम आना चाहती हूँ और आप सबके दर्शन करना चाहती हूँ। मेरी तरफ से सबको ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय। मैं इण्टरनेट पर भजन भी सुनती हूँ और गुरु भगवान एवं डॉ॰ साहब के दर्शन भी करती हूँ। –ॐ शान्तिमय

–टीना माटा, अमेरिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष भगवान शरणम्

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के सगुण-निर्गुण स्वरूप का विधान

''हे प्यारे प्रेमियों मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम रूप को मत भूलो, मुझे सर्वत्र सब रूपों में और अपने हृदय (दिमाग) में मानों।''

ॐ आनन्दमय प्रभु जी के विधान को भली प्रकार समझकर, उसका पालन करते हुये ॐ आनन्दमय प्रभु जी के स्वरूप को जानकर, उसमें स्थिति प्राप्त कर नित्य निरन्तर उस आनन्द में मग्न रहना यही मानव जीवन का सार्थक उद्देश्य है। सद्गुण सदाचार ही ॐ आनन्दमय प्रभु जी का विधान है। समाधिमग्न ब्रह्मवेत्ता महापुरुष उस विधान के ज्ञाता होते हैं।

ॐ आनन्दमय प्रभु जी एक ही हैं और उनका विधान भी सदा से एक ही है। जिस देश-काल में जो महापुरुष काम, क्रोध, भय आदि सब दुर्गुण-दुराचारों को त्यागकर समस्त दिव्य गुणों (प्रेम-प्रसन्नता, समता-सन्तोषादि) से युक्त हो, नाम रूप से पृथक अपने आनन्दमय स्वरूप में नित्य स्थित रहते हैं, उनसे ही उस विधान का ज्ञान प्राप्त कर श्रद्धा प्रेम विश्वास पूर्वक पालन कर उनकी कृपा से हम सब अपने जीवन को दु:खों से मुक्तकर सुख सम्पन्न, आनन्द सम्पन्न बना सकते हैं।

ॐ आनन्दमय प्रभु जी के स्वरूप पर कुछ विचार किया जाता है। ब्रह्मवेत्ताओं द्वारा ब्रह्मतत्त्व को जानकर साधन सम्पन्न होने पर साधक सारे गुणावगुणों से ऊपर उठकर, नामरूप से रहित आत्मस्वरूप परमानन्द में नित्य मग्न रहने वाले (मानव शरीर में) साकार रूप में ब्रह्म बन जाता है। श्री गीता ७/१७,१८ साकार रूप से उनका दर्शन, ज्ञान, श्रवण, आज्ञापालन, सेवा आदि साधनों से उनके साकार स्वरूप का ध्यान अत्यन्त सरल हो जाता है। जिस प्रकार पावर हाउस से तार द्वारा सम्बन्ध करने पर बिजली का प्रभाव अन्य कल पुर्जों में जाता है। उसी प्रकार भगवान के साकार रूप का ध्यान, चिन्तन, मनन नाम जप तुरन्त ही आनन्द शान्ति और शक्ति का अनुभव कराता है क्योंकि श्री भगवान के साकार-निराकार रूप की एकता है। श्री भगवान कहते हैं कि तेरा इस जानने से क्या प्रयोजन है। मैं अपनी योगशक्ति के एक अंश से सम्पूर्ण जगत को धारण करके स्थित हूँ (श्री गीता ११/४२)। श्री भगवान जी १२/३-४ में कहते हैं कि जो पुरुष सदा एक रस रहने वाले नित्य, अचल, निराकार ब्रह्म को भजते हैं, वे मुझको ही प्राप्त होते हैं। श्री गीता ८/१२-१३ में कहते हैं कि योगी सब इन्द्रियों को वश में करके योगधारणा में स्थित मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्यागकर जाता है वह परमगति को प्राप्त होता है। यहाँ पर भी भगवान ने अपने को निराकार ब्रह्म बताया और उससे अपनी एकता दिखाई। अन्य स्थान पर भी भगवान कहते हैं कि मेरा भक्त मुझे तत्व से जानकर मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है। यहाँ पर उन्होंने अव्यक्त, सर्वव्यापी निराकार स्वरूप को ही तत्त्व कहा है।

इस सकार देखा गया कि अव्यक्त, अगोचर, सर्वव्यापी, आनन्दरूप शक्ति-स्वरूप व्यापक निराकार ब्रह्म का मन बुद्धि के लिए कोई आधार न होने के कारण यह अति कठिन ही नहीं असम्भव सा है और साकार उपासना अती सरल है (१२/३-४)। निराकार ब्रह्म की उपासना की कठिनता समझते हुए श्री सूरदास जी कहते हैं–

''अविगति गति कछु कहत न आवे।
सब विधि अगम विचारहि ताते सूर सगुण लीला पद गावे।।''

कबीरदास जी निराकार के उपासक होते हुए भी साकार स्वरूप की उपासना का महत्त्व स्वीकारते हुए कहते हैं–

''गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो मिलाय।।''

श्री विश्वशान्ति भाग १ ब्रह्मज्ञान शीर्षक पृ॰ ९२ सूत्र सं॰ ४२

श्री समाधिमग्न महात्मा में पूर्ण श्रद्धा, विश्वास। महात्मा-परमात्मा के अतिरिक्त विश्व में जो भी श्रद्धा प्रचलित है, वह सम्पूर्ण श्रद्धा अन्ध श्रद्धा के अन्तर्गत है। इतना ही नहीं सच्चा श्रद्धालु प्रेमी भक्त भगवान पर अपना एकाधिकार जमा लेता है। ''भाई जी मैंने हरि लीजो मोल।'' (मीरा)

साधक जितना ध्यान का साधन बढ़ाता जाता है अध्यात्म तत्त्व केवल उतना ही समझ में आता है। साधन की पूर्णता होने पर वह कृत्य हो जाता है।

इस प्रकार ॐ आनन्दमय भगवान का निराकार स्वरूप, दिव्य साकार स्वरूप व समग्र विराट स्वरूप सब मिलाकर ही उनका तत्त्वयुक्त पूर्ण स्वरूप है जिसका ज्ञान दिव्य साकार स्वरूप की भक्ति से ही सम्भव है।

ॐ आनन्दमय प्रभु जी की शक्ति, महिमा, गुण-ज्ञान अपार है। मन, बुद्धि की पहुँच से परे हैं। उनके शरणागत होने पर उनकी कृपा से ही कुछ समझ में आ सकता है। जितना लिखा जाये, लेखनी सदा अधूरी है।

ॐ आनन्दमय प्रभु जी पुनः याद दिलाते हैं–

''हे प्यारे प्रेमियों मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम रूप को मत भूलो, मुझे सर्वत्र सब रूपों में और अपने हृदय (दिमाग) में मानों। ॐ शान्तिमय

–राजा रामजी, बिजनौर।

हे प्रिय आत्मन् ! आदेश दाता बनने की और अपने आज्ञाकारी बनाने की इच्छा का नाम है कामः ।

अतः ''कामसंकल्पवर्जिता'' अन्यथा ॐ ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी प्रेमी-हितैषी मनुष्यों को द्वेषी-वैरी बना देते हैं और वैरियों को दमन करने के ज्ञान और शक्ति का ह्रास कर देते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं कक्षा-४ का विद्यार्थी हूँ, मेरा नाम माणिक वर्मा है, उम्र १० वर्ष है। मैं अपनी माता जी के साथ पिछले वर्ष बिजनौर में ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय सत्संग में गया था तो वहाँ मेरा दिल खुश हो गया और जब इलाहाबाद सत्संग में गया तो मैं खुशी से से उछल पड़ा। मैंने सोचा अभी तो इतना आनन्द आ रहा है और सत्संग सुनकर तथा सभी भगवन से मिलकर कितनी खुशी होगी।

जब हम आनन्द-भवन के सत्संग में ध्यान लगा कर बैठ जाते थे तो अन्दर से बहुत अच्छा लगता था। आश्रम के एक भगवन (जय प्रकाश जी) ने मेरी दीदी को बताया कि रोज एक पन्ना ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र लिखा करो।

आश्रम में खाना खाकर बिस्तर पर लेटे तो बस मन ऐसा सोच रहा था कि बस अब आँख बन्द कर सो जाऊँ परन्तु ऐसा विचार हुआ कि आओ अब कुछ भगवान के बारे में सुने-सुनायें।

भगवान तो हर किसी की मदद करते हैं। जब कोई गन्दा काम करता है तो उसे पापों का दण्ड मिल जाता है। लोग सोचते हैं भगवान मेरी मदद नहीं कर रहा है लेकिन ऐसा नहीं है, भगवान सबकी मदद करता है परन्तु उसकी मदद नहीं करते, जो गन्दे लोग हैं, जैसे- लड़ाई-झगड़ा करने वाले, शराब पीने वाले, राग-द्वेष, ईर्ष्या-कलह बुराई करने वाले इत्यादि। इसको कभी मत भूलो कि भगवान हमें नहीं देख रहा है, चाहे आप कहीं भी छिपें लेकिन भगवान वहाँ से निकाल लेता है। ॐ आनन्दमय भगवान कहाँ नहीं है, वैसे तो कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ भगवान न हो, परन्तु देखेंगे तो पृथ्वी के अन्दर कोने-कोने में भी नहीं मिलेंगे। अच्छा चलो मैं बताता हूँ कि भगवान हमारे मन में है हमारे विश्वास में हमारे अध्यापक में है चाहे वह अंग्रेज हों, चाहे मुसलमान हों, चाहे हिन्दू हों या सिक्ख हो, भगवान उनमें हैं और यही आश्रम के गुरु महाराज की आज्ञा है- हे प्यारे प्रेमियों, मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम-रूप को मत भूलो। मुझे सर्वत्र सब रूपों में और अपने हृदय में मानों। **ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जब मैं श्री विश्वशान्ति आश्रम के सम्पर्क में आई उस समय मेरी उम्र ९-१० वर्ष की रही होगी। आश्रम के वार्षिक सत्संग में जब कभी-कभी जाने का मन नहीं होता तब हम तरह-तरह के बहाने बनाते और जाने से मना कर देते तब चाची जी डाँट-डपट कर ले जाती थी, जिससे हमें बहुत गुस्सा आता था। छोटे थे, महापुरुषों के प्रभाव का और सत्संग का इतना ज्ञान नहीं था। धीरे-धीरे बड़े हुए और ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी का ज्ञान होने लगा, तब पल-पल मैं तरह-तरह के अनेकों अनुभव मुझे देखने को मिले– जैसे चाची जी बताती थी कि जो प्रभु पिता जी का भजन ध्यान करता है पिताजी सब तरह से उसको सहयोग देते हैं। वो मुझको अपने बचपन के अनेकों अनुभव और दूसरे बच्चों के बारे में हमेशा बताती थी। ग्रन्थों का ज्ञान भी कराती थीं। मेरे अन्दर ये सब सुनकर एक जिज्ञासा उत्पन्न होती थी कि जब दूसरे बच्चे इतना सब कुछ कर सकते हैं और पिताजी उनकी बात समझते हैं तो फिर मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकती? मुझे भी लगन लग जाती थी कि मुझे भी ऐसा ही कुछ करना है। और मैं ध्यान करने लग जाती थी कि पिताजी आयेंगे और मैं उनके दर्शन श्रवण करूँगी। पर ऐसा कुछ भी नहीं होता था, क्योंकि मुझे इतना ज्ञान तो था ही नहीं कि भगवान ऐसे ही थोड़े दर्शन देते हैं। उसके लिए तो खुब साधना करना पड़ता है, मन को शान्त और शुद्ध बनाना पड़ता है। लेकिन गाँव में अकेले पड़ जाने के कारण मुझसे जितना भी साधन होता था मैं करती थी और प्रभु पिताजी को ही एक मात्र सहारा मानती थी। धीरे-धीरे मैंने देखा की चाची जी जो बातें मुझे बताती थी अब वो सत्य होती जा रही थी। मेरी साधना ज्यादा तो नहीं थी परन्तु मैं सुबह-शाम दैनिक प्रार्थना और खाली समय में आनन्द कीर्तन और दूसरे ग्रन्थों को पढ़ती थी। और मन से श्रद्धा काफी रखती थी। कई बार समय के अभाव के कारण स्कूल जाते समय प्रार्थना नहीं कर पाती थी तो मुझे अच्छा नहीं लगता था। पर मैं रास्ते में चलते-चलते दैनिक प्रार्थना पूरी कर लेती थी। जिससे मुझे संतुष्टी हो जाती थी कि मैंने पूजा कर ली है। कई बार मुझे गाँव में घर की बहुत याद आती थी मैं रोती भी थी। लेकिन पिताजी मन के अन्दर से ऐसी शान्तवना देते थे कि मैं आपके साथ हूँ। ऐसे रोते नहीं, सब अच्छे के लिए होता है। आप निडरता के साथ आगे बढ़ो, मैं पीछे-पीछे आपके साथ साये की तरह हूँ। और मैं एकदम शान्त हो जाती थी। पिताजी मुझे हमेशा पढ़ाई में, कामों में, खेल-कूद में, स्कूल के प्रोग्रामों में हर तरह से सबसे आगे रखते थे। कई बार मैं घरवालों के डर से पीछे हट जाती थी कि क्या पता घर वाले करने भी देंगे या नहीं। लेकिन फिर मन में ऐसा लगता कि पिताजी मुझे डाँट रहे हैं और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे आगे कर रहे हैं कि आपको ऐसे डरना नहीं है। मैं आपके साथ हूँ। भगवन् जी वो सब कुछ मेरे लिये किसी चमत्कार से कम नहीं था। उस समय मैंने ये सब महसूस हीन नहीं किया बल्कि आज पग-पग पर अलग-अलग अनुभवों के रूप में इस तरह के अनेकों अनुभव महसूस करती रहती हूँ। ऐस अनुभवों में से मैं एक अनुभव यहाँ लिख रही हूँ–

एक बार की बात है मैं कक्षा-९ के पेपर देकर छुट्टियों में घर आयी, तब मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं आगे की पढ़ाई मम्मी-पापा के पास पूरी करूँ, लेकिन मेरी लाख जिद के बावजूद भी घरवाले माने नहीं और मुजे गाँव जाने के लिये कह दिया। उस दिन चाची जी को आश्रम भी जाना था, तो मेरे मन में भी विचार आया कि मैं भी आश्रम जाऊँ और परमपिता के दर्शन कर बड़ी बहन जी से चर्चा करूँ कि मैं आगे की पढ़ाई कहाँ करूँ। हम आश्रम में पहुँचे और थोड़ी सेवा करने लगे लेकिन मेरे दिमाग में यह बात गूँजती रही कि मैं बहन जी से कैसे पूछूँ कि मैं कहाँ पढ़ूँ। सेवा के बाद विग्रह चौकी के सामने बैठ गयी। तभी बहन जी आयीं और मेरे समीप बैठ गयीं। वार्तालाप करने लगी कि आप कहाँ पढ़ते हो कौन सी कक्षा में हो? जबकि मैंने तब तक उनके कुछ कहा भी नहीं था। मैने बताया कि मैं गाँव में दादी-दादाजी के पास पढ़ती हूँ और १०वीं कक्षा में आयी हूँ। तभी बहन जी ने कहाँ हाँ गाँव का वातावरण शुद्ध होता है, शुद्ध चीजें होती हैं, पशुओं की और खेतों की सेवा भी काफी होगी। मैनें कहा हाँ जी। फिर बहन जी ने मेरे मन के भावों को जानते हुये मेरे बिना कुछ कहे ही

मुझे उत्तर भी दे दिया कि हाँ आप अच्छे से पढ़ाई पूरी करो और गाँव में दादी-दादा जी की भी सेवा करते रहो। तभी मैंने मन को शान्तवना दी और खुशी-खुशी गाँव जाकर १०वीं की पढ़ाई शुरू की। मार्च में बोर्ड के पेपर शुरू हो गये, मुझे चिन्ता होने लगी कोई ट्यूशन भी नहीं था और घर की सेवा भी काफी थी। मैने पापा के पास फोन किया कि मम्मी या दादी किसी को यहाँ पर भेज दो। पापा ने मन कर दिया कि जिस बच्चे को लगन होती है वह पढ़ाई भी करता है और घर का काम भी करता है। मुझे बहुत दु:ख हुआ परन्तु ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी पर मुझे पूर्ण विश्वास था। मैं रात को हमेशा पिताजी के चरण स्पर्श करके सोती थी और जिस टाइम भी मुझे उठना होता था मैं ॐ पिताजी से कह देती थी कि ॐ पिताजी मुझे उस टाइम उठा देना और मेरी आँखे अपने आपही उसी टाइम खुल जाती थी एक दिन की बात है कि मेरा इंग्लिश का पेपर था और रात को मुजे नींद भी बहुत तेज जकड़ लिया और मैं सो गयी। मुझे याद नहीं की उस दिन मैंने पिताजी को उठाने के लिये कहा भी था या नहीं। सुबह ७बजे से पेपर भी था, तैयारी कुछ थी कुछ नहीं। और मैं आराम से सो रही थी। सोते-सोते रात को अचानक किसी ने मेरे पैर का अगूँठा पकड़ कर बड़ी तेजी से हिलाया और मैं घबराकर एकदम उठी और घड़ी की तरफ देखा। उस समय २:३० बजे थे। मैंने चिन्ता में किताबें उठायीं और याद करने लगी। याद करते-करते मैने सोचा कि मुझे अगूँठा हिलाकर उठाया किसने? जबकि न तो कोई मेरे पास था और न कोई जागा हुआ था। मैं कश्मकश में थी कि अचानक मेरी नज़र सामने रखे ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के विग्रह पर पड़ी। तभी मैंने सोचा कि कोई और नहीं प्रभु पिताजी ही थे। मैंने पिताजी को उठकर धन्यवाद दिया और चरण स्पर्श किये। उस दिन का मेरा पेपर भी बहुत अच्छा हुआ। बस हमारे मानने की देर है। प्रभु पिताजी तो हमेशा हमारे साथ रहकर हमारी रक्षा करते हैं। इस तरह अनेकों अनुभव जीवन में होते रहते हैं जिनका लिखित में वर्णन नहीं किया जा सकता।

–कु० अराधना, हरिद्वार।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं बड़ी भाग्यशाली हूँ कि भगवान की कृपा मेरे ऊपर बचपन से ही है। मेरा जन्म सात्विक वातावरण में हुआ, मेरे माता-पिता जो श्री विश्वशान्ति आश्रम के सत्यता पूर्ण अध्यात्मिक वातावरण से जुड़े हुये थे। इसी कारण मुझे बचपन से प्रभु पिता जी की दया-प्रेम से शुद्ध विचारों की भावों की शक्ति प्राप्त होती रही। पूज्य माता-पिता जी की ॐ आनन्दमय भगवान की पूजा, भक्ति, आराधना एवं उनके शान्तप्रिय प्रसन्नता के आचरणों से जीवन में दूषित गलत-विचारों और आचरणों का प्रभाव नहीं पड़ा। विशेष प्रभावित शक्ति का प्रभाव तो इन तीन वर्षों से हो रहा है क्योंकि वार्षिक सत्संग का पाँच दिवसीय कार्यक्रम हमारे निवास स्थान पर हो रहा है जिससे अब हम सच्ची प्रेम-भक्ति कै दैनिक पाठ करते हैं और महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' जपने का निरन्तर अभ्यास करते हैं, जिससे सुख-शान्ति, प्रसन्नता का अनुभव होने लगा है। दैनिक सच्ची-प्रेम-भक्ति का पाठ करने से चिन्ता, क्रोध कम होने लगे और विचारों में प्रेम-प्रसन्नता की जाग्रति होने लगी।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थों की पूजा से जो लाभ हो रहा है, उसे अनुभव कर मन ही मन प्रशन्नता का अनुभव भी करते हैं। पहले की अपेक्षा हमारी पढ़ाई में भी प्रगति हुयी है। मेरी वार्षिक परीक्षा का टेस्ट था और मैं प्रयोगात्मक कॉपी ले जाना भूल गयी थी मेरी कक्षा अध्यापिका सबकी कॉपी देख रही थी मुझे डर लग रहा था कि मेरी कक्षा अध्यापिका डॉटेगी और कम नम्बर भी देंगी। मैं ॐ आनन्दमय ॐ शानितमय को याद करने लगी और जब कक्षा अध्यापिका ने मुझे बुलाया तो ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से अध्यापिका ने मुझसे कॉपी के बारे में नहीं पूछा और वही प्रश्न किये जो मुझे याद थे और मैंने सही-सही उत्तर दिये जिससे अध्यापिका ने अच्छे नम्बर भी दिये। ॐ आनन्दमय भगवान जी परम दयालू हैं और सदैव हमारी सहायता करते रहते हैं।

–कु० शगुन, कक्षा- १२, ज्ञान बिहार, बिजनौर।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री आठ सिद्धिदायक श्री आनन्दमय भगवान की जय

ॐ श्री ध्यान-समाधि के आचार्य विश्वगुरु श्री महापुरुष भगवान के परम पवित्र चरणों में मैं अपने सहित भगवत स्वरूपों की भावरूप पुष्पाञ्जली अर्पण करते हुए साष्टाँग दण्डवत प्रणाम करता हूँ।

आज के दिन समाज के प्राय: लोग धन की कामना से धन के अधिष्ठाता कल्पित देवी-देवों की उपासना करते हैं। किन्तु इस भौतिक धन-सम्पत्ति से सम्पन्न बड़े-बड़े धनी मानी भी दु:ख अशान्ति तथा चिन्ता क्रोध का दर्शन दे रहे हैं।

इस धन सम्पत्ति को प्रचूर मात्रा में पाकर आज तक कोई भी सुख-शान्ति को प्राप्त नहीं हुआ, न होगा। यह निश्चित बात है।

अत: हम लोग अपने आध्यात्मिक सम्पत्ति के दाता ॐ श्री आनन्दमय भगवान की अराधना व श्री आप के दिव्य गुणों को गायन करें। जिस आनन्ददायनी सम्पत्ति को यत किञ्चित प्राप्त कर आज हम सब किस सुख-शान्ति व ध्यान आनन्द को प्राप्त हो रहे हैं। हम क्या थे और क्या होते जा रहे हैं। यह सब इस दिव्य सम्पत्ति का ही प्रभाव है। यह गुण सम्पत्ति नित्य है। इसका कभी नाश नहीं होता। बल्कि दूसरों को देने से बढ़ती है। अत: इस सात्त्विक सम्पत्ति की बुद्धि करने में ही अपनी श्रद्धा बढ़ावे।

किसी भगवत प्रेमी ने कहा–

संत मिलन और आनन्दमय कथा
दुर्लभ जग में दोये।
सुत दारा और लक्ष्मी तो
पापी के भी होये।

ॐ श्री अखण्ड आनन्द एवं आत्मशक्तिदायक साक्षात् परब्रह्मरूप श्री इष्ट भगवान को मैं पुन:-पुन: नतमस्तष्क प्रणाम करता हुआ वन्दना करता हूँ।

हे प्रभू! आप अहेतुक कृपा करके प्रयाग पधारे और हम लोगों के भाग्य जागे। श्री आपके दर्शन अती दुर्लभ हैं जो हम लोगों को बिना प्रयत्न के सहज ही में प्राप्त हुए। हम धन्य हैं।

हे ध्यान आनन्द शक्ति के दाता; इस दु:खमय संसार के मोह दल-दल में पड़े चिन्ता क्रोध में ग्रसित हम अल्पज्ञ जीवों को भी आपने विशुद्ध ज्ञान प्रकाशमय सात्त्विक मार्ग दर्शाया और ऐसे ध्यान आनन्द का अनुभव कराया जो आज विश्व में कही नहीं है।

हे श्री कृपामय भगवान श्री आपके महान प्रभाव द्वारा हम लोगों का अशान्तिमय जीवन सुख शान्तिमय बनता जा रहा है। हे श्री महापुरुष भगवान! श्री आपने हमारा कितना उपकार किया है और कर रहे हैं- इसका ऋण चुकाने की हम सरीखे तुच्छ सेवकों की सामर्थ्य नहीं है।

हे महाप्रभू! श्री आपके स्मरण करने से हृदय के कलुषित भाव नष्ट होकर मन प्रसन्न व आनन्द मग्न हो जाता है और सम्पूर्ण दुर्गुणों का नाश होकर सद्गुणों की प्राप्ति होती है जिसका की प्रत्यक्ष अनुभव होता है।

ऐसे परम हितैषी ॐ श्री भगवान को हम लोग हृदय से सदा पास में रखें। पास में रखने के उपाय श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या १३ पर प्रकाशित है।

हमारा श्रद्धा, विश्वास और साधना में तत्परता तथा ॐ श्री आनन्ददायक के दर्शनों की उत्कण्ठा प्रतिदिन बढ़ती रहे। हमारे उत्साह व प्रेम की डोरी से खिंचे ॐ श्री प्रेमास्पद भगवान जी श्री शिघ्र ही प्रयाग पधारेंगे और अपने परम पुनीत दर्शन समागम द्वारा हम सेवकों को कृतार्थ करेंगे।

बोलो श्री आनन्दमय भगवान की जय।

–श्री आनन्द ब्रह्म जी आनन्दमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय प्रभु पिता जी के चरण-कमलों में करबद्ध प्रणाम व श्रद्धा की पुष्पाञ्जलि समर्पित।

अशान्तिमय को शान्तिमय बनाने वाले प्रभुपिता जी का जितना ध्यान व स्मरण किया जाये उतना ही कम है। मुझे ॐ आनन्दमय भगवान पर पूरा विश्वास है कि भगवान मेरी हर पल-हर क्षण मदद करते हुए मेरे साथ हैं। जो माँगा सो दिया। भगवन हम बिजनौर के सत्संग में गये 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' भगवान का सत्संग देख-सुनकर मन कई बार भर आया। बिजनौर से आने के बाद ईश्वर की कृपा के साक्षात् अनुभव हुये। जब भगवन आनन्द किरण जी की याद आयी तब-तब इलाहाबाद से भगवन का तुरन्त फोन आया मैं हर्ष के मारे फूली न समायी। लगता है अब दु:ख-विपदा के बादल छटने वाले हैं। क्योंकि भगवान जी मेरे साथ हैं। भगवन २१-०७-११ के चमत्कार को सुने– ''मैं बैंक में अपने कुछ कागज लेकर गयी जहाँ हमारे बड़े अधिकारी के हस्ताक्षर भी होने थे। मैंने मन में दृढ़ निश्चय किया और भगवान जी की सत्संग सुधा के ऊपर बना विग्रह मैंने अपने पॉलीथीन अर्थात् जिसमें मेरे बहुत जरूरी कागज थे रख लिये। भगवान जी को सौंप कर बैंक पहुँची। साथ ही मुझे कुछ पैसों की जरूरत भी थी। वहाँ जाकर देखा तो काउंटर से बाहर गेट तक महिला व पुरुषों की लम्बी कतार लगी थी। बल्कि कुछ तो गर्मी के कारण पसीने से लथ-पत हुये सिर पकड़े नीचे भी बैठे थे। क्योंकि बहुत देर से कम्प्यूटर भी काम नहीं कर रहे थे। मैंने अपने भगवान जी को मन में देखा और सीधे मैनेजर के पास पहुँची नमस्ते की और कहा। मैनेजर साहब बोले– बोलो शशि कैसी हो? ठीक हूँ सर। हाँ बोलो क्या काम है? सर, थोड़े से पैसों की जरूरत थी; ठीक है यह फार्म भरकर बुक व फार्म लेकर काउंटर नं॰१ पर पहुँचो। सर, आप बोल दीजिए, मुझे कोई नहीं जानता यहाँ। सर बोले मैं बोल रहा हूँ तुम वहाँ जाओ, मैंनेजर साहब ने कहाँ हाँ भई पहले शशि का काम कर दो; इतनी भीड़ में सबसे बाद में आकर सबसे पहले काम हो गया, निराशा को आशा में बदल दिया। अन्दर पहुँची जिन कागजों पर सर अर्थात हमारे बड़े अधिकारी के साइन होने थे....। बैंक के बड़े कर्मचारी ने कहा- बस मैं तुम्हारा ही काम कर रहा हूँ, करता नहीं हूँ किसी का मैं। मन ही मन मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप कर रही थी। ऐसा सुनकर मेरा मन खीशी से रो उठा। भगवान इसको अभिमान मत समझना क्योंकि– 'कोयल दिव्या आम रस पीकर भी अभिमान नहीं करती, लेकिन मेंढक कीचड़ का पानी पीकर भी टर्राने लगता है।' ठीक उसी प्रकार में ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि अभिमान की छाया भी हमारे ऊपर न पड़े। प्रभु पिता जी हमें शक्ति दें कि अपवित्रता व अशुद्रता छल-कपट, व दु:खों पर हम विजयी हों। भगवन इलाहाबाद आश्रम की बहुत याद आती है। बहन जी का समझाना, गले लगाना, त्याग, तपस्या, सादगी, स्वच्छता, नम्रता देखकर मन बहुत प्रसन्न होता है। और सभी भगवत प्रेमी का प्यार व कर्मठता देखते ही बनती है। बिजनौर सत्संग में बहुत मन लगा। मैं अपने पिता श्री बुद्ध सिंह वर्मा जी का सदैव ऋणी रहूँगी कि मुझे इस सतपथ का मार्ग दिखाया और जैसे-जैसे मन आश्रम से जुड़ा वैसे-२ ही जिज्ञासा आगे बढ़ती गयी। तथा प्रभु पिता जी की ओर प्रेम अगाध प्रेम बढ़ता गया। कम समय में भी ईश्वर के प्रति श्रद्धा व भक्ति के भाव मन में बने रहते हैं। भगवन आश्रम की वाटिका की हरियाली मन को हरा-भरा बना देती है। ॐ शान्तिमय

–शशिबाला, रूड़की, हरिद्वार।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा हूँ। बिजनौर में अपने निवास स्थान पर रहकर वर्धमान कॉलेज में शिक्षा ग्रहण कर रही हूँ। तीन वर्ष से हमारे पास एक ॐ आनन्दमय अनुरागी जन निवास करते हैं। एक वर्ष तक वे हमको श्री विश्वशान्ति ग्रन्थों की पूजा के लिए और 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र जपने की प्रेरणा देते रहे। हम उनकी बातों पर ध्यान नहीं देते थे। बार-बार प्रेरणा देने से भगवत भाव से युक्त सज्जन का हमारे ऊपर प्रभाव हुआ और हम सच्ची प्रेम भक्ति का दैनिक पाठ और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र जपने लगे। सुख शान्ति प्रसन्नता का अनुभव होने लगा। दैनिक पूजा के अभ्यास से चिंता, क्रोध कम होने लगे और विचारों में प्रेम-प्रसन्नता की जाग्रति होने लगी।

श्री ग्रन्थों की पूजा से जो लाभ हो रहा है। उसे अनुभव कर मन ही मन प्रसन्नता का अनुभव भी करती हूँ पहले की अपेक्षा हमारी पढ़ाई में भी प्रगति हुई है।

मैं सितम्बर में इलाहाबाद के वार्षिक संत्संग में गई और वहाँ जाकर श्री महापुरुष के दर्शन का लाभ मिला। परम् पूज्य डॉ॰ साहब से वार्तालाप करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ सत्संग में न जाती तो परम् पूज्य डा॰ साहब की वार्तालाप और दर्शन से वंचित रह जाती।

ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से एक विचित्र अनुभव हुआ। मैंने बैंक ऑफ बडौदा का फार्म भरा उसकी परीक्षा बरेली में दिनांक-१७-०४-११ रविवार को होनी थी। उसी दिन कॉलेज में प्रयोगात्मक परीक्षा थी, जब हमें मालूम हुआ तो हमने मैडम से कहा। मैडम ने कहा कि जो मैडम प्रयोगात्मक परीक्षा लेने बाहर से रही हैं, उनसे पूछ कर बताऊँगी। मैं महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का जाप करने लगी और ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा हुई कि मैडम ने कहा कि – आप अपनी प्रयोगात्मक परीक्षा १८-०४-११ को मेरे निवास स्थान पर आकर दे देना। ॐ आनन्दमय भगवान जी की कृपा से मैं बरेली परीक्षा देने गई और अगले दिन मैंने प्रयोगात्मक परीक्षा भी दी। यह सब ॐ आनन्दमय भगवान जी की कृपा ही है। इनकी कृपा सदैव हम सभी पर बरसती रहती है। ॐ आनन्दमय भगवान जी तो असम्भव को सम्भव करने वाले हैं और बड़े दयालु हैं।

–छात्रा- कु॰ सोनम, ज्ञान बिहार, बिजनौर।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की अति कृपा का आभास तो बचपन से ही था परन्तु अब जटिल विश्वास भी हो गया है। इसी विश्वास रूपी अनुभव को सभी भगवन् के समक्ष पेश करने का स्वर्ण अवसर आज प्राप्त हुआ। आनन्दमय प्रभु ने बचपन से लेकर आज तक किसी भी दया भाव की कमी नहीं छोड़ी और हमेशा अपनी दया-दृष्टि हमपर तथा हमारे परिवार के सभी सदस्यों पर बनाई रखी। जीवन के हर मोड़ पर, सुख में दु:ख में आनन्दमय प्रभु का हमारे पास होने का आभास होता रहा और लगता रहा कि आनन्दमय प्रभु हमसे कह रहे हैं कि– ''बच्चे तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हारे पास हूँ।'' आनन्दमय प्रभु जी की शरण में रहकर कभी भी निराशा हाथ नहीं लगी अन्यथा हर बार, बार-बार एक नई आशा की किरण का प्रकाश जीवन पर पड़ा। सत्संग सुनकर हमेशा कुछ नया सीखने को मिला जिसे हमने अपनी दैनिक दिनचर्या में उतारा। पाँच दिन के सत्संग में इतना ज्ञान तो शायद पाँच दिन स्कूल जाने पर भी ना मिलता हो।

अनुभव तो काफी हुए और इतने विशाल हुए जो शब्दों में कहे या लिखे नहीं जा सकते। इन अनुभवों द्वारा हम कुछ अच्छा सिखते हैं और आनन्दमय प्रभु पिताजी का ध्यान कर हम अपने जीवन को सफल बना लेते हैं।

–आपकी आज्ञाकारिणी

मुद्रिका वर्मा, कक्षा-९, रुड़की।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मेरी बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति थी जिसके कारण धार्मिक होने वाले कर्म-धर्मों के प्रभाव का अनुभव होता रहता था। विशेष रूप से जब मैं श्री विश्वशान्ति आश्रम से जुड़ा और आश्रम के महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' को जपने से विशेष सुख-शान्ति और आनन्द की अनुभूति हुई। मैंने यह अनुभव किया कि अनादि-काल से हमारे त्रिकालदर्शी ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष मानव को महामानव बनाने के लिए मानव को सम्पूर्ण दु:खों से मुक्त कर सदा के लिए परमानन्द की प्राप्ति के लिए सजग करते हैं। चेतावनी देते हैं, सावधान करते हैं फिर भी मानव मण्डल पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है, क्यों नहीं पड़ रहा है।

इस विषय को मैंने कुम्भ कर्ण के वास्तविक स्वरूप से जो समझा है उसको प्रस्तुत कर रहा हूँ– वास्तव में 'कुम्भकर्ण' कोई संज्ञावाचक नाम नहीं है बल्कि लाक्षणिक नाम है। जिस मनुष्य के कर्ण (कान) कुम्भ (घड़े) के समान हों, वह व्यक्ति कुम्भकर्ण है। कम्भ की विशेषता है कि उसके मुख के पास यदि आप बोलें तो उसमें आवाज आयेगी तो सही और थोड़ी गूँजेगी भी परन्तु कुम्भ वही का वही पड़ा रहेगा, उसमें आपका कहना फलीभूत नहीं हेगा। मान लीजिए आप कहते हैं– ''जागो, जागो, आत्माओं जागो, भगवान अवतरित हो चुके हैं। उनसे आत्मिक नाता जोड़कर सुख-शान्ति के भागी बनो...'' तो यह कथन कुम्भ में जाकर थोड़ा प्रतिध्वनि तो होगा परन्तु उसमें धारण नहीं होगी। ठीक इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति ऐसे स्वभाव का है कि कोई अच्छी और लाभदायक बात अथवा ज्ञान का कोई अनमोल सुनने पर भी नहीं सुनता, उसे क्रियान्वित नहीं करता तो मानो कि वह 'कुम्भकर्ण' है।

चेष्टाहीन, बुद्धिहीन, आलसी, निद्राप्रिय ही कुम्भकर्ण है– अगर किसी मनुष्य की बुद्धि में कोई बात नहीं बैठती तो प्राय: कहा जाता है कि 'यह मनुष्य पत्थर बुद्धि है।' अगर कोई मनष्य बात को सुनने और समझने पर भी उसे क्रियान्वित नहीं करता, अपने आचार और व्यवहार में नहीं लाता तो कहा जाता है कि 'यह तो जड़ है।' अगर कोई मनुष्य बात को सुनकर और समझकर जीवन में गम्भीरतापूर्वक व्यवहार करता है तो उसके बारे में कहा जाता है कि 'यह तो सागर की तरह गम्भीर है। अत: जैसे बुद्धि की शिथिलता की पत्थर से उपमा दी जाती है, क्रियाहीनता की तुलना जड़ से की जाती है और गम्भीरता की तुलना सागर से की जाती है, वैसे ही मनष्य बहरा तो न हो परन्तु बात को सुनकर भी अनसुनी कर दे तो उसके कानों की उपमा 'कुम्भ' से की जाती है। पत्थर के तो कान होते ही नहीं, उसमें तो आवाज प्राय: जाती ही नहीं, इसलिए कानों की उपमा पत्थर से नहीं की जा सकती अर्थात् किसी व्यक्ति को 'पत्थरकर्ण' नहीं कहा जा सकता। कुम्भ की यह विशेषता है कि उसके ऊपर का मुख और उसकी गर्दन की शक्ल (आकृति) बहुत कुछ मनुष्य के कान से मिलती है। बस, शक्ल ही मिलती है, अक्ल नहीं मिलती। जिसके कान के पर्दे के साथ लगकर अनमोल रहस्य तुरन्त लौट आता है जैसे कि घड़े के पेंदी के साथ टकराकर वापस लौट आती है, वह चेष्टाहीन, बुद्धिहीन, आलसी, निद्राप्रिय, जड़ जैसा मनुष्य 'कुम्भकर्ण' ही है। ॐ शान्तिमय

–डॉ० राजेश वर्मा, गीताञ्जली बिहार, रूड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन''

हे प्रिय आत्मन् ! मनुष्य का यथा ज्ञान-शक्ति सेवा कार्य करने में अधिकार है, परन्तु जड़-चेतन आदि प्रेमी पदार्थों का अध्यक्ष बन कर, उन पर आदेश दाता होने का अधिकार नहीं है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

एक इस्लामी भक्त ने अपने अनुभव के उद्गारों को इस तरह से रखा है–

जो फिरते थे चिन्ता में अकड़े सभी से
अब आनन्दमय-आनन्दमय गाये जा रहे हैं।
न जाने नज़र थी या जादू था कोई
कि मुरझाए थे हम अब खिले जा रहे हैं।
फना ज़िन्दगी हो मुहब्बत में उनकी
मुहब्बत का जो पन्थ दर्शा रहे हैं।
मुहब्बत का दावा तो सबको है ऐ दिल
परन्तु ये उसकी हक़ीक़त को समझा रहे हैं।
फ़साना मुहब्बत का सुनकर उन्हीं से
सभी को सुनाए चले जा रहे हैं।
वह आनन्द तो मिलता है उनकी दया से
हम आनन्द हर हाल में पाये जा रहे हैं।
मेरे सिर पे अब हाथ अपना भी धरिये
जमाने में आनन्द तो बरसा रहे हैं।
गुलाम एक अज़मत भी है आप ही का
जिसे आप दम-दम में याद आ रहे हैं।
जो फिरते थे चिन्ता में अकड़े सभी से
यहाँ ॐ आनन्दमय गाये जा रहे हैं।

–ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

परम वन्दनीय पूज्य श्री गुरुदेव जी महाराज के पवित्र नाम की स्मृति के साथ हाथ जोड़कर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय। आश्रम की तरफ से यों तो मेरे पास पत्राचार होता रहता है लेकिन मैं एक अभागा व्यक्ति उन सभी पत्रों का कभी भी कोई उत्तर नहीं दे सका। यह नियति की एक विडम्बना ही है जो मेरे जैसे तुच्छ प्रार्थी को इलाहाबाद आश्रम में जाने का कोई विधान नहीं बन पाया। इसलिए मैं तो उस प्रभु से कई बार अश्रुपूर्ण आँसुओं से अपनी भावनाओं को न रोककर यही सोचता हूँ कि आप लोग तो इतने भाग्यशाली हैं कि इतने बढ़िया गुरु और श्री भगवत के सम्पर्क में होते हुए भी मेरे जैसे तुच्छ प्रार्थी का भी खयाल रखते हैं।

मेरा मानना है कि यह मेरे प्रारब्ध का ही कोई हिस्सा है जिससे कि मेरा प्रभु पिताजी से कोई सानिध्य नहीं हो रहा है और मैं एक तुच्छ होते हुए भी प्रभु पिता जी की कृपा का पात्र नहीं बन पाया और मैं सांसारिक बुराईयों में फँसता चला गया और आज भी सभी सांसारिक बुराइयों का शिकार हूँ।

लेकिन आज मैं प्रभु पिताजी से आत्मा से प्रार्थना करता हूँ कि मेरे को इन बुराइयों से निकाल कर प्रभु पिताजी पूर्ण रूप से अपनी शरण में ले लो ताकि यह बचा हुआ जीवन धन्य हो सके।

भगवन् आप तो सर्वे सर्वा हो, आप तो सब जानते हैं। अत: अब मैं कुछ नहीं कह सकता, इन्हीं शब्दों के साथ अपनी भावनाओं और वाणी को विराम देता हूँ।

ॐ शान्तिमय

–कर्ण सिंह पुत्र श्री सुल्तान सिंह
ग्रा.- पोपड़ा, असन्ध, जिला-करनाल, हरियाणा।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरु भगवान शरणम्

ॐ श्री सन्तोषी समतावान भक्तवत्सल श्री महापुरुष आनन्दमय भगवान के पावन श्री चरणों में बारम्बार प्रणाम।

श्री महापुरुष भगवान के अनुगत चलने से मेरे में जिन गुणों की वृद्धि हुई है तथा जो लाभ हुये हैं वह श्री भगवत् प्रेमियों के समक्ष रखने का प्रयत्न कर रही हूँ।

श्री आनन्दमय भगवान के ध्यान की विधि का ज्ञान हुआ और तद्नुसार अब मैं दैनिक परम् आनन्ददायक ध्यान का अभ्यास करती रहती हूँ। ध्यान करने के लिये श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ में 'मन की एकाग्रता' नामक लेख में १० स्वरूपों का वर्णन है परन्तु मेरे अपने विचार से धयन आनन्द सम्पन्न, समतावान, समाधिमग्न श्री महापुरुष भगवान का ही करना चाहिये जिनके संग, सेवा, प्रेम, ध्यान, आज्ञापालन से अपनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक छहों प्रकार की उन्नति हो तथा क्रोध, चिन्ता का नाश और कामनाओं का अन्त होता जाय। श्री भगवत् कृपा से जब मैंने अपने समाधिमग्न गुरु भगवान का ध्यान करना प्रारम्भ किया है तब से स्वरूप के विषय में कोई दुविधा नहीं रह गयी।

जब मेरा मन कामनाओं से रिक्त रहता है तब मैं अपने मन मन्दिर में श्री महापुरुष भगवान की मानसिक पूजा करने में समर्थ रहती हूँ और जब-जब कामनाओं ने मेरे चित्त को चंचल बनाया तब-तब श्री सत्यस्वरूप महापुरुष भगवान का श्री स्वरूप मन में स्थिर नहीं हो सका और श्री आनन्दमय प्रभु ने ध्यान से वंचित रखा। सच है कि सकामी हृदय में निष्कामी प्रभु भला कैसे विराजमान हो सकते हैं?

हर समय प्रत्येक कार्य करते हुए श्री भगवान के स्वरूप का स्मरण और योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप श्रद्धा-प्रेम पूर्वक शुद्ध मन और उत्तम भाव से चलता रहता है। मैं जप के साथ यह भावना भी रखती हूँ कि मैं आनन्दमय हूँ दु:खमय नहीं हूँ।

श्री महापुरुष भगवान के आदेशानुसार श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ के पृष्ठ १३ से १६ पर लिखे सात नियमों का पालन करने में प्रयत्नशील हूँ। इस मार्ग पर चलने से मुझे जो लाभ होता है उसे अन्य प्रेमियों को जानने से मुझे दुगुना लाभ होता है।

मैं राजसी, तामसी मनुष्यों से वैराग्य करने की चेष्टा करती हूँ। मुझे उनके ज्ञान को धारण नहीं करना है और न ही उनके आचरणों का अनुकरण ही करना है। मेरा हृदय शुद्ध व प्राणीमात्र का हित करने वाला हो, ऐसी प्रार्थना श्री भगवान से करती हूँ तथा प्रयत्न करती हूँ कि किसी प्रकार का छल-कपट हृदय में न आने पायें। मैं चेष्टा करती हूँ कि मेरे जीवन में सात्त्विक प्रेमियों का समागम हो, मैं सात्त्विक सेवा करूँ, मेरा भोजन सात्त्विक हो तथा मैं सात्त्विक बनने और बनाने में प्रयत्नशील हूँ।

श्री आनन्दमय भगवान की मर्यादाओं व आदेशों का जितना पालन करती हूँ उतनी ही श्री प्रभु ध्यान में वृद्धि करते हैं। इसके विपरीत श्री विश्वपिता आनन्दमय भगवान की मर्यादा भंग करने से श्री न्यायकारी दण्ड दायक प्रभु चिन्ता-क्रोध रूपी कारागार प्रदान करते हैं। इस अटल सिद्धान्त का अनुभव मुझे पग-पग पर होता रहता है।

यदि हम सब प्रेमी मिलकर श्री महापुरुष भगवान के ज्ञान को धारण करने में प्रयत्नशील हो जायें तो हमारा जीवन कितना सुखी, सर्वगुण सम्पन्न व आनन्दयुक्त हो जायें। **—ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन, जीवन को कसौटी पर परखने से यह सच निकलकर आता है कि 'काम अधिक और जीवन कम है'। कर्म करते हुए पता नहीं चलता कि जीवन कब खतम हो गया, इसलिये जितना हो सके स्वयं को सुधारकर समाज के अच्छे कर्मों का भागीदार होना चाहिये। पछतावे की स्थिति न आने दिया जाये, हमें महापुरुषों की दिव्यवाणी को सार्थक बनाने में प्रयत्नशील रहना चाहिए।

मनष्य को ईश्वरीय और प्राकृतिक संसाधन प्राप्त है जिसका उपयोग आवश्यकतानुसार कर जीवन के सह-अस्तित्व को बनाये रखा जा सकता है। कष्ट की बात है मनुष्य भौतिक भोगों में अनुरक्त होकर प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन कर जीवन को सीमित करता जा रहा है। लोभ, लालच के कुचक्र में फँसने के कारण अध्यात्मिक जगत में जो गिरावट आयी है वह चिंतन और मनन का विषय है जिसे श्री विश्वशान्ति आश्रम में श्रद्धालु भक्तों द्वारा सीखा जा सकता है, ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग के माध्यम से जीवन के सही मायने सीखा कर विश्वशान्ति आश्रम वर्षों से अपने अस्तित्व को बनाये रखा है। यहाँ सत्संग में अध्ययन करायी जाने वाली श्री मद्भागवद्गीता ग्रन्थ आज विश्व में सबसे ज्यादा बिकने वाली धार्मिक पुस्तक है जिसमें लिखे श्लोकों की व्याख्या करने तथा समझने के लिए नये-नये अनुसंधान केन्द्र स्थापित हो रहे हैं।

परन्तु यह हर्ष का विषय है कि श्री गीता ग्रन्थ को समझने के लिए श्री गीता के प्रत्येक दृष्टकोण से परखने और समझने वाले ध्यानमग्न महात्मा ॐ श्री विधानाचार्य भगवान श्री आनन्दयोगी जी महराज के मुखार विन्दु से उद्घृत श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ श्री गीता को समझने में सुगमता प्रदान करता है, जिसका लाभ आश्रम से जुड़ने वाला प्रत्येक भक्त ले रहा है।

भगवन, मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं जन संचार से परास्नातक द्वितीय वर्ष का छात्र हूँ। हमारे पाठ्य पुस्तकों में आज जो सम्पूर्ण शान्ति और विकास के तमाम नये मॉडल पढ़ाये जा रहे हैं वो सब चीजें पहले से ही विश्वशान्ति ग्रन्थों में ही समाहित हैं।

और अन्ततः विगत वर्षों में हम सब भक्तों को अनाथ छोड़कर परमंधाम सिधार गये श्री डॉ॰ साहब जिनके आशीर्वाद से यह बातें लिखने कि हिम्मत जुटाई है, उनके चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। साथ ही साथ विश्वशान्ति और भगवान के विधानों के प्रखर प्रचारक रहे सन्त, रिम्शनदेव जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ। ॐ शान्तिमय

॰आपका सेवक छात्र– अजय प्रकाश

स्मृति रहे! जो मनुष्य अपना स्वार्थ सिद्ध करने के उद्देश्य से अर्थात् अपनी इच्छा को पूर्ण करने की कामना से इस ब्रह्म-सृष्टि में किसी के साथ वैर-द्वेष करता है, वह वैर-द्वेष ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के साथ किया जाता है, यह ब्रह्म-विधान है। दण्ड-दायक विधान धारा श्री गीता अध्याय १६ श्लोक १८-१९ में प्रकाशित है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः
ॐ श्री सतगुरु देवाय नमः

नवीन बच्चों के अन्तःकरण में श्रद्धा, प्रेम और विश्वास बढ़ाने के लिए भगवान का चमत्कार।

सर्वप्रथम श्री प्रभु पिता परमेश्वर, महापुरुष देव, के पावन चरणों में मेरा चरण-स्पर्श एवं सभी प्रेमी भक्तों को हाथ जोड़कर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय।

भगवन, मैं सॉयकाल के समय प्रतिदिन बड़े ही प्रेमपूर्वक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय गुरुदेव जी की पूजा करता हूँ जिससे मेरा मन शान्त और प्रसन्न रहता है। गुरुदेव जी की मुझ पर बड़ी कृपा है। एक दिन सॉयकाल में मैं प्रभु पिता परमेश्वर की पूजा अर्चना कर रहा था एवं बड़े ही प्रेम भाव से आरती कर रहा था और प्रभु को एक टक दर्शन किये जा रहा था। मेरे कमरे में प्रभु पिता जी का बड़ा विग्रह लगा हुआ है। जिसमें प्रभु पिताजी की आँखें बन्द हैं। प्रभु ध्यान में बैठे हैं। दर्शन करते-करते, आरती चल रही थी, तभी अचानक कुछ धुन्ध-सी होने लगी मुझे प्रभु के विग्रह में कुछ धुँधला दिखायी देने लगा, मुझे भी समझ नहीं आया कि यह क्या हो रहा है तभी अचानक से प्रभु ने अपनी आँखें खोली और मुझे देखा और मैंने भी प्रभु जी को स्पष्ट रूप से देखा और उनके पीछे एक चक्र की तरह चल रहा था, तभी मैंने प्रभु जी को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और धन्यवाद दिया, हे प्रभु, कि आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे इस काबिल समझा। उस दिन प्रथम बार मुझे प्रभु के दर्शन हुये। ऐसा केवल ३-४ सेकेण्ड के लिये हुआ, मैने बाद में भी कोशिश किया परन्तु फिर कुछ नहीं हुआ। ३-४ सेकेण्ड के बाद फिर पहले जैसा हो गया। मतलब धुँध नहीं था, बिग्रह के स्पष्ट दर्शन हो रहे थे।

प्रभु पिताजी के दर्शन के बाद मेरा मन प्रसन्न हो गया, मैं इतना खुश था कि मानों मेरा जीवन सफल हो गया हो, मेरे हृदय में हलचल हो गयी, आनन्द ही आनन्द हो गया था। मेरा हृदय आनन्द से परिपूर्ण हो गया था। मैंने बाद में भी कोशिश किया कि शायद एक बार दर्शन और हो जाये, मैं काफी समय तक बैठा रहा लेकिन फिर ऐसा कुछ नहीं हुआ, मैं इतने में ही काफी खुश था।

–आपका सेवक
सौरभ कुमार पुत्र श्री विजेन्द्र सिंह
ग्रा. आसपुरनवादा पो. धौकलपुर, जिला-बिजनौर।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'
जीवन का एक उजाला है।
गर सार समझ में आ जाये
तो जीवन का अमृत प्याला है।
सदियों की यही कहानी है
जो ध्यान किया वह ज्ञानी है।
–बस ध्यान करो इस शक्ति का, न ही तिलक, न ही हाथ में माला है।

–श्री नरायण यादव, बलिया, उ०प्र०

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन् मुझे सं. ५१ से श्री महापुरुष भगवान का दुर्लभ संग प्राप्त हुआ था परन्तु समीप में रहने का २४घण्टे का भी समय नहीं प्राप्त हुआ, हाँ थोड़ा बहुत ज्ञान, ग्रन्थ प्रचार द्वारा कभी-कभी कुछ समय प्राप्त हो जाता था। ध्यान करने का भी शुभ अवसर प्राप्त होता रहा।

जब मुझे श्री गुरुदेव के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उस समय मेरी उम्र १८ वर्ष की थी इस समय उम्र ७८ साल पार कर रही है। इस बीच हमें सात शिक्षक गुरुओं का संयोग प्राप्त हुआ–

१- प्रथम गुरु इस शरीर के साथी थे जिन्होंने अपनी नित्य प्रतिकूलता के साथ ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी में दृढ़ आस्था प्रदान की।

२- दूसरे गुरु इस शरीर के दामाद थे, जिन्होंने अनगिनत प्रतिकूलताओं को देकर प्रभु पिता जी में अगाढ़ विश्वास और सच्ची प्रेम भक्ति प्रदान की।

३- तीसरे गुरु ने इस शरीर को इतनी प्रतिकूलतायें दी, जो असहनीय थी। इससे ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी में नित्य स्थिरता का ज्ञान प्रदान किया।

४- चौथा गुरु था- स्वेच्छा। इससे तो ऐसी विषम स्थिति हो गई कि संसार सागर से इज्जत नाम का और कानून से भय निकाल दिया और यह सीख दी ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जो कर रहे हैं वे मेरे हित में है। वह गलत हो ही नहीं सकता।

५- पाँचवें गुरु ने यह अपनी प्रतिकूलताओं से सबक सिखाया कि किसी के जन्म-मरण में उपस्थित होना स्त्रियों का कार्य नहीं।

६- छठवें गुरु ने यह शिक्षा दी कि संसार में तुम्हारा कुछ नहीं है, कहीं भी किसी अवस्था में। रोटी भी तुम हमारी कृपा से खाती हो।

७- सातवें शिक्षक ने हमें महाघोर प्रतिकूलता में यह अनुभव हुआ कि मैं हर क्षण ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के प्रेम-दया पर निर्भर हो गई। विश्वास करें, अब श्री सच्ची प्रेम भक्ति में रत रहते हुये समत्व योग का पाठ करने की कोशिश कर रही हूँ।

श्री सच्ची प्रेम भक्ति के आठवें मंत्र के आदेशानुसार भाव बनाने से, प्रतिज्ञा के सूत्रों को पालन करने में उत्साह बना रहता है। भगवान ने हर साँस, हर नज़र तक हमारे साथ हैं। अन्त में यहीं कहना चाहूँगी ॐ आनन्दमय अनुरागियों से कि प्रत्येक प्रतिकूलताओं को ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का भेजा हुआ पुरस्कार मानकर श्री सच्ची प्रेम भक्ति के आदेश और प्रतिज्ञा के अनुसार अपने को प्रभु पिताजी के स्वरूप में स्थित करें। शीघ्र ही आनन्द और शान्ति की प्राप्ति होगी, ऐसा मेरा अनुभव है।

–चन्द्रावती, शान्तिनगर, मीरारोड, मुम्बई।

जो मनुष्य ध्यानयोग-सेवायोग जनित आत्मिक अमृत का त्याग कर प्रेमी-पदार्थों के संयोग से अपनी इन्द्रियों द्वारा पशुओं के सदृश राजसी प्रेम करते हैं उन मनुष्यों के हृदय में सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी कामाग्नि प्रज्ज्वलित करते रहते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरष देवाय नमः

प्रिय आत्मन, हर किसी के मन में हर समय कई प्रकार के विचार उठते रहते हैं। जब भी हम कोई काम करते हैं तो हमारे मन में दो प्रकार के विचार आते हैं– सकारात्मक और नकारात्मक। जैसे हम कहीं जा रहे हैं, हमें जल्दी पहुँचना है, तो हम बस से, रेल से या हवाई जहाज से जाते हैं। हम आराम से जा रहे हैं तभी मन में विचार उठता है- कहीं बस का दुर्घटना न हो जाए, रेल पटरी से उतर न जाए, हवाई जहाज क्रैश न हो जाए, हमारा मन घबरा जाता है, हम दुविधा में आ जाते हैं।

उस समय मन से जोर से कहो ''स्टॉप'' ऐसा मत सोचो, कुछ नहीं होगा, सब ठीक होगा। हमारा बच्चा या कोई प्रियजन घर से बाहर या स्कूल जाता है, तो यदि उसे देर हो गई तो हमारे मन में कभी भी यह विचार नहीं आता कि कहीं काम पड़ गया होगा, कहीं चले गये होंगे। नहीं, झट से पहला विचार यही आता है कि कुछ न कुछ हो गया है। तभी मन को फटकार लगाओ- ''स्टॉप''। नकारात्मक मत सोचो, 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' जपो। देखोगे कि मन शान्त हो जायेगा।

ऐसे ही हमें सुबह ७:३० बजे सत्संग में जाना है। हम उठ रहे हैं। तभी शैतान मन में झट से विचार आया अरे! इतनी ठण्ड में ७:३० बजे सत्संग में! रहने दो न, क्या करना है जाकर, अभी सोना है। कभी हम मन का कहना मान भी जाते हैं। मगर ऐसा नहीं करना है, हमें मन को अपने वश में रखना है और नियमित सत्संग में जाना है। किसी भी कार्यों में यदि आप आलस्य करेंगे तो निश्चय ही वह कार्य अच्छे ढंग से समय पर नहीं हो पायेगा। हमें अपने निद्रा, आलस्य और गलत आदतों को धीरे-धीरे त्यागना होगा तभी हम एक सच्चे इंसान और परमपिता के प्रिय भक्त बन सकेंगे। ॐ शान्तिमय

–सन्तोष अरोड़ा, दिल्ली

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री गुरु भगवान शरणम्

मैं कुछ अनुभव आपकी सेवा में अपर्ण कर रहा हूँ। मैं एक बार ट्रेन से इलाहाबाद से परीक्षा देकर वापस जा रहा था। ट्रेन में श्री विश्वशान्ति आश्रम के प्रेमी अरविन्द भगवन से मुलाकात हुई। मैं निराश था, उन्होंने मेरी असफलता के बारे में पूछा और मुझे 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र के बारे में बताया और श्री विश्वशान्ति आश्रम में आने को कहा। जब मैं आश्रम में यहाँ आया तो मुझे बहुत शान्ति मिली। इस सत्संग के ज्ञान का अनुशरण किया तो मुझे बहुत लाभ मिला। मैं अब सुबह-शाम श्री विश्वशान्ति नामक ग्रन्थ को पढ़ता हूँ। जब-जब श्री विश्वशान्ति का सत्संग होता है मैं वहाँ जाता हूँ और सत्संग का ज्ञान श्रवण करता हूँ। मैं बहुत खुश हूँ, मेरा पढ़ायी में मन लगने लगा है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र के जपने से और सत्संग में आने से मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मेरे कल्याण का समय नजदीक आ चुका है। प्रभु कृपा से मैं लगन और मेहनत से अपना काम करता हूँ ऐसे दिव्य आश्रम के वातावरण में आकर बस भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु पिता जी हर समय मुझे अपनी शक्ति प्रदान करते रहें, क्योंकि प्रभु की कृपा से ही सब कुछ सम्भव है मैंने अपने जीवनकाल में इतनी शान्ति यही पर आकर महसूस किया। मैं सदा सर्वदा सत्संग में आता रहूँगा और अपने जीवन को आनन्दमय शान्तिमय बनाकर सबकी सेवा करूँगा। **ॐ शान्तिमय।**

–सेवक- सुनली यादव

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री ध्यानाचार्य देव शरणम्

दिनांक ०१-०६-११ से ०५-०६-११ तक श्री विश्वशान्ति आश्रम की ओर से सुन्दरपुर नवादा (बिजनौर) गाँव में आयोजित सत्संग बड़ा ही प्रेरणादायक, प्रभु पिता जी के विधान में श्रद्धा व प्रेम वर्द्धक एवं आनन्द शान्ति देने वाला महसूस हुआ जिसके प्रभाव का वर्णन शब्दों में करना मेरे लिए सम्भव नहीं है। वास्तव में यह अनुभव का ही विषय है।

सत्संग का आयोजन व व्यवस्था के दिव्य-दर्शन के साथ-साथ शोभा अति भव्य थी। सत्संग के पश्चात पुराने व नये श्रेष्ठ साधकों और पूज्य आनन्द किरण जी भगवन, राजाराम जी व ॐ आनन्दमय अनुरागियों के हृदय स्पर्शी अनुभव सुनने का भी सुन्दर सुअवसर प्राप्त हुआ। जिससे अपने हृदय के अनुभवों को और भी बल मिला। देखते-देखते सत्संग समाप्ति का दिन आ गया, ऐसा लगा कि समय बहुत जल्दी बीत गया। स्पष्ट हो गया कि वास्तव में सुख के दिन जल्दी बीत जाते हैं और दु:ख के दिन कटने में बहुत पीड़ा महसूस होती है। जबकि समय समान गति से आगे चलता है।

हमारी इच्छा थी कि आप सब भी सुख शान्ति व आनन्द का लाभ उठाएँ। जैसे कि आप सब देख रहे हैं कि पूरे देश में भ्रष्टाचार, दुर्गुण, दुराचार का ताण्डव हो रहा है। अगर हर देशवासी, बालक, वृद्ध, युवा, नर, नारी सब अपने हृदय में सद्गुण, सदाचार को धारण कर लें और दुर्गुण, दुराचारों को त्याग दें तो भ्रष्टाचार व समस्त बुराइयाँ स्वत: ही समाप्त हो जायें।

और यह सब सम्भव तब होगा जब हम सब 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र को हर समय मन से मनन जपने का अभ्यास करेंगे और श्री विश्वशान्ति आश्रम के प्रकाशित ग्रन्थों का पठन करें और उनमें प्रकाशित ज्ञान के बताए रास्ते पर चलने का प्रयास करेंगे तो खुद अपने हृदय को आनन्द-शान्ति का अनुभव होगा।

–गोविन्द सिंह (छात्र)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नम:

भगवन् जी,

मैं बी.काम (प्रथम वर्ष) की छात्रा हूँ। ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी की कृपा से बचपन से उन्होंने मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखी परन्तु उसे समझने की बुद्धि श्री प्रभु पिताजी ने मुझे पिछले एक-दो वर्षों में प्रदान की। पहले मेरा मन कभी-कभी अत्यन्त विचलित हो जाता था जिस कारण न तो मेरा मन प्रभु पिताजी की सेवा-पूजा में लगता था और न पढ़ाई आदि किसी भौतिक कार्य में लगता था। मुझमें इतना अधिक क्रोध था जिस कारण मैं कुछ सहन ही नहीं कर पाती थी। वैसे तो अभी भी क्रोध है मुझमें परन्तु भगवान जी से प्रार्थना है कि उसे शान्त करें।

मैं पिछले दो वर्षों से लगातार श्री विश्वशान्ति आश्रम, इलाहाबाद आ रही हूँ। परन्तु यहाँ पर मुझे जो मन में अद्भुत शान्ति का अनुभव हुआ है उसका केवल अनुभव ही किया जा सकता है। मैंने ध्यान से 'प्रचार' जिसका अनुभव इस वर्ष होने वाले माघ मेले में मैंने किया उससे मुझे इतनी प्रसन्नता प्राप्त हुई जिसकी व्याख्या मैं कर नहीं सकती।

जब कभी मेरा मन अशान्त होता है तो मन ही मन मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का स्मरण करती हूँ जिससे मन को धीरे-धीरे शान्ति प्राप्त होती है। मेरी प्रभु पिताजी से प्रार्थना है कि सदैव मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें और अपनी सेवा का अवसर प्रदान करते रहें।

ॐ शान्तिमय

–ऋतु, मुम्बई

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

निष्काम भक्ति और सकाम भक्ति के पद-प्रभाव का ज्ञान

गऊ के थन में दूध तब निकलता है, जब बच्चा थन को मुँह में रख कर चूसता है। बच्चा उस समय माँ के आश्रित रहता है, इसी प्रकार परम प्रेमी श्रद्धालु भक्त एक मात्र ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के आश्रित होकर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम का जप करता है, श्री सच्ची प्रेम भक्ति का पाठ करता है, श्री मानसिक-चिकित्सा और ब्रह्म-ज्ञान के सूत्रों को एवं श्री गुण-विद्या के विद्यार्थी का ज्ञान आदि का स्वध्याय मनन-चिन्तन करता है। तब ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की कृपा से उसके हृदय में छिपा हुआ मंगलमय तत्त्व-रहस्य के ज्ञान का अनुभव होने लगता है फिर श्रद्धावान भक्त मंगलमय विधानों के रहस्य का ज्ञाता होकर सदा के लिए निर्भय, निश्चिन्त, स्थिर हो जाता है, उस समय उसके दिमाग में चारो दिशाओं में प्रज्ज्वलित हो रहे राग-द्वेष, कलह-क्लेश, अहंता-ममता, भोग-कामनाओं रूपी ताप का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

हाँ, जब राग-द्वेष, कलह-क्लेश, अहंता-ममता, कामना से समस्त धर्म-कर्म किये जाते हैं, तब ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम के जप का, श्री सच्ची प्रेम भक्ति के पाठ का कोई प्रभाव नहीं रहता, फिर वह कलह-भक्ति करने में तन-धन, जन-मन, बुद्धि, समय-शक्ति सब कुछ लगा देता है। इस प्रकार विपरीत भावों से किये जाने वाले कर्मों से दिमागी-कोश में कलह-क्लेश, राग-द्वेष के ताप से श्रेष्ठ बुद्धि सहित हितकारी मनन-विचार भस्म हो जाते हैं एवं दीर्घ-काल तक किये जाने वाले शिथिल साधन के अभ्यास का नाम निशान मिट जाता है।

श्री सच्ची प्रेम-भक्ति का प्रभाव तो निष्कामी भक्त पर ही पड़ता है। सकामी पर तो श्री सच्ची-प्रेम-भक्ति का प्रभाव वर्षो-वर्षो तक भी नहीं पड़ता।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ में मानसिक रोगों का कारण ज्ञान-लेख में दिमागी रोगों के मुख्य चिकित्सक देव जी ने कथन किया है कि आसुरी प्रेम, द्वेष, ममता और अहंकार की रक्षा वृद्धि के उद्देश्य से कर्म करने से दूसरों के अधिकारों की हिंसा होती है। हिंसा-युक्त कर्मो के दण्ड स्वरूप मानसिक रोगों की और बौद्धिक रोगों की वृद्धि होते रहने का विधान है।

जो मानसिक रोगी हो जाते हैं, उनके अनुकूल संग-सेवा करने वाला भी मानसिक रोगी हो जाता है, वह स्वयं तो अनाधिकार के लिये बल-पूर्वक कर्म करने में प्रवृत्त होता है, साथ ही साथ आनन्दमय भक्ति के मार्ग पर चल रहे, भक्तों को भी लोभ-भय, राग-द्वेष के भावों से बलपूर्वक प्रवृत्ति कराकर उनको भी सत्य-पथ से विचलित कर देते हैं। इस विषय का पूर्ण-ज्ञान मानसिक रोगों के कारण नामक ज्ञान को पठन करने से होगा।

दिमागी रोगों से पीड़ित स्वार्थमय कर्मों की लोभी रागी-द्वेषी मन्थरा के कुविचारों का प्रभाव माता कैकेई पर पड़ा। भगवान राम ने राज-त्याग कर १४ वर्ष वनवास जाने की प्रेम प्रसन्नतापूर्वक तैयारी कर ली, श्री भरत जी पर अहंता, ममता, रागी-द्वेषी माता की भावना का कोई प्रभाव नहीं पड़ा एवं भगवान में और अटूट श्रद्धा-प्रेम-विश्वास स्थिर हो गया। श्री भरत जी ने १४ वर्ष तक कठिन साधना के बल पर निष्काम भावों की अटूट श्री सच्ची प्रेम भक्ति की प्रतिष्ठा की। लोभ-भय में आकर अपनी सच्ची प्रेम भक्ति को कलङ्कित नहीं किया। यह है सच्चे निष्कामी भक्तों के लक्षण। शेष तो स्वयं भक्ति को कलङ्कित करते हैं और दूसरों को भी रागी-द्वेषी बनाकर दण्ड के भागी बनाते रहते हैं। इसलिये श्री दादा गुरुदेव की वाणी है कि जो भगवान के मार्ग में विघ्न-बाधा पहुँचाने वाले हैं वह मित्र नहीं हैं। वह तो शत्रु हैं। ऐसों से तो वैराग्य कर दे, उनको तो सम्पूर्ण ज्ञानों में (६ प्रकार का ज्ञान) मोहित, भगवत ज्ञान से शून्य एवं कल्याण मार्ग

से नष्ट-भ्रष्ट हुये ही समझना चाहिये। श्री गीता अ० ३ श्लोक ३२ उच्चारण किया जायेगा अत: श्री गीता जी अपने कर कमलों में धारण करने की कृपा करें।

अत: सभी परिस्थितियों में वैराग्य करने का भगवत आदेश है, राग-द्वेष करने का नहीं, इस विषय में सभी साधकों-भक्तों को विशेष रूप से सतर्क रहने की आवश्यकता है।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ के मानसिक चिकित्सा के ज्ञान में ५४ वाँ सूत्र है– हे श्री शान्तिमय प्रभो! मैं वैराग्य भावमय हूँ राग-द्वेष भावमय नहीं, अर्थात् राग-द्वेष का सर्वथा निषेध किया है क्योंकि जहाँ राग है वहाँ द्वेष होगा ही, अर्थात् राग की सिद्धि में मन की अनुकूलता, इन्द्रियों की अनुकूलता नहीं होगी, तो वहाँ दोष-दर्शन होगा, दोष दर्शन करते-करते फिर कथन होने लगेगा। क्रम-क्रम से इस प्रकार बढ़ते-बढ़ते द्वेष और क्रोध की अग्नि प्रज्ज्वलित हो जायेगी, परिणाम अ० २/६२-६३ हितकारी बुद्धि का नाश और मानव जीवन का सर्वनाश हो जाता है।

इसलिये दयामय प्रभु पिता जी ने विशेष सावधान किया कि वैराग्य कर दे परन्तु द्वेष न करें। श्री गीता अ० ३ श्लोक ३४, ४३ तक वैराग्य के श्रेष्ठ ज्ञान को कथन किया। श्लोक ३४ उच्चारण किया जायेगा।

ॐ शान्तिमय

वाक् हिलाने से व हाथ-पैर हिलाने से कोई किसी को प्रसन्न नहीं कर सकता, प्रसन्न तो गुणों से ही कर सकता है। वक्ता गुणवान हो और श्रोता गुण उपासक हो तो वह वक्ता अरबों मनुष्यों को प्रसन्न कर सकता है।

* * *

जल बिना जीवन नहीं और
ध्यान अमृत के बिना मानवता नहीं।

* * *

पाषाण की नौका, शठ खेवटिया,
नेत्रहीन सवार, किस विधि उतरे पार।

* * *

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अनुभव कोश का कुछ अंश

बहुमूल्य जीवन का समय, थोड़ा शेष रहा है। मनन-विचारों की, तारतम्यता की सीमा नज़र नहीं आ रही है । फिर क्या रुकना है, नहीं जाम में, मारे जायेंगे इसलिये जाम से निकलने के लिये आगे बढ़ना तो है, लेकिन कुछ सहारा तो लेना ही पड़ेगा ।

सहारा– श्री दयामय प्रभु पिता ने श्री मानसिक चिकित्सा के ज्ञान में १२५ सहारे दिये हैं। उन सहारों में से एक सहारे को लेकर माया के जाम से छूट जाने का, निश्चय है ।

वह सहारा है – हे श्री शान्तिमय प्रभो! मैं श्री महापुरुष द्वादश भक्ति भावमय हूँ, गुरु-द्रोह भावमय नहीं !

जिस दिन इस सहारे का तत्त्व-ठीक से समझ में आ जायेगा, उस दिन इस ठगनी माया के ऊपर अपने आप को चढ़ा पायेंगे। अभी माया हमारे ऊपर है । अभी गुरु-द्रोह की लाइन पर मन का पहिया चल रहा है ! हाँ विषय गम्भीर है और हम अपने आपको गुरु-द्रोह से मुक्त समझ रहे हैं। परन्तु अभी द्वादश भक्ति की नकली फिसलन में फिसल रहे हैं और अंग-भंग हो रहे हैं।

द्वादश भक्ति क्या है इसका स्वरूप मानसिक रोगों के कारण का ज्ञान में पृष्ठ सं. ४० पर बताया गया है। श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ पृष्ठ सं. ४० पर देखना चाहिये।

इसमें द्वादश भक्ति का प्रथम ही सूत्र है कि मानसिक रोगियों का संग, जब कि आनन्द किर्तन भाग-१ पृष्ठ सं.-२३ भजन से ३० में हम दूसरों को कहते हैं, समझाते हैं, वायदा करते हैं कि संग उनका ही करूँगा डर है जिन्हें तुम्हारा ! अब विचार करना चाहिये कि आज प्रभु पिता जी का डर किसको है? रामायण, भागवत, महाभारत, वेद-वेदान्तों के श्रोता और वक्ता मठ, मन्दिरों के निर्माता आश्रम पद गद्दी के स्वामी, तीर्थों में भ्रमण करता, यज्ञ, दान, तप के अनुष्ठान कर्त्ता, घर परिवार में पूजा भक्ति व्रत कर्त्ता किसको डर है। सभी अपने पद अधिकार के अनुसार झूठ, कपट, चोरी, रिश्वत, राग-द्वेष, चिन्ता-नाराजगी, क्रोध-वैर आदि कर्मों से लिप्त है इसलिये तत्त्व के निर्माता श्री विधानाचार्य भगवान ने हजारों-हजारों वर्षों पूर्व श्री गीता अ० ७ के श्लोक २७ में कथन कर दिया था कि–

हे प्रेमियों ! संसार में इच्छा और द्वेष से उत्पन्न सुख-दुःखादि द्वन्दरूप मोह से सम्पूर्ण प्राणी अत्यन्त अज्ञता को प्राप्त हो रहे हैं।

अभी तो मानसिक रोगियों का संग करना, यह गुरु-द्रोह-भाव का प्रथम सूत्र है – अभी तो 11 सूत्र और हैं जो गुरु-द्रोह के हैं। इसके बाद पाठ पक्का होगा कि मैं श्री महापुरुष द्वादश भक्ति भाव-मय हूँ। अस्तु पुनः प्रभु पिता जी की प्रेरणा-शक्ति से अनुभव कोश से-

–ॐ शान्तिमय

आश्रम का प्रचार-वाहन

यह वाहन देश के लगभग सभी राज्यों में जाकर आश्रम के सेवकों के माध्यम से, पूरे बारहो माह निरन्तर आश्रम के ग्रन्थों का प्रचार करता रहता है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ब्रह्म-वेत्ता, तत्त्वज्ञानी महापुरुषों का निर्णय।
त्याग-वैराग्य के बिना किसी साधन की सिद्धि नहीं हो सकती ।
क्योंकि श्री गीता कहती है– अ० २ श्लोक ६२ में.....

ध्यायतो विषयान्पुंसः – यह करना अपराध है, अर्थात पाप है, फिर सङ्ग स्तेषूपजायते : क्या हुआ बाँधा गया – जैसे बँधा हुआ पदार्थ हो या प्राणी हो जहाँ बँधा है वही उसी परिस्थिति में सुख दु:ख को भोगना पड़ता है। पुन: आगे की स्थिति का वर्णन करते हुए श्लोक ६३ में कथन किया कि– मूढ़भाव स्मृति में अर्थात् याद्दाश्त में भ्रम, ज्ञान-शक्ति का नाश और बुद्धि के नाश हो जाने से मानव की मनुष्यता का नाश हो जाता है।

इसलिये हर समय भगवत-आदेश के अनुसार त्याग-वैराग्य का नशा चढ़ा रहे। तभी जन्म-मृत्यु दायक दु:खों के समूह को, माया-मय संसार के चक्र को समाप्त किया जा सकता है अन्यथा दुरत्या माया दु:खी, अशान्त, परेशान करती रहेगी। अत:

बोलो कम, बहुत सुनने की आदत कम, समझो ज्यादा, मनन-विचार और ज़्यादा, परन्तु धारण करने की आदत पूर्ण। साधारण त्यागी-वैरागी की तो बात क्या निर्जन जङ्गलों में निवास करने वाले भगवान राम के पास भी माया पहुँच जाती है। अर्थात् सूपनखा भगवान के पास पहुँच कर अपने हाव-भाव, राग-रागनी का प्रभाव छोड़ती है। बहुत प्रकार की चेष्टा करने पर भी सब निष्फल, तब भगवान ने संकेत, सीता की तरफ करके, कि मैं तो विवाहित हूँ और श्री लक्ष्मण की तरफ संकेत कर दिया। वह जानते थे- श्री लक्ष्मण जी इस सुन्दर-रूप मोहनी का इन्तजाम कर सदा के लिये सन्तुष्ट कर देगें ।

'माया' सूपनखा अब लक्ष्मण जी के पास पहुँचती है और बहुत प्रलोभन से, प्रेम से, राग-रागिनी से विचलित करने का प्रयत्न करती है। लक्ष्मण जी ने भी उसे बहुत प्रकार से समझाया, अन्त में और कोई उपाय न देखकर शीघ्रता से उसके नाक, कान काट दिये, मिनटों में उसके रूप रंग को अपनी त्याग-वैराग्य वृत्ति से कुरूप बना दिया । इसलिये

ॐ आनन्दमय परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा करने वालों को हर समय दुरत्या-माया की नाक-कान काटते ही रहना चाहिए। श्री गीता अ० २ श्लोक ५२-५३ में वैराग्य द्वारा बुद्धि के स्वच्छ, शुद्ध और निश्चल हो जाने पर ॐ आनन्दमय भगवान प्राप्ति होने का कथन किया है। पुन: ....

श्री गीता अ० ५ श्लोक २२ में बुद्धिमान उनको ही बताया गया है जो माया रूप विषयों में नहीं रमते एवं श्री गीता अ० १५ श्लोक ३ में तो एकदम इस माया रूप संसार का निर्मूल कर डालने का आदेश दिया। इस श्लोक में दुरत्या माया को संसार-वृक्ष से समझाया है। वृक्ष को काटने के शस्त्र की आवश्यकता पड़ती है। इसलिये अहंता-ममता-वासना रूप अति दृढ़ मूलों वाले संसार रूप पीपल के वृक्ष को वैराग्य रूपी-शस्त्र के द्वारा काट डालने का आदेश दिया है। इसके बाद ही आगे होने वाली साधना होगी । इसी को श्लोक ४ में समझा रहे हैं कि दुरत्या माया रूपी अहंता-ममता-वासना रूप दृढ़ मूलों वाले संसार रूपी पीपल के वृक्ष को दृढ़ वैराग्य रूपी-शस्त्र से काटकर- (दृढ़ वैराग्य - शमशानी वैराग्य काम नहीं करेगा।)

इसके पश्चात उस परम पद रूप ॐ आनन्दमय परमेश्वर को अच्छी प्रकार खोजना चाहिये, जिसमें गया

हुआ मानव फिर लौटकर संसार में नहीं आता और जिस परमेश्वर से इस पुरातन संसार वृक्ष की प्रवृत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है, उसी आदि पुरुष ॐ आनन्दमय भगवान के मैं शरण हूँ। इस प्रकार दृढ़ निश्चय करके उस आनन्दमय परमेश्वर का ही मनन और ध्यान करना चाहिए।

इस प्रकार भगवत् - विधान के आदेशानुसार साधन में प्रवृत्ति बनाये रखने से मार्ग बहुत ही सुगम, सरल हो जाता है ।

अन्यथा दुरत्या माया आती रहेगी, फुसलाती रहेगी, अपना मोहनी रूप, रंग दर्शाती रहेगी, मन को बहला देने वाला सुमिरण का आश्रय काम नहीं करेगा। मन में छुपी मालिक बनने वाली आस को, निकालने की शक्ति समाप्त कर देगी। फिर संग उनका ही करायेगी, जिनको प्रभु पिता जी का डर नहीं रहता एवं सेवा में मन नहीं लगने देगी। और हुक्म मानने की शक्ति भी समाप्त कर ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का दास न बना कर संसार के प्रेमी-पदार्थों का दास बना देगी है।

ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय **ॐ शान्तिमय**

दयनीय-दशा पर विचार

नारकीय दुःख देने वाले बैण्ड-बाजे वालों ने * अपनी मधुर मोहनी ध्वनि से * अनादि काल से * साधारण मानव-मण्डल की तो बात ही क्या * बड़ी-बड़ी हस्तियों को भी * नरकों की दुःख-दायक यंत्रणाओं में घुमाते आ रहे हैं।

इसलिए नारकीय दुःखों के ज्ञाता श्री योगेश्वर भगवान ने श्री गीता अ॰ 5 श्लोक 22 में सावधान किया कि– **''न तेषु रमते बुधः''**

जैसे मीठे पदार्थ अधिक मात्रा में सेवन करते रहने से मधुमेह (सूगर) की बिमारी हो जाती है * उस समय बल-दायक पौष्टिक तत्त्व बनना बन्द हो जाते हैं और शरीर दुर्बल कृश हो जाता है। इसी प्रकार विषयरूपी दर्शन, श्रवण, जन प्रेमी पदार्थों का बिना ज्ञान-पूर्वक अत्याधिक उपभोग किया जाता है * तब दिमागी रोग बढ़ जाते हैं * इसलिये परम् पद के दाता श्री विधानाचार्य भगवान ने श्री गीता अ॰ 15 के श्लोक 3 में संसार के दर्शन-श्रवण से पैदा होने वाली अहन्ता-ममता-कामनाओं के सुख को तीव्र-वैराग्य रूपी शस्त्र से काट डालने का आदेश दिया है।

ॐ श्री महापुरुष भगवान ने जब प्रत्यक्ष श्री ब्रह्मदर्शी तत्त्ववेत्ता श्री गुरुदेव भगवान का दर्शन किया * फिर तो गुरू कृपा शक्ति के प्रभाव से साधना से मन की समस्त शक्तियों को क्षीण कर * समस्त संकल्पों को त्याग कर * 'सर्वसंकल्प सन्यासी' पद को प्राप्त कर लिया और इस साधना के अभ्यास को प्रेमियों की सुविधा हेतु श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में प्रकाशित किया है। **शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अमृतमय शुद्ध ज्ञान से पूर्ण महासागर श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ के मानसिक चिकित्सा के सूत्र सं॰ ३४ परमनन-विचार।

दिमागी-रोग-दमनकारी

विधानों को श्रद्धा-प्रेम-विश्वास पूर्वक श्रवण, पठन करने के अनुरागी भक्त मण्डली के समक्ष आज के मङ्गलकारी शुभ-दिवस पर श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ में प्रकाशित मानसिक चिकित्सा नामक ज्ञान-लेख के ३४ वें सूत्र पर मनन-विचार किया जायेगा। गत सप्ताह में सूत्र संख्या ३३ पर मनन-विचार किया गया था।

मानसिक चिकित्सा के ज्ञान से सूत्र सं॰ ३४ उच्चारण किया जा रहा है।

हे श्री शान्तिमय प्रभो ! मैं भगवत आश्रय भावमय हूँ। व्यक्ति आश्रय भावमय नहीं।

हाँ, यह सूत्र केवल एक लाइन में आ गया है परन्तु मनन-विचारों द्वारा इसको लिखना प्रारम्भ किया जाये तो सम्भव है कई सौ लाइनें भी कम रह जायेंगी और इसका प्रभाव एवं शक्ति पर विचार किया जाये, तो उस समय विश्व की समस्त शक्ति वैसे ही निष्फल होकर आजीवन दु:ख-दायक पश्चाताप करायेगी, जैसे- बीजों के ऊपर आश्रित रहने वालों का जब बीजों का अंकुर होने वाला भाग निष्फल हो जाता है तब उससे होने वाले सब लाभ की आशा समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार एक व्यक्ति का आश्रय लेने की बात तो अलग रही। एक भगवत आश्रय का त्याग करने वाला और संसार की समस्त शक्ति का आश्रय लेने वाला चाहे देह बल का, रूप-सौन्दर्य बल का हो, धन सम्पत्ति का हो, बल-शक्ति यौवन का हो, पद-कुर्सी का हो, मठ-मन्दिर, आश्रम का हो एवं और भी जो हैं। फिर भी वह किसी स्थिति में किसी समय किसी परिस्थिति में भी अपनी सुरक्षा नहीं कर सकता अर्थात दिमागी रोगों के ताप से नहीं बचा सकता। श्री गीता अ॰ २ श्लोक ४९ !

अत: मंत्र शक्ति के अनुभवी प्रेमियों ! केवल मात्र एक भगवत-आश्रय ही ऐसी महान शक्ति के सम्पन्न है कि उसका आश्रय लेने के बाद फिर भौतिक जगत के समस्त आश्रयहीन जो जाते हैं। परन्तु ऐसा लेने वाला हजारों में कोई विरला ही होता है। श्री गीता॰ ७ श्लोक ३ !

जैसे– जब लंका नगरी में भरी सभा में श्री अंगद जी ने भगवान का आश्रय लेकर अपना पैर स्थिर कर लिया तब योद्धाओं से भरी सभा उनके पैर को हिला न सकी। सभी बलशाली योद्धा लज्जित हो गये और भगवत-आश्रय लेने वाला सदा-सम-शान्त प्रसन्न रहा। भगवत् आश्रित हुआ निरन्तर परमानन्द में ही मग्न रहता है और अन्त में दु:खालय स्वरूप जन्म-मरण से मुक्त हो परम-पद को प्राप्त हो जाता है। अ॰ २ श्लोक ५१ और भी हैं।

एवं व्यक्ति-आश्रय वाला मनुष्य जीवन भर दिमागी रोगों से पीड़ित रहता हुआ हर समय हर परिस्थिति में दु:खी अशान्त राग-द्वेष, कलह-क्लेश, चिन्ता, नाराज़गी के ताप से व्यथित परेशान रहता हुआ अन्त में पुन: आसुरी योनि मा पन्ना मूढ़ा जन्मनि-जन्मनि के चक्करों में चला जाता है। श्री गीता॰ अ॰ १६ श्लोक १९-२० !

विश्व में अरबों मनुष्यों की संख्या है, परन्तु उनमें मनुष्य कहलाने योग्य कितने हैं ! यद्यपि मानव का आकार तो प्राप्त हो गया है, श्री गीता अध्याय ५ श्लोक २३ में भगवान कहते हैं कि जो काम-क्रोध के वेग को सहन करने में समर्थ है अर्थात जिसने काम-क्रोध के वेग को जीत लिया है वह नर है अर्थात वही मनुष्य है, वही सुखी है और वही योगी है ! शेष पशु के समान ही हैं। क्योंकि मानव की क्रियाओं में और पशु में एक समान। इस घनघोर अबादी वाले मण्डल में कितने मानव को

ब्रह्मदर्शी महापुरुषों का संग प्राप्त हुआ कितने भगवत-आश्रय भावमय हैं और कितने व्यक्ति आश्रय भावमय हैं।

इसका प्रत्यक्ष-प्रमाण एक छोटे परिवार में ही मिल जायेगा। और निकट देखें तो अपने घर परिवार में मिल जायेगा। दस प्राणी एक परिवार में है तो आस्तिक बुद्धि से विचार करे, तो एक भी पूर्ण-रूप से भगवत-आश्रय-भाव वाला नहीं मिलेगा। सभी अहं के आश्रय भावमय में ही मिलेंगे ! कितना बड़ा भयंकर जाल है।

आजकल तो प्राय: मनुष्यों का जीवन पशुओं की भाँति व्यतीत हो रहा है। खाने-पीने में, भोगों को भोगने में, उनकी पूर्ती करने में, धन कमाने में, राग-द्वेष, ईर्ष्या-कलह करने-कराने में शयन आदि करने में एवं और अनेकों पाप कर्म करने-कराने में व्यतीत हो रहा है।

यह दुर्लभ अमूल्य जीवन केवल मात्र भगवत-आश्रय होने के लिये प्राप्त हुआ था। परन्तु मानव संसार का आश्रय लेकर इस बहुमूल्य जीवन का अत्यन्त दुरुपयोग कर रहा है। इस प्रकार का ज्ञान कराने वाले महापुरुष ही होते हैं जो प्रभु कृपा से मिलते हैं, श्री ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का एक ही भाव होता है। एक ही लगन होती है कि मानव जन्म पाकर फिर भगवत प्राप्ति से वंचित न रह जायें। उनकी लगन जीवन पर्यन्त मनुष्यों को इसी ओर आकर्षित कराने में लगी रहती है। **ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हम इस संसार में यात्री की तरह थोड़े समय के लिये आते हैं, संसार से जाते समय साथ में कुछ भी नहीं ले जा सकते परन्तु स्वभाव साथ जाता है। जैसा स्वभाव होता है वैसी ही गति मिलती है। स्वभाव शुद्ध होगा तो अच्छी गति मिलेगी। हम दूसरों का स्वभाव नहीं बदल सकते, परन्तु अपने स्वभाव का सुधार तो कर ही सकते हैं। स्वयं का स्वभाव बिगड़ता है तो स्वयं को भी अशान्ति मिलती है।

—श्री गुण ज्ञान सागर से

दिमागी शान्ति और आत्मिक आनन्द-शक्तियुक्त श्री भगवद पद प्राप्त करने-योग्य मुख्य ज्ञान निम्नांकित है—

ध्यानयोग द्वारा मन की एकाग्रता का अभ्यास करना। वैदिक सनातन 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का जप करते हुये अपने इष्ट भगवान के स्वरूप को मन से स्मरण करने के अभ्यास से मानसिक शान्ति और आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होती है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं मालिक बनूँगा, तू नहीं, मैं मालिक बनूँगा,मैं मालिक हूँ।

यह नारा अज्ञानविमोहित कामनाओं से तपायमान दम्भी-दर्पी-कपटी भ्रष्टाचारियों का है, जो परमार्थ भाव से सर्वथा नष्ट हैं और यह नारा अनादि-काल से लहराता चला आ रहा है।

ब्रह्म-दर्शी, तत्त्ववेत्ता, ब्रह्मज्ञानियों का कथन है कि ब्रह्म-सृष्टि के निर्माता पालन-कर्त्ता एवं संहार-कर्त्ता सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय परमात्मा ही शासक, स्वामी और मालिक हैं।

भक्त प्रहलाद के समय अहं के नशे में चूर हिरणाकश्यप का नारा था मैं संसार का मालिक हूँ, मुझसे बड़ा कोई नहीं है। भगवान, परमात्मा कोई कुछ भी नहीं है। इस दम्भ-दर्प के अभिमान ने उस समय भगवान का नाम लेने वालों के मुँह बन्द करवा दिये। भक्त प्रहलाद को जो-जो यातनायें दी गई उसका आस्तिक समाज को ज्ञान है। हुआ क्या, मालिकपन के अहं ने शरीर की चीर-फाड़ करवा दी।

फिर मालिक-स्वामी के नशे में चूर कंस आया, जिसने जन्मते ही कई शिशुओं के, पत्थर पर पटक-पटक कर, प्राण हरण किये थे, शिशु कृष्ण के प्राण हरण करने के लिये पूरी-शक्ति लगा-रक्खी थी परन्तु अन्त में श्री कृष्ण ने उसके शरीर को चूर-चूर कर दिया।

मैं स्वामी, मालिक के अहं में उन्मत्त रहने वाले दशानन्द रावण ने अपनी अहं की पताका दशों-मुख से फहरा रक्खी थी परन्तु नारी प्रेम की आसक्ति ने दशानन्द का एक मुख भी नहीं छोड़ा, दशोमुख सहित सदा के लिये सुला दिया।

माता कैकेयी ने कुबुद्धि की बातों में आकर अपने बेटे को राजगद्दी का मालिक स्वामी बनाकर, राजमाता कहलाने वाले मैं की कलह-क्लेश मचा कर, अयोध्या नगरी में हा-हाकार मचा दी। परिणाम क्या हुआ पतिहीन 'विधवा' हो सदा के लिये कलह-क्लेश, शोक में मग्न हो गई।

द्वापर में सौ भाइयों में बड़ा श्रेष्ठ दम्भ मान के नशे में चूर, मालिक-स्वामी बनने वाला दुर्योधन जीवनपर्यन्त कलह-क्लेश के ताप से तपायमान रहता हुआ, अन्त में अपने अंग-भंग करवाकर मालिकपन ने सदा के लिये सुला दिया।

ऐसे ही स्वामी-मालिक बनने वालों के फहराने वाले झण्डे गिरते आये हैं। एक भी राजा, महाराजा, बादशाह आज तक स्वामी-मालिक बनने के अधिकार को नहीं प्राप्त कर सकें। शरीर सहित मैं मालिक की भस्म ही होती आयी है।

इस अधिकार पर तो सदा सुशोभित ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी ही हैं। और वही आदि-मध्य-अन्त में रहेंगे।

वर्तमान में देश, समाज, परिवार में दिन-रात मैं मालिक तू नहीं मैं की प्रचण्ड ज्वाला भभकती रहती है और इसी मैं मानव मण्डल का देह, दिमाग नष्ट-भ्रष्ट होता रहता है। परन्तु आज तक 'मैं' मालिक की सिद्धि को कोई भी प्राप्त नहीं कर सका। सभी 'मैं मालिक तू नहीं मैं' की प्रचण्ड अग्नि की ज्वाला में झुलसते हुये संसार से विदा होते गये। परन्तु यह महामारी गई नहीं, अब तो जन्मते ही लग जाती है। यह महारोग समस्त मानव-मण्डल की तो बात ही क्या। यह तो सभी थलचर, नभचर और जलचर सभी जीवों में विकराल रूप से विद्यमान है।

पूज्य बहन जी ने 'मैं और मेरे' को रोग बताया और इसको भजन के रूप में श्री आनन्द किर्तन भाग-2 के पृष्ठ सं॰ 3 पर प्रकाशित किया है।

इस रोग का दर्शन-श्रवण कहीं बड़े रूप में कहीं-कहीं छोटे-छोटे रूप में मिलता रहता है। श्री गीता अ॰ 13 में श्लोक 7 से 11 तक में जो ज्ञान-प्राप्ति के लिये साधन

बताया है उसमें पहला सूत्र जो कथन किया है वह है श्रेष्ठतापन का अभाव अर्थात् मैं मेरे का अभाव। तभी ज्ञान की प्राप्ति होगी।

हाँ, यहाँ भी साधन करने वालों में 'मैं मालिक नहीं मैं' मैं का सूक्ष्म किटाणु प्रवेश करता रहता है जिसको दयामय भगवान शीघ्रता-पूर्वक उनके रोगों का उपचार कर रोक-थाम करते-रहते हैं।

इस महामारी से मुक्ति दिलाने वाले ज्ञान को श्रद्धा-प्रेम पूर्वक श्रवण करने के लिय उपस्थित प्रेमियों! **''यह मालिक-स्वामी का राग रूप मिष्ठान कब तक सेवन किया जायेगा?''**

जन्म-जन्मान्तर बीत गये इसको सेवन करते-करते। डाक्टर, वैद्य, विशेषज्ञ सावधान करते हैं, मना करते हैं कि भाई शूगर बहुत ज्यादा बढ़ गया है, मीठा खाना बन्द कर दो, नहीं तो खतरा हो जायेगा।

मैं मालिक-स्वामी पन के अत्यधिक रोगी के भगवत-विधान के ज्ञाता मानसिक वैद्यराज सदा से सावधान करते आये हैं। समाज-परिवार के लिये तो श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा होने वाले कर्म-आचरण पवित्र हितकारी होते हैं। उनके ध्येय-भावों का नारा होता है। ''हे प्यारे प्रेमियों, मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम-रूप को मत भूलो, मुझे सर्वत्र सब रूपों में और अपने हृदय दिमाग में मानों।

''मैं मालिक बनूँगा, तू नहीं मैं'' बनने वालों के विचार श्री गीता जी में जगह जगह कथन किया गया है। परन्तु श्री गीता अ॰ 16 में उनके गुण-ज्ञान-भाव-आचरण ध्येय का वर्णन विस्तारपूर्वक श्लोक 6 से 18 तक किया है और उसका फल क्या होगा, वह दो श्लोकों में अर्थात् 19-20 में कथन किया गया है।

यहाँ केवल 13 से 16 श्लोकों का हिन्दी अर्थ कथन किया जा रहा है।

मैं मालिक बनूँगा, तू नहीं मैं। मैं वाले सोचा करते हैं कि मैंने आज यह प्राप्त कर लिया है, और अब इस मनोरथ को प्राप्त कर लूँगा। मेरे पास इतना धन है फिर भी यह और हो जायेगा। वह शत्रु मेरे द्वारा मारा गया और दूसरे शत्रुओं को भी मैं मार डालूँगा, मैं ईश्वर हूँ, ऐश्वर्य को भोगने वाला हूँ, मैं सब सिद्धियों से युक्त हूँ, बलवान हूँ और सुखी हूँ।

मैं धनी और बड़े कुटुम्ब वाला हूँ, मेरे समान दूसरा कौन है, मैं यज्ञ करूँगा, दान करूँगा और आमोद-प्रमोद करूँगा। इस प्रकार अज्ञान से मोहित करने वाले तथा अनेक प्रकार से भ्रमित चित्तवाले, मोहरूप जाल से समावृत्त और विषयभोगों में अत्यन्त, आसक्त आसुर लोग महान अपवित्र नरक में गिरते हैं। यह है, मैं मालिक बनूँगा, तू नहीं मैं बनूँगा। बनने-वालों का इतिहास।

बस इस महामारी को शान्त करने की एक ही बूटी है।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भावेन भारत।
तत्प्रसादत्परां शान्ति, स्थानं प्राप्स्यासि शाश्वतम् ॥

श्री गीता अ॰ 18 श्लोक 62, बस सच्चा मैं मालिक बनने का और सदा के लिये गद्दी प्राप्त करने का यही एक मार्ग है। इसके अतिरिक्त इस ब्रह्म-सृष्टि में अन्य कोई मार्ग नहीं है।

श्लोक 62 का हिन्दी अर्थ– इस श्लोक में ॐ आनन्दमय भगवान कथन कर रहे हैं कि– सब प्रकार से उस ॐ आनन्दमय परमेश्वर की ही शरण में जाओ। उस ॐ आनन्दमय परमात्मा की कृपा से ही तूम परमशान्ति को तथा सनातन परमधाम को प्राप्त हो जाओगे।

यही परम-धाम है जो असली गद्दी है इसके अतिरिक्त और कोई धाम नहीं है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय।

इस दुःखमय संसार-सागर से पार होने के लिये आनन्दमयी नौका पर सवार होना है और 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' नाम की पतवार चलाना है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

विशेष गम्भीरता पूर्वक विचारणीय विषय

इस ब्रह्माण्ड में भगवत-शक्ति के समान कोई शक्ति नहीं, भगवत ज्ञान के समान कोई ज्ञान नहीं, भगवत सुख-शान्ति-आनन्द के समान कोई सुख आनन्द नहीं, भगवत पद के समान कोई पद नहीं, और भगवत कृपा के समान कोई कृपा नहीं, ब्रह्मवेत्ता, तत्त्वज्ञानी महापुरुषों के समान कोई महापुरुष नहीं।

परमधाम के समान कोई धाम नहीं, परमधाम को प्राप्त कर फिर संसार में वापस नहीं आते, वह मेरा परम-धाम है श्री गीता अ॰ ८ श्लोक २१-२६ ।

वह परमधाम स्वयं प्रकाशमय है। सूर्य चाँद को स्वयं प्रकाशित करता है परन्तु विचारणीय विषय तो यह आता है कि ऐसा दु:खों से रहित, परम आनन्द-शान्ति दायक है, फिर भी वर्तमान की तो बात ही क्या और भविष्य के लिये भी क्या कहा जाये जब कि प्राचीन के शास्त्रों में या अन्य भी पठन-श्रवण करने को नहीं मिलता कि किसी पिता ने अपने पुत्रों को भगवत-कृपा-शक्ति प्राप्त करने के लिये भगवत-मार्ग में लगाया हो, भगवान का भक्त बनाया हो। हाँ भगवत अराधना करने-वाले पुत्रों को भगवत्-मार्ग से च्युत करने वाले, उनकों कष्ट देने वाले, उनको भयभीत करने वालों के नाम मिल जायेंगे। उनमें से...

जैसे अष्टावर्ग जी के पिता जी के सम्बन्ध में श्रवण किया हुआ था कि जब अष्टावर्ग जी गर्भ में थे, तभी उनको ब्रह्म ज्ञान हो गया था। एक समय अष्टावर्ग जी के पिता उनकी माता जी को वेद-वाणी सुना रहे थे। उस समय गर्भस्थ शिशु ने कहा, यह विषय आप गलत बोल रहे हैं। यह सुन कर पिता में रोष आ गया, पुन: रोष को शान्त कर, जब आगे फिर सुनाने लगे, तब फिर गर्भस्थ शिशु ने कहा कि यह गलत बोल रहे हैं, अब तो पिता पूरे रोष में आ गये और अति क्रोध में बोले कि अभी तो गर्भ में रहते हुए मेरा अपमान कर रहा है, जब पैदा होगा तब क्या-क्या करेगा और क्रोध के आवेश में आकर माता के पेट में जोर से लात मारी, गर्भस्थ शरीर निर्वाण में था अत: शिशु का अंग आठ जगह से टेढ़ा हो गया। इसलिये जन्म होने पर शरीर का अंग आठ जगह से टेढ़ा होने के कारण, इनका नाम अष्टावर्ग पड़ा। यह जन्म से ब्रह्मज्ञानी थे, मन की एकाग्रता के ज्ञाता थे, कथा और बहुत विस्तार से है। इन्होंने अपने बाल्य-काल के जीवन में अपने पिता जी सहित बड़े-बड़े ज्ञानी, साधू, महात्माओं को जिनको वास्तविक ज्ञान न होने के कारण उस समय के राजा ने, उन सबको कैद कर रखा था। श्री अष्टावर्ग जी ने सच्चे ज्ञान को देकर राजा का समाधान किया, और सबको कैद से मुक्त किया।

कहने का तात्पर्य यह है कि पिता ने अपने ज्ञानी प्रभु भक्त पुत्र के साथ गर्भस्थ अवस्था में ही कितना बड़ा अत्याचार किया फिर ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की भक्ति में लगाने का प्रश्न ही नहीं उठता। जबकि माता-पिता अपने आपको बच्चों के प्रति बड़ी सहानुभूति दिखलाते हुये कर्त्तव्यशील समझते हैं, परन्तु ऐसी सहानुभूति कर्त्तव्यशीलता से क्या लाभ यदि होने वाले और आने वालों दु:खों का यदि अन्त नहीं होता। अ॰ ६ श्लोक २३, अ॰ ५ श्लोक २२ ।

यह बुद्धिमान, विवेकशील कर्त्तव्य नहीं है, आज तक कोई माता-पिता अपने बालक बालिकाओं को भगवत विमुख कर, महाभाग्यवान नहीं बना सके। महा भाग्यवान-भाग्यशाली बनाने का मतलब उनको प्रभु-भक्ति में लगाना।

हाँ प्राचीन गाथाओं में माताओं के तो शुभ नाम आते हैं जिन्होंने अपने पुत्रों को भगवत मार्ग में लगाया। उनके अन्दर प्रभु भक्ति के प्रति श्रद्धा-प्रेम-विश्वास का संचार किया जैसे माता मदालता का नाम आता है। ध्रुव की माता जी का नाम आता है और लक्ष्मण जी की माता जी का नाम है, प्रभु भक्ति के ज्ञाताओं ने तो यहाँ तक

निन्दनीय शब्दों का प्रयोग किया है कि वही माता धन्य है, पुत्रवती है, जिनका पुत्र भगवान की भक्ति के मार्ग पर लगा हुआ है। शेष माताओं को तो बाँझ ही घोषित किया।

हाँ, वर्तमान में ॐ आनन्दमय अनुरागियों में कुछ माता-पिता अपने बच्चों को भगवत मार्ग पर चलाने में प्रयत्नशील रहे हैं, परन्तु अज्ञानमय ज्ञान से मोहित एवं राग-द्वेष, काम-क्रोध, ईर्ष्या-कलह आदि से पीड़ित, दर्शन-श्रवण से धर्म-कर्मों में प्रवृत्त रहने वाले मानव निरन्तर धारावत बहने वाली नदी की तरह बहते जा रहे हैं। जैसे दीपक की लौ कि प्रकाश में चारो तरफ से पतंगों की बौछार बहती हुई आती है, परन्तु मिलता क्या है? जीवन की समाप्ति-प्राणों की आहुति।

श्री गीता अ॰ ७ श्लोक २७, २८, २९ । श्लोक २७ का हिन्दी अर्थ– श्री तत्वदर्शी भगवान कथन कर रहे हैं कि– ''हे प्रेमियों, संसार में इच्छा और द्वेष से उत्पन्न सुख-दु:खादि द्वन्द्वरूप मोह से सम्पूर्ण प्राणी अत्यन्त अज्ञानता को प्राप्त हो रहे हैं।

श्लोक २८ का हिन्दी अर्थ– निष्काम तत्त्व के आचार्य भगवान कथन करते हैं कि निष्काम-भाव से श्रेष्ठ कर्मों का आचरण करने वाले, जिन पुरुषों का पाप नष्ट हो गया है, वे राग-द्वेष जनित द्वन्द्व-रूप मोह से मुक्त दृढ़ निश्चयी भक्त सब प्रकार से मुझे भजते हैं।

अत: जब तक राग-द्वेष, ईर्ष्या-कलह है तब तक श्रेष्ठ कर्म नहीं हो सकते, पाप कर्म ही होंगे, जिनकी जानकारी के लिये श्री गीता अ॰ १६ श्लोक ७ से १९ तक पठन-श्रवण करना चाहिये।

श्रेष्ठ कर्मों के प्रभाव से फिर आगे का मार्ग सुगम हो जाता है जैसा कि अ॰ ७ श्लोक २९ में ॐ आनन्दमय भगवान कथन करते हैं कि जो मेरी शरण होकर जरा और मरण से छूटने के लिये यत्न करते हैं वे पुरुष ब्रह्म को, सम्पूर्ण अध्यात्म को और सम्पूर्ण कर्म को जानते हैं अर्थात् इसके आगे फिर कुछ जानने की आवश्यकता नहीं रहती।

परन्तु इस प्रकार ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की शरण लेकर श्रेष्ठ कर्म करने वाले हज़ारों में कोई एक ही ॐ आनन्दमय भगवान की प्राप्ति के लिये यत्न करने वाले होते हैं।

शेष तो इन्द्रिय विषय भोगों की फिसलन में गिर कर अंग-भंग होते रहते हैं, भक्त नारद मुनी जी का मान-सम्मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती रहे और नारी की प्राप्ति भी भगवान की आड़ में धोखा देकर प्राप्त हो जाये। यह छल, कपट की महामारी ॐ आनन्दमय भगवान की सत्ता में नहीं चल सकती। एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती। सर्वशक्तिमान जी भक्त की मान-प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये विषय भोगों की आसक्ति नष्ट करने के लिये बन्दर का रूप देकर रक्षा करते हैं।

यद्यपि सकामी अभक्त, आसुरी प्रकृति के लोग साधू, महात्मा, योगी बनकर भोग-परमा की सिद्धि तो प्राप्त कर लेते हैं। जैसे महात्मा के वेश में छल-कपट कर नारी की प्राप्ति तो कर ली, परन्तु परिणाम क्या हुआ, दशानन होने पर भी एक सिर भी नहीं बचा सका, अत: दसो सिर सहित घर-परिवार, राज-समाज समेत सभी कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया।

फिर भक्त बनकर भगवान की ओट में विषय भोगों की इच्छा करे यह बेइमानी प्रभु पिता जी के दरबार में नहीं चल सकती।

निष्कामी अर्थात् सच्चा भक्त । भक्त का भूषण है निष्कामता । निष्कामता नहीं, तो वह भक्त नहीं । निष्कामी भक्त का ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी से संयोग हो जाता है, उसको सर्वज्ञ शक्तिमान सबके सुहृद-प्रेमी-हितैषी हैं, इसका अनुभव हो जाता है, फिर उसे संसार के बाबाओं की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। (जैसे वर्तमान में दुग्धाधारी बाबा, देवरहा बाबा, पायलेट बाबा, टाट वाले बाबा, साईं-बाबा, जयगुरुदेव बाबा आदि।)

परन्तु अज्ञानमय ज्ञान की छाया में पौषित होने वाले धन, मान, भोग कामनाओं से पीड़ित कामी, क्रोधी, लोभी मनुष्यों की खोज तो जीवन-पर्यन्त बनी रहती है और ऐसे ही कामी-भोगी, लोभी मनुष्यों की तृप्ति करने

वाले छली, कपटी, मायावी, सिद्धि के दाता चमत्कारी साधु, महात्मा बाबाओं का आगमन होता ही रहता है अर्थात् प्रगट होते रहते हैं।

आज भी ऐसे कोई चमत्कारी वेश-भूषा के महात्मा बाबा का विज्ञापन हो जाये और इस प्रकार विज्ञापन करने वाले एजेण्ट भी बहुत कुशल होते हैं वे यदि ऐसा विज्ञापन करदें कि एक ऐसे सिद्ध अवतारी महात्मा ऐसे निर्जन शान्त स्थान पर रहते हैं और उन्होंने ऐसी सिद्धि प्राप्त की है कि वह मनुष्य की आयु को २५-५० साल बढ़ा देते हैं और केवल मात्र पूजा सिद्धि के रूप में २५१ रुपये लेते हैं फिर तो सम्भव है एक दफे तो युवा-जवानों की बात तो पीछे- बुजुर्ग, वृद्ध, वृद्धाओं की २४ घण्टे कतारें लग जायेंगी।

परन्तु भगवत परायण निष्कामी भक्त ऐसे मायावी जाल से सदा के लिये मुक्त रहते हैं। उनको ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का वरदान प्राप्त हो जाता है। कि– ''न तेष रमते बुधा:'' श्री गीता अ॰ ५ श्लोक २२ । वह बुद्धिमान हो जाते हैं, भगवत परायण हो जाने से उनकी सम्पूर्ण इन्द्रियों सहित मन वश में हो जाता है, स्थिर हो जाता है श्री गीता अ॰ २ श्लोक ६१ ।

अन्यथा भगवत परायण न होने से सकामी मनुष्यों का क्रम-क्रम से पतन होता हुआ अन्त में सदा के लिये नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। श्री गीता अ॰ २ श्लोक ६३ एवं अ॰ १८ श्लोक ५८ । **–शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आप स्वयं विचार करें। जो मनुष्य श्री विश्वपिता ॐ आनन्दमय प्रभु द्वारा तैयार किये हुये, अपने तन के स्वयं मालिक बन कर, इस ब्रह्म-सृष्टि के प्रेमी-पदार्थों को अर्थात् धन-जन आदि को अपने आज्ञाकारी बनाने के कर्म करते हैं। उन मनुष्यों को युगल-जोड़ी बनाकर पारिवारिक पदाधीश बना देते हैं परन्तु उनके दिमाग को खाली कनस्टर कर देते हैं न?

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानी, यन्त्रारूढानि मायया।।

(श्री गीता अ॰ १८ श्लोक ६१)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

दिमागी-सम्पत्ति के दाता ॐ श्री ध्यानाचार्य श्री गुरु-देव भगवान की अमृत-वाणी से होने वाले अनुभव-धारा का कुछ...अंश ।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की मङ्गलकारी रचना में वर्तमान में मानव मण्डल का चाहे धनी हो अथवा गरीब हो, उच्च पदाधिकारी हो अथवा निम्न-कर्मचारी हो, उच्च कुल का अथवा निम्न कुल का हो, सभी के पेट इतने विशाल और गहरे हो गये हैं कि रात-दिन झूठ, कपट, जालसाजी, रिश्वत के द्वारा धन उपार्जन करके भी वह गहरे गड्ढे भरने में नहीं आ रहे हैं। जितना अधिक रिश्वत, बेईमानी, झूठ, कपट से भरने का प्रयत्न जोरों से किया जा रहा है उतनी भूख और अधिक बढ़ती जा रही है। सारा समाज छोटे-छोटे छात्र-छात्राओं से लेकर बड़े-बड़े आयुष्वान इस महामारी के चपेट में चल रहे हैं। इसी से दिमागी-रोगों की अत्यधिक वृद्धि होती जा रही है।

दुर्योधन जन शक्ति-बल, बाहुबल, अस्त्र-शस्त्र-बल, मान-बड़ाई और पद-प्रतिष्ठा से सम्पन्न था परन्तु कूल्हे की हड्डी चूर हो जाने के कारण प्राण-निकलने की तैयारी है और झूठ, कपट, जाल-साजी, बेइमानी का पापी मन अभी तृप्त नहीं है, भूख की जलन सता रही है, सोचता है मेरे कुल में अब पानी देने वाला भी कोई नहीं रहा, अभी पाँचों पाण्डव जीवित हैं, उनको मारने का मनन-विचार चल रहा है, अश्वस्थामा खोज करता हुआ आता है, इस दशा में देखकर रोता है। दु:खी होकर वचन देता है कि यदि कोई इच्छा है तो पूरी करूँगा। दुर्योधन ने विचार कर रखे थे परन्तु वह उसके विचारों को करने में असफल रहा और अन्त में वह अत्यन्त दु:खी, निराश होकर सदा के लिये निर्जन स्थान पर सो गया।

कहने का तात्पर्य यह है कि झूठ, कपट, रिश्वत, बेइमानी और जालसाजी से उपार्जित धन से जीवन में कभी तृप्ति नहीं हो सकती। जैसे अग्नि में घृत को डालने से वह प्रज्ज्वलित ही होती जायेगी।

इसी प्रकार हर इन्द्रियों के विशाल केन्द्र हैं अर्थात् गड्ढे हैं। जो दर्शन-श्रवण कर प्रेमी-पदार्थों के भोग-रमण से आज तक नहीं भरे, अर्थात् अनादि काल से आज तक मानव की उनसे तृप्ति नहीं हुई और न ही भविष्य में होगी।

इसीलिये गीता में भगवान ने चेतावनी दी और सावधान किया अ॰३ श्लोक ३६ में–

कि दर्शन-श्रवण-पठन करते-करते रजोगुण उत्पन्न हो जाता है उससे काम की वृत्ति उत्पन्न होती है और यह बहुत खाने वाला अर्थात् भोगों से कभी अघाने वाला नहीं और बड़ा पापी है.... इसलिये इसको इस विषय में वैरी अर्थात् दुश्मन मानों।

रावण को क्या कमी थी, सब प्रकार से सम्पन्न, वेदाचारी कुशल था लेकिन नारी की भूख ने देह-दिमाग, जन-परिवार, मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा सबको मटिया-मेट कर दिया।

नारी के राग ने, भक्त के मान-सम्मान से प्रतिष्ठित, श्री नारद जी को प्रतिष्ठित भरी सभा में अपमानित कर अति व्याकुल शोकातुर बना दिया। यह सब बड़ी-बड़ी हस्तियाँ हुई। वर्तमान की दयनीय और सोचनीय स्थिति को देखकर क्या कहा जाये। इस भयङ्कर आग रूपी महामारी से जो बच जाये वहीं भगवान की कृपा-शक्ति का पात्र है अथवा भाग्यशाली है।

आखिर एक म्यान में दो तलवार कैसे रहेगी, इसी प्रकार भक्त का मान-सम्मान प्राप्त होता रहे और नारी-सुख-प्रेम भी बना रहे यह असम्भव कैसे सम्भव हो सकता है। एक का तो नाश होगा परन्तु अब यहाँ गम्भीरतापूर्वक मनन-विचार का रहस्य का विषय है। वह क्या है?

विचार करें, नारी-प्रेम का नाश कर दिया तो भक्ति का विकास हो जायेगा। हाँ यदि भक्ति का नाश कर दिया

और नारी प्रेम का विकास कर लिया तो नारी-प्रेम का विकास होने पर भी वह ठहरेगा नहीं, क्योंकि इस प्रेम के तत्त्वज्ञ महापुरुषों ने क्षणिक, नाशवान, क्षणभङ्गुर और दु:ख ही कथन किया है फिर क्या दोनों तरफ से अनाथ की तरह मारे गये अर्थात् कहावत के अनुसार न माया मिली और न भगवान। इसलिये गीता कहती है– ''मनुष्याणं सहस्त्रेषु, कश्चिद्यतति सिद्धेय।।'' हजारों में कोई एक चेतता है।

अत: सन्त चेतावनी में कहा है–

''चलती चक्की काल की,पड़े सभी पर चोट।
कोई-कोई योगी बच गए, आनन्दमय ब्रह्म की ओट।।
मन दिया कहीं और ही, तन सज्जनों के संग।
कहे दास कोरी-गजी, कैसे लागे रंग।।''

फिर और समझाया कि–

''मन के मारे बन गए, बन तज बस्ती माहीं।
कहे दास क्या कीजिये। यह मन ठहरे नाहीं।।''

यह है स्वतंत्रता पूर्वक दर्शन-श्रवण कर मनमाने कर्मों का फल। मन को ठहराने का मानव मात्र के लिये सर्वशक्तिमान की तरफ से एक ही आदेश संकेत-इशारा श्री गीता अ॰ ३ श्लोक २१, अ॰ ४ श्लोक ३४ में कथन किया है।

बहुमूल्य समय की भागने वाली रफ्तार से आगे-बढ़ने का एक मात्र साधन है– ''तीव्र वैराग्य'' फिर सभी साधनों की सिद्धि सुगमता से होती है। श्री गीता अ॰ १५ श्लोक ३ में दृढ़ वैराग्य रूपी शस्त्र के द्वारा ही इस अहंता-ममता और वासना वाले सुख रूप संसार वृक्ष को काट डालने का आदेश देकर पुन: ४ और ५ में अविनाशी-परमपद को प्राप्त करने का साधन की विधि बतलाई। जिज्ञासु-श्रद्धालु भक्तों को समय, दृढ़ता-पूर्वक निकालकर इसका पठन-श्रवण कर धारण करने के लिये पुरुषार्थशील होगा चाहिये।

ऊपरी दिखावे की चमक-दमक की सुन्दरता से अन्दर की चिनगारियाँ निकलनी शान्त नहीं होगी। अत: हम लोगों को अन्दर-बाहर के भावों से, आचरणों से, शुद्ध-पवित्र होना है। मंत्र-शक्ति, ध्यान-शक्ति, ज्ञान-शक्ति हमारे साथ है। अन्यथा सुन्दर चमकने वाले लाइटर में केवल अन्दर चिनगारी रूपी आग ही आग है। **–ॐ शान्तिमय**

ध्यानयोग के पारदर्शी-तत्त्ववेत्ता महापुरुषों की दिव्य-वाणी!

मूर्ख अध्यापक द्वारा शिक्षा प्राप्त होना सम्भव नहीं। एवं अज्ञान-विमोहित कामनाओं से तपायमान * चिन्तित-क्रोधित मनुष्यों से * आनन्द-शान्ति प्राप्त होना सम्भव नहीं। वैसे ही, दुर्गुण सम्पन्न व्याख्यान दाताओं द्वारा सद्गुण सम्पन्न होना सम्भव नहीं।

जैसे...

बनावटी पदाधीशों द्वारा सरकारी लाभ होना सम्भव नहीं * वैसे ही ध्यान-समाधि रहित वाचाल-पण्डित * महात्माओं से * हानि के अतिरिक्त * लाभ होना सम्भव नहीं।

दिमागी संकटहारी योगसिद्ध महामंत्र
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
को हर समय, हर कार्य करते हुए जपें
यह मंत्र ध्यानयोग युक्त निरन्तर आनन्द-शान्ति दायक है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

दण्ड-पद के दाता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी किसी के जाली अहङ्कार की पद-प्रतिष्ठा सदा स्थिर नहीं रहने देते हर समय चलायमान करते हुये अन्त में नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं।

ॐ आनन्दमय भगवान के विपरीत चलने वाले अर्थात् ॐ आनन्दमय भगवान के बनाये हुये विधान के विपरीत चलने वाले, हमेशा से नष्ट-भ्रष्ट होते आये हैं और भविष्य में भी होते ही रहेंगे।

इस नश्वर सुखरहित मनमोहक दु:खमय-अशान्तिदाक प्रदूषणों से भरे हुये शरीर को कोई भी वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डॉक्टर सिद्ध-साधक योगी, महात्मा सदा निरोग स्वस्थ प्रसन्न नहीं रख सकते अन्त में कुछ ग्राम-राख ही शेष रह जाती है।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के बनाये हुये नियमों व विधानों के विपरीत कर्म-धर्म करने वाले असंख्यों जीव चौरासी लाख के चक्कर में घूम रहे हैं श्री गीता अ० १८ श्लोक ६१ । और अब पुन: मानव जीवन को प्राप्त करने पर भी हजारों-हजारों की संख्या में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के विधान के विपरीत कर्म-धर्म कर सदा जीवन में पश्चाताप के ताप से तपायमान रहते हुये पुन: ८४ लाख के चक्कर में जाने की, घूमने की, तैयारी कर ली है, श्री गीता अ०१६ श्लोक १७, १८, १९, २० ।

मनुष्य का शरीर संसार चक्र में घूमने के लिये नहीं मिला है, यह संसार-चक्र को रोकने के लिये मिला है। यह परम् कल्याण करने के लिये मिला है।

जन्म होने के साथ-साथ इस जीव को कर्मों के चक्कर में प्रीति कराने वालों का संयोग होने लगता है और उसको बचपन से युवावस्था तक घनघोर कर्मों के चक्कर में उलझा देते हैं। जिन चक्करों से मुक्त होने के लिये मनुष्य जीवन प्राप्त हुआ वह पुन: चक्करों के जाल में फँस जाता है श्री गीता अ०९ श्लोक ३ ।

दु:खालय स्वरूप नाशवान मोह-माया के चक्कर जाल से छुड़ाने वाले एक ॐ आनन्दमय प्रभु के विधान के अतिरिक्त अन्य और कोई शक्ति नहीं है।

खेल-तमाशे वाले भी, खेल-तमाशे के चक्करों में घुमाते रहते हैं। नाना प्रकार के झूलों में घुमाते रहते हैं। अब वर्तमान में हमारे श्री राम देव जी महाराज योग आसन के चक्कर में लाखों नर-नारियों को घुमा रहे हैं, परन्तु कल्याण चाहने वाले प्रेमियों सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अनन्त ब्रह्माण्डों के संचालन कर्त्ता समस्त भू-मण्डल के नारी-नरों के प्रति जो आदेश है, वह समस्त गीता में है और मुख्य रूप से योगी बनने का आदेश श्री गीता अ० ६ श्लोक ४७ में है। यही योग समस्त दु:खों के चक्करों को समाप्त कर परम आनन्द, परम शान्ति प्राप्त कराकर सदा के लिये मुक्त कर, परमधाम प्राप्त कराने वाला है। ''योगी बनने के लिये आज्ञा''।

हे प्रेमियों, सम्पूर्ण योगियों में भी जो श्रद्धावान योगी मुझमें लगे हुये अन्तरात्मा से मुझको ही निरन्तर भजता है। वह योगी मुझे परम् श्रेष्ठ मान्य है।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी द्वारा बताये योग की सिध्दि प्राप्त कर ली तो फिर किसी योग की आवश्यकता नहीं अन्यथा संसारिक नारी-नरो द्वारा चलाये जाने वाले हज़ारों योग के नाम से चल रहे एक की तो बात ही क्या हजारों मिलकर भी उनकी शक्ति, उनकी दिव्यता उनके योग के सामने सब जुगूनों के समान भी नहीं होंगे।

श्री गीता ६ श्लोक ४६, ४७ ।

जन्म मृत्यु दायक दु:खालय स्वरूप, प्रदूषणों से भरे हुये एवं दिमागी रोगों से तप्त (दिमागी रोग- काम-क्रोध, लोभ-मोह, ममता, राग-द्वेष आदि) देह-दिमाग को कोई भी प्रतिष्ठित-वैज्ञानिक डॉक्टर, वैद्य, योगी, महात्मा, सिद्ध-साधक सदा निरोग स्वस्थ्य प्रसन्न नहीं रख सकता। अन्त में विपरीत कर्म धर्मों के परिणाम स्वरूप अनेक चित्त-विभ्रान्ता मोह जाल समावृत्ता:।

अत: ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के बनाये हुये विधानों के विपरीत धर्म-कर्म करने-करवाने वाले सदा पश्चाताप के ताप से तपायमान रहेंगे। श्री गीता अ० ३ श्लोक ३० से ३२ तक पठन करें। **—शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

परम पुनीत कर्मों के महान-तत्त्वज्ञ ॐ श्री महापुरुष भगवान सदैव परमार्थ-मय भावों से मन-बुद्धि में पुनीत-श्रेष्ठ कर्मों को करते रहने की जाग्रति करते रहते हैं।

इस ब्रह्म-सृष्टि के शासक, मालिक, स्वामी, पालन-कर्त्ता संचालन-कर्त्ता एवं संहार करता स्वयं ही हैं। परम श्रेष्ठ पुनीत कर्मों की धारावत सिंचाई करने के लिये श्री सच्ची-प्रेम भक्ति के २१ मंत्रों में ज्ञान-जल की धारा प्रवाहित कर दी है।

ब्रह्म बल शक्ति, के शासक प्रभु पिता ने सम्पूर्ण-व्यवस्थाओं पर स्वयं अपना शासन कर संचालन कर रहे हैं। उनके बिना न कण उड़ सकता है और न पहाड़ हिल सकता है। हाँ यही अपने व्यवस्थाओं का प्रबन्ध करते हुये कण को अचल कर पहाड़ों को हिला देते हैं।

अचल, अस्थिर, अथाह, जल, राशि वाले समुद्र को भी भूकम्प द्वारा उछालते रहते हैं। अनन्त अपार महिमा में स्थित प्रभु पिता जी पुनीत श्रेष्ठ कर्मों की जाग्रति कर महावीर दिमाग बना देते हैं। एवं अनिष्टकारी दुष्कर्मों के प्रभाव से दिमाग को चौपट कर देते हैं।

श्री गीता अ॰ १८ श्लोक ६१ का हिन्दी अर्थ उच्चारण किया जा रहा है।

सम्पूर्ण भूत-प्राणियों के हृदय-कमल में स्थित ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी कहते हैं कि शरीर रूप यन्त्र में आरूढ़ हुये, सम्पूर्ण प्राणियों को मैं अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय-कमल में स्थित हूँ।

अनन्त अपार-महिमा में स्थित ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की छत्र-छाया में हम लोगों को जो कुछ प्राप्त है, प्राप्त होगा, वह सभी दुर्लभ अमोद्य है उसमें से हम लोगों को राज-विद्या अध्ययन करने का सर्वोत्तम शास्त्र, अमृतमय ज्ञान से परिपूर्ण श्री गीता को आपस में स्वाध्याय करने का, पठन, श्रवण करने का, एवं उसके तत्त्व रहस्य को जानने-समझने, धारण करने का जो शुभ अवसर प्राप्त हो रहा है और साथ ही साथ ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जो समय-शक्ति प्रदान कर रहे हैं। यह सब उनकी जो दया की सीमा है उस सीमा को पार कर करके, यह दया नहीं है तो और क्या है? इस प्रकार शुभ अवसर ऐसा वातावरण कितनों को प्राप्त हो रहा है।

अधिकांश जीवन तो पशु से भी नीचा व्यतीत हो रहा है। कुछ तो पशु के सदृश कार्य करते हैं। कुछ चेतने पर जागते है, फिर सो जाते हैं। कितने आश्चर्य की भाँति देख-सुन कर स्तब्ध हो जाते हैं एवं कुछ-कुछ देख, सुनकर, पढ़कर समझते हैं कि ज्ञान अच्छा है, ग्रन्थ अच्छा है, साधन भी ठीक है। परन्तु श्रद्धा-विश्वास न होने के कारण ॐ आनन्द प्रभु जी संकल्प-शून्य कर देते हैं। कुछ-कुछ पाठ करते हैं। स्वाध्याय में समय लगाते हैं–

परन्तु जब तक तत्त्वदर्शी, ब्रह्मदर्शी श्री समाधि मग्न महापुरुषों का संयोग प्राप्त नहीं होता, तब तक श्री गीता जी के ज्ञान का रहस्य समझ में नहीं आ सकता।

वास्तव में हर समय, हर परिस्थिति में सम-शान्त प्रसन्न रहते हुये श्रद्धा-प्रेम, उत्साह, तत्परता का दर्शन, श्रवण कराने वाला और दया के तत्त्व को समझने वाला ही भक्त कहलाने का पात्र बनता है। भक्त के लिये सब परिस्थितियाँ समान हो जाती हैं। वह फिर हर समय भगवत-आनन्द में मग्न रहता है।

अत: नरम-कोमल तागा तो सूई के छेद से पार हो जाता है परन्तु ऐठा, अकड़ा हुआ तागा सूई के छेद में नहीं जा सकता। इसी प्रकार सरल, नम्र, विनयी, निरंकारी दिमाग ही प्रभु भक्ति का पात्र बनता है, मान-सम्मान, भोग, कामना से ऐंठा अकड़ा दिमाग प्रभु पिता जी की दया, कृपा का, पात्र नहीं बन सकता। ॐ शान्तिमय

–श्री विश्वशान्ति आश्रम

त्रिवेणीपुरम् , झूँसी, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

कॅचना तजना सहज है। सहज त्रिया का नेह।।
मान-बड़ाई ईर्ष्या। दुर्लभ तजना येह।।

मानव जीवन केवल मात्र सर्वशक्तिमान, ब्रह्म सृष्टि के निर्माता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी को पूर्ण रूप से समर्पण करने के लिये ही मिला है। श्री गीता २ श्लोक ६१, अ०३ श्लोक ३०, अ० १८ श्लोक ५७-५८।

अज्ञान से और भ्रम से मोहित जीव कृपानिधान ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के अधिकारों को स्वयं बलपूर्वक छीनकर सृष्टि-निर्माण के अधिकार को लेकर पापमय कर्मों में बलपूर्वक लगा रहता है। समय की गति तीव्र रफ्तार से भाग रही है। गया हुआ समय फिर वापस नहीं आने का।

भगवत आदेशों में मान्यता की कमी हर समय वाद-विवाद की बाहुल्यता, राग-द्वेष, ईर्ष्या, कलह के जाम से आगे बढ़ने में रुकावट आती रहती है। यदि इन सबमें लगने वाले परिश्रम को, भगवत भावों को श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के नियमानुसार अपने ही दुर्गुणों, दुराचारों के मूलोच्छेद करने में और सद्गुण, सदाचारों को धारण में लगाया जाता, तो न तो उतनी हानि होती है और न ही समाज में इतना अपवाद फैलता और न ही धर्म स्थानों में इतना असंयम और व्यभिचार ही घुसता है।

दोष दर्शन-दोष बुद्धि-दुर्गुणों का फल है।
भगवत दर्शन-सद्गुण-सदाचारों का फल है।

सद्बुद्धि प्रदान करने वाले एवं सदा पुनीत कर्मों की प्रेरणा जगाये रखने वाले ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का आदेश है कि हे प्यारे प्रेमियों मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम रूप को मत भूलो, मुझे सर्वत्र, सब रूपों में और अपने हृदय में मानों। यही आदेश की हम लोग दैनिक दो बार प्रतिज्ञा करते हैं कि हे ज्ञान दाता भगवान, मेरे ज्ञान में चराचर, सब कुछ श्री आप ही हैं, एक श्री आनन्दमय भगवान ही अनेक रूपों में हैं। परन्तु इनमें पूर्ण श्रद्धा न होने के कारण ही समय-समय पर परिस्थिति वश दिमाग में भूकम्प आते रहते हैं।

श्री गीता शास्त्र में भी यही आदेश जगह-जगह कथन किया है और अन्त में इसका निर्णय दे दिया अ०१८ के ५८ श्लोक में कि इस प्रकार मेरी कृपा से समस्त संकटों से मुक्त हो जायेगा। और यदि अहंकार के कारण राग-द्वेष, कलह-क्लेश भोग-दर्शन, दोष दर्शन करता रहेगा। मेरे आदेशों को नहीं सुनेगा तो नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। परन्तु मनुष्य के अन्दर अहम् की वृत्ति प्रबल रहती है। और इस अहम् वृत्ति ही दीमक और घुन की तरह, अन्दर के पौष्टिक तत्त्वों को समाप्त कर खोखला कर देती है। ऐसे ही मानव की अहम् वृत्ति भगवत-आदेशों को त्याग कर दोष-दर्शन, भोग-दर्शन करते हुये राग-द्वेष, ईर्ष्या, कलह-क्लेश, नाराज़गी और क्रोध से हितकारी, परमार्थमय दिमाग को खोखला अर्थात् चौपट कर देती हैं। हाँ जबकि भगवत आदेश है वैराग्य करने का न कि राग करने का।

दण्ड पद के दाता सर्वज्ञ ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी स्वयं ही मनुष्यों के द्वारा होने वाले शुभ-अशुभ, परमार्थमय, स्वार्थमय कर्मों के दण्ड-पद की व्यवस्था करते रहते हैं फिर हमें क्या अधिकार है कि हम दूसरों में दोष दर्शन कर आपस में अथवा समाज में श्रवण कथन करें। हम स्वयं दण्ड के भागी बने और दूसरों को भी दण्ड के भोक्ता बनाये इस प्रकार का भगवत-विधान विरुद्ध घोर पापमय हम कर्म क्यों करें और क्यों करायें। हमें जो अधिकार दिया है कर्त्तव्य कर्मों की करने की प्रेरणा दी है। हम उसी का पालन करें।

दण्ड पद के दाता दयामय प्रभु पिता जी कर्मों के अनुसार ही व्यवस्था कर रहे हैं साथ ही साथ हमें चेतावनी भी देते हैं कि सम्पूर्ण मनुष्यों द्वारा किये जाने वाले राग-द्वेष, ईर्ष्या-कलह, भोगदर्शन, दोष-दर्शन करने

का भुगतान मैं स्वयं ही करता हूँ। अ० १८ श्लोक ५८ । मैंने सारी व्यवस्था मानव के स्वभाव कर्मों के अनुसार कर रखी है। फिर अब तुम्हें उसके स्वभाव कर्मों की आपस में अथवा समाज में श्रवण, कथन करने की चर्चा करने की क्या जरूरत है, क्या आवश्यकता पड़ गयी। तुमको तो मेरा आदेश वैराग्य करने का था। श्री सच्ची प्रेम भक्ति के आठवें मंत्र में था और तुम प्रतिज्ञा भी करते हो। अत: इस प्रकार के कर्मों के करने से फिर तुम भी मेरे द्वारा होने वाले दण्ड से नहीं बचोगे। अ० १८ श्लोक ५८।- **ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय **ॐ शान्तिमय**

विद्यार्थी जीवन का लक्ष्य एवं उद्देश्य क्या होना चाहिये ?

ॐ श्री सद्गुरु देव भगवान शरणम् ।

हम विद्यार्थी लोगों का गुरु दरबार में लक्ष्य सिद्धान्त एवं ध्येय सीमित नहीं रहना चाहिये कि केवल भौतिक विद्याओं का ही अध्ययन करें, फिर मानवीय पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर डाक्टर, इंजीनियर और वकील बनें एवं उच्च से उच्च पद को प्राप्त कर और फिर विवाह सन्तान भोग करते हुये जीवन को सुखमय बनाने के लिये अधिक से अधिक भोग सामग्री संग्रह करें। सर्वश्रेष्ठ सुखमय जीवन इन्हीं उपरोक्त विचारों से होगा, यह धारणा मन से निकाल दें। क्योंकि ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों के अनुभवों से, अध्यात्मिक दृष्टि से, भगवत् सिद्धान्त से, भविष्य में यह हमारे लिये महान दु:खों का कारण होगा ।

हम लोगों को ॐ आनन्दमय भगवान के विधान के अनुसार अपने जीवन को सद्गुण-सम्पन्न सदाचारी ही बनना चाहिये फिर हमारे द्वारा होने वाले सभी कार्य एवं व्यवहार-आचरण-आदर्श श्रेष्ठ होंगे। इससे हमारा अपनों से बड़े पूज्यजनों के प्रति माता-पिता, भाई-बन्धु, इष्ट मित्रों के प्रति अधिक से अधिक सम्मान करने का स्वभाव बनेगा। जीवन में नम्रता सरलता, सहनशीलता, धैर्य, उत्साह आदि अनेकों गुणों के प्रभाव से हमारे अन्दर प्रियता-प्रसन्नता, समता-सन्तोष की प्राप्ति होकर हर समय आनन्द, शान्ति की मग्नता बनी रहेगी। हम अपने लिये परिवार एवं समाज के लिये हितकारी व भाग्यशाली समझें जायेंगें ।

दूसरों के प्रिय बनने के लिये और अपने प्रिय बनाने के लिये हम लोगों को अपने स्वभाव में सरलता, वाणी में मधुरता, आचरणों में निष्कपटता, सेवाभाव, व्यवहार में नम्रता, प्रियता, प्रसन्नता आदि को अपने अन्दर उदय करना होगा जाग्रत करना होगा तभी काम बनेगा।

श्री गुरुदेव की हितकारी वाणी है कि—

१ - अपना हित-चिन्तन करना पाप है ।

२ - दूसरे का हित चिन्तन करना धर्म है ।

३ - दूसरे का अनिष्ट चिन्तन करना महापाप है ।

सद्गुण-सदाचार सम्पन्न विद्यार्थी ही देश के भाग्य को उदय करने में समर्थ होंगें । प्रेम-प्रसन्नता के त्यागी और चिन्ता-क्रोध के रागी अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षित छात्र-छात्राओं का चरित्र होगा कैसा? तामसी दुर्योधन और सूपनखा के जैसा । **ॐ शान्तिमय ।**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री भगवान् में अनन्य और विशुद्ध प्रेम होने पर भगवान् की प्राप्ति शीघ्र होती है। 'अनन्य' का अभिप्राय है भगवान् के सिवा अन्य किसी में भी प्रेम न हो और विशुद्ध का अभिप्राय है अन्य किसी भी प्रकार की कामना न हो– पूर्ण निष्काम भाव है। इस असली प्रेम की प्राप्ति के लिए साधकों को सब में भगवत् - बुद्धि करनी चाहिए।

कुछ काल पूर्व तो यह देखा जाता था कि कितने ही साधक दूसरे साधकों को देख कर खुश हो जाते हैं, मग्न हो जाते, हरे-भरे हो जाते और उसमें गुणबुद्धि करते थे। दोष बुद्धि तो उनकी कभी होती ही नहीं थी। अपने से एक दूसरे में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सद्गुण और सदाचार अधिक दीखते एवं यह सब मुझमें आवें ऐसी आकांक्षा रखते, किन्तु आजकल तो कई लोग दूसरे में दोष बुद्धि करके उसमें अवगुण ही अवगुण देखते हैं, यह प्रत्यक्ष पतन का मार्ग है। इसी कारण अधिकांश साधकों की उन्नति नहीं होती।

यह सारा संसार भगवान का ही संकल्प होने के कारण भगवान का ही स्वरूप है। अत: सबमें भगवत् भाव करके हम निरअभिमान और निष्काम भाव से सबकी सेवा करें तो यह बहुत ही उत्तम साधन है। यह निश्चित है कि दूसरों में दोष बुद्धि होने से ही द्वेष भाव की बुद्धि होती है।

और गुण बुद्धि होने से स्वाभाविक ही प्रेम होता है।

दोष तो केवल अपने सुधार के लिए केवल अपने में ही देखने चाहिए। अपने दोषों को देखने पर वे दोष ठहरते ही नहीं। दूसरों में तो गुणबुद्धि ही होनी चाहिए दोष बुद्धि तो होनी ही नहीं चाहिए। दूसरों में दोष बुद्धि करने से बड़ी भारी हानि है। दोष तो मल के समान है। मल के साथ किसी वस्त्र का या अंग का स्पर्श हो जाता है तो वह गंदा हो जाता है। यदि हम दूसरे के दोषों को नेत्रों से देखते हैं तो हमारे नेत्र गंदे हो जाते हैं। वाणी से किसी के दोष की चर्चा करते हैं तो वाणी गंदी हो जाती है। और मन से, पर दोष चिन्तन करते हैं तो मन गंदा हो जाता है। इस तरह दोषों के संग से मनुष्य मलिन होकर उसका पतन हो जाता है।

यही नहीं, दूसरों के दोषों का कथन, श्रवण, दर्शन और चिन्तन करने में और भी अनेक दोष हैं–

(१) दूसरों में अवगुण बुद्धि होने से उसके प्रति घृणा होती है। और अपने में अच्छेपन का अभिमान बढ़ता है जो महान हानिकारक है।

(२) दूसरों की निन्दा करने और सुनने से जिसकी हम निन्दा करते या सुनते हैं, उसे बड़ा दु:ख होता है तो यह भी हमको पाप लगता है।

(३) दूसरों के दोषों के चिन्तन, दर्शन, श्रवण और कथन से उनके संस्कार बीज रूप से हमारे अन्त:करण में जमते हैं, जो भविष्य में वृक्ष रूप होकर हमें भी वैसा ही दोषी बना देते हैं।

(४) किसी के भी दोषों की आलोचना करने, सुनने और कहने से उसके दोषों के अणु अपने अंदर आते हैं।

इन सब बातों को विचार कर मनुष्य को उचित है कि दूसरों के अवगुण, दुर्गण, दुराचार, दुर्व्यसन को न कभी देखे, न आलोचना करे, न संकल्प करें, न कहें और न सुने, क्योंकि यह सभी कर्म पापमय, महान हानि कर एवं पतन कारक हैं। अत: कल्याण कामी मनुष्य को इनसे सर्वथा बचकर रहना चाहिए, क्योंकि इन दोषों के रहते हुए सब में प्रेम होना तो दूर रहा, उल्टे द्वेष की ही वृद्धि होती है। प्रेम तो सब में गुण बुद्धि करने से होता है।

प्रेम होने के लिए और प्रेम की वृद्धि के लिए निर्वाभिमान और निष्काम भाव से उनकी सेवा करना, हरेक प्रकार से उनको सुख पहुँचाना और उनमें गुण बुद्धि करके उनके गुणों का ही दर्शन आलोचना कथन और गायन करना चाहिए। इससे ऊँचे से ऊँचे और नीचे से नीचे व्यक्ति में भी प्रेम हो सकता है।

कोई भी मनुष्य हमारे सन्मुख उपस्थित हो, हमारी किसी भी भेंट हो, हमें उसका हित कैसे हो– यह सोच कर उसकी निष्काम भाव से सेवा करनी चाहिए। उसके गुणों को देखकर मुग्ध होना चाहिए, प्रसन्न होना चाहिए, हरा-भरा हो जाना चाहिए और गुणग्राही बनना चाहिए।

जब निरन्तर सभी प्राणियों में ॐ आनन्दमय की भावना की जाती है तब शीघ्र ही साधक के चित्त से अहंकार सहित स्पर्दा, ईर्ष्या, तिरस्कार आदि सारे दोष दूर हो जाते हैं।

आश्रम द्वारा किये जाने वाले सेवा की जानकारी

'श्री विश्वशान्ति आश्रम' अपने समर्पित सेवकों के सहयोग से पूरे वर्ष 'भगवद्-प्रचार' का कार्य अपने नियमित कार्यक्रमों के अनुसार करता रहता है। जिसमें कुछ कार्यक्रम जो प्रमुख हैं निम्नवत हैं–

१- आश्रम में नियमित सुबह और शाम 'ध्यान' कराया जाता है।

२- प्रत्येक वर्ष के २१ से २५ सितम्बर और मार्च माह में आश्रम में वार्षिक और अर्द्धवार्षिक सत्संग।

३- पूज्यनीय छोटी बहन जी की पूण्यतिथि पर पाँच फरवरी को वार्षिक सत्संग।

४- बिजनौर, कानपुर, दिल्ली में प्रत्येक वर्ष वार्षिक सत्संग।

५- लगभग सभी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में योगा का अभ्यास कराया जाता है।

६- विभिन्न धार्मिक स्थलों पर होने वाले मेलों में वाहन द्वारा अथवा शिविर लगा कर प्रचार-सेवा।

७- इलाहाबाद और हरिद्वार के प्रत्येक कुम्भ और महाकुम्भ मेले में प्रचार की विशेष व्यवस्था।

८- चित्रकूट, गढ़युक्तेपर में गङ्गा स्नान पर प्रचार-सेवा का कार्यक्रम।

९- अपने वेबसाइट (डब्लूडब्लूडब्लू.श्रीविश्वशान्तिआश्रम.कॉम) के माध्यम से विश्व के समस्त भागों में श्री ग्रन्थों की जानकारी, ज्ञान, ध्यान की विधि एवं आश्रम द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी उपलब्ध करायी जाती है।

१०- आश्रम द्वारा संचालित 'होम्योपैथिक चिकित्सा केन्द्र' जो आश्रम के ही कैम्पस में स्थित है, के द्वारा सभी लोगों को नि:शुल्क चिकित्सा उपलब्ध करायी जाती है, जिसका लाभ सभी वर्ग, धर्म और जाति के लोग नि:स्वार्थ भाव से ले रहे हैं।